मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद पर आधारित – संवाद

मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद से निसृत चेतना विकास मूल्य शिक्षा आधारित अभिभावक विद्यालय हेतु पूज्यनीय बाबाजी का मार्गदर्शन

पूज्य बाबाजी के साथ व्ही.आई.पी. रोड रायपुर, विद्यालय परिसर में 29 मार्च 2011 में विद्यालय संबंधित अपनी शंका, जिज्ञासाओं पर अभ्युदय संस्थान से जुड़े सभी परिवारों ने सत्संग किया।

29 मार्च, जिस दिन बाबाजी के उद्‌बोधन के पश्चात् सभी ने यह निश्चय किया कि ''अभिभावक विद्यालय'' खुलेगा और शुद्ध–बुद्ध पाठ्‌यक्रम के साथ खुलेगा।

यह निर्णय होते ही मान्यता की प्रक्रिया शुरू हुई और अभिभावक विद्यालय के लिए (आठवीं कक्षा तक) छत्तीसगढ़ शासन द्वारा 2011 में मान्यता प्राप्त हुई। इस नियम के तहत कि हम अपना पाठ्‌यक्रम स्वयं बना सकते हैं, (Minimum Learning Scale को ध्यान में रखते हुए)।

अभिभावक विद्यालय की जिम्मेदारी कौन–कान वहन करेगा, यह प्रक्रिया शुरू हुई। प्रथम वर्ष जिन बहनों ने बाबाजी के सामने विद्यालय की जिम्मेदारी वहन की, उनके नाम हैं :–

Full Time	**5 Days**	**2-3 Days**
	1. अनिता शाह	1. सुवर्णा शास्त्री
	2. निताशा त्यागी	2. डाली
	3. ज्योति पुराणिक	3. ममता जैन
	4. अनामिका वरू	4. शालू अग्रवाल
	5. चानी चावड़ा	5. नीति जैन
	6. सुचित्रा श्रीवास्तव	6. पूनम साहू
	7. मीना अग्रवाल	

4 जुलाई 2011 में विद्यालय शुरू हुआ और शुरू हुई विद्यालय की विधि व्यवस्था को समझने की प्रक्रिया पूज्य बाबाजी के मार्गदर्शन में अपनी जिज्ञासाओं को पूरा करने का क्रम 2011 से यह पक्रिया चालू है। 2011से 2014 तक विद्यालयस संबंधित जितनी भी चर्चा हुई, मार्गदर्शन मिला सबकी रिकार्डिंग नहीं हो पाई थी, परन्तु जितनी भी हो पायी वो सत्संग आप सबके सामने प्रस्तुत है।

यह बात हम सब स्वीकार करते हैं कि योग्यता से अधिक जिम्मेदारी विद्यालय के रूप में हम सबने वहन की थी पर बाबाजी की दया, कृपा, करूणा से हमारा विश्वास बना रहा और सबके सहयोग, उत्साहवर्धन का फलन है कि आज शिक्षा–संस्कार योजना के माध्यम से हम सब एक सूत्रता में बंधने जा रहे हैं।

दर्शन को क्रिया पक्ष से जोड़ने का निश्चित क्रम है पूर्व और प्राथमिक विद्यालय का पाठ्‌यक्रम, पाँचवी कक्षा तक का व्यवहारिक शिक्षा पाठ्‌यक्रम, के लिए बाबाजी के आदेश, निर्देश हम सबके लिए पूरी मानव जाति के लिए उपकारी है।

स्रोत

प्रणेता–ए. नागराज (बाबाजी)

अमरकंटक

विधि पर चर्चा

बाबाजी : विद्यार्थी को किसी एक तिथि में सबको बुलाना है या कभी भी आये, पहले तय करो

जिज्ञासा : प्री–प्रायमरी में कभी भी ले सकते हैं और आगे की कक्षा में निश्चित करें।

बाबाजी : कभी भी लेना है, कब तक?

जिज्ञासा : दो तीन महीने तक।

बाबाजी : दो, तीन महीने तक, तिथि तय करें, निश्चित तिथि पर सबको बुलाना एडमिशन के बाद। एडमिशन के बाद निश्चित तिथि पर सभी बच्चों को एक साथ बुलायें, तीन महीने तक जब कभी भी आतेहैं उनको एडमिशन देना है। ठीक है। एडमिशन कौन–कौन महीने में लेते हैं।

जिज्ञासा : अप्रैल, मई, जून में।

बाबाजी : तीन महीने में वो जब आयेंगे तब लेगे उनको अप्रैल, मई, जून महीने के अंत में उनको बुला लेंगे। ठीक है।

जिज्ञासा : जुलाई, अगस्त, सितम्बर में कोई आते हैं तो लेना है।

बाबाजी : तय करो। ऐसे बच्चे आते हैं उनको कम पैसा अधिक पैसा लेना है, तय करो।

तो कम से कम तीन लोगों का Recomndation हाना। ठीक। जो भी आते हैं, न्याय का अध्ययन होगा, सम्बोधन का अध्ययन होगा, दस्तखत होना है। होना है कि नहीं होना है।

जिज्ञासा : होना है।

बाबाजी : अभिभावक को क्या बतायेंगे यहां, नियंत्रण बतायेंगे, सम्बन्ध बतायेंगे। ऐसे शुरूआत करेंगे। इससे सहमत होने वाले अभिभावक ही आवेंगे। संबंध बतायेंगे सम्बोधन में, नियन्त्रण को बतायेंगे। संबंध के साथ नियंत्रण बतायेंगे। ये हुआ प्री प्राइमरी का। प्राइमरी में पूरी किताब ही है।

जिज्ञासा : ये विधि ठीक लग रही है।

बाबाजी : सब बच्चों में संबोधन की जरूरत है कि नहीं, नियंत्रण को जरूरत है कि नहीं। इसको देखें। प्री प्राइमरी में इसके साथ खेलना स्वास्थ के लिए, नृत्य करना स्वास्थ के लिए, जो प्रावधान है वह सब बताना, क्या–क्या करते हैं?

खेल सिखायेंगे, यदि डांस सिखायेंगे तो काम सिखायेंगे। जरूरत है कि नहीं। बच्चों को दोनों बात सिखाना जरूरी है कि नहीं। इसमें पूरा समय लगाओ और आगे।

प्राइमरी कक्षा का पूरा–पूरा सिलेबस ही लिखा है। आज्ञा पालन, नियंत्रण, सहयोग ये तीनों टीला है। नियंत्रण से शुरू किये अपन आज्ञा पालन में पहुंचते हैं। आज्ञा पालन, सहयोग दोनों को सिखायेंगे। प्राइमरी में इसकी जरूरत है। देख लीजिए।

जिज्ञासा : पूरी पांचवीं कक्षा तक।

बाबाजी : हां पूरा पांचवी कक्षा तक – आज्ञा पालन, नियंत्रण, सहयोग। इन तीनों चीजों की जरूरतें हैं कि नहीं देख लो। और उसके बाद कर्तव्य दायित्व। उसके बाद प्रमाणी करण। कार्य व्यवहार में कर्माभ्यास, व्यवहाराभ्यास। कर्माभ्यास से उत्पादन, व्यवहाराभ्यास से न्याय, धर्म, सत्य को प्रमाणित करते हैं तो आवश्यक है कि नहीं?

जिज्ञासा : है बाबाजी।

बाबाजी : मछली, मुर्गी, सुअर इसी को खिलाना है, पढ़ाना है। पढ़ाने वाले को पढ़ना होगा और उसका सार भाग बच्चों को बताना। पढ़ाने वाले के ऊपर थोड़ा सा बोझ आता है। पढ़ाने वाले को ये सब कचरा को पढ़ाना होगा। कक्षा 6 से 10 तक।

जिज्ञासा : पहले सही–सही बताना है पांचवी तक सीधी–सीधी बात बताना है फिर छठीं से शुरू करना है।

बाबाजी : हां, पहले 5 वर्ष तक कोई बाधा नहीं है ना?

जिज्ञासा : नहीं।

बाबाजो : पहले सही–सही बताना है फिर सीधी टेढ़ा दोनों पढ़ाना है। उसके बाद सीधी बात का प्रमाण। इतनी सी बात। टेढ़ी बातों की जानकारी, सीधी बात का प्रमाण। यही न्याय–अन्याय, सत्य–असत्य को जानने की विधि। सत्य को हम प्रमाणित करेंगे, असत्य को हम जाने रहेंगे। पहले कम से कम पांच वर्ष तक, दस वर्ष, बीस वर्ष उसके बाद उसको छोड़ देंगे। नकारात्मक बात को छोड़ देंगे। अभी शुरूआत में दोनों को रखेंगे।

जिज्ञासा : बच्चों को अपने माताजी–पिताजी के नाम से पहले क्या लगाना है संबोधन में?

बाबाजी : 'जी' लगाना है। शुरु में माता जी/पिता जी पर्याप्त है, नाम पूछने पर नाम बतायेंगे, नाम के बाद 'जी' लगायेंगे। 'श्री' अनजान व्यक्तियों के नाम के आगे। जानकार व्यक्ति के साथ 'जी'। भाई जी, बहन जी ये निरंतर याद रहने वाली बात है।

जिज्ञासा : पाठ्यक्रम में कक्षा 1 में 5 इंद्रिय बताये हैं : आंख, नाक, कान ये वाला या रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द? दोनों में से क्या बताना है?

बाबाजी : पूरा बताना ठीक है। 5 प्रकार के काम सभी करते हैं, बच्चे भी करते हैं। हम भी करते हैं।

जिज्ञासा : अंग और इंद्रिय एक ही हैं कि अलग–अलग?

बाबाजी : अंगों के साथ इंद्रियां हैं। आंख एक अंग है, नाक एक अंग है, कान एक अंग है, मुंह एक अंग है, जीभ एक अंग है। गले के ऊपर ही ज्यादा रखा है। कुछ इंद्रियों के अलावा बाकी सब ऊपर ही रखा है।

5 इंद्रिय, 5 संवेदनाओं ये काहे के लिए बना है? स्वस्थ रहने के लिये, स्वस्थ मन को व्यक्त करने के लिए। ये काहे के लिये बनाया प्रकृति ने? स्वस्थ रहने स्वस्थ मन को बताने केलिये बनाया है। स्वस्थ मन क्या है? अच्छी बात सब सोच समझ ले – अच्छी बातें धीरे सिखाते हैं – एक दिन में तो सब सिखाया नहीं जा सकता है।

जिज्ञासा : कर्मेइन्द्रियों के बारे में कौन सी कक्षा में बताना है? कौन सी उमर के बच्चों को बताना है?

बाबाजी : ज्ञान/कर्मेन्द्रिय दोनों एक साथ है। ज्ञान के बिना कर्मेन्द्रि का काम नहीं। ज्ञानेन्द्रिय का काम नहीं। ज्ञान धीरे–धीरे उपार्जित होगा, यही बच्चों को उम्मीद जताना है।

जिज्ञासा : सबसे छोटे बच्चों को सिर्फ अंगों के नाम बताने है? साथ में ज्ञानेन्द्रिय से शुरू करें।

बाबाजी : पहले काम बतायं फिर इंन्द्रिय से शुरू करें। कर्मेंद्रियों का काम बताएं फिर ज्ञानेन्द्रियों का काम बताएं, ज्ञान बतायें उसके बाद।

जिज्ञासा : बच्चों को दिनचर्या का अध्ययन?

बाबाजी : दिनचर्या में खाना समय पे, हर शारीरिक क्रिया समय पर। समय बताना होगा, निश्चित समय। बस इतना ही करो।

जिज्ञासा : दिनचर्या शरीर के साथ जोड़ के बता सकते हैं?

बाबाजी : दूसरा कुछ दिनचर्या होता नहीं। ज्ञान के साथ ही दिनचर्या है। ज्ञान के बिना कोई दिनचर्या होता नहीं। होता है?

जिज्ञासा : बच्चों को परिवार के बारे में संबंध से शुरू किये हैं।

बाबाजी : संबंध व्यवस्था के अर्थ में। व्यवस्था के अर्थ में संबंधों को बताना। बताने वाले का ज्ञान रहना चाहिये संबंधों का पहचान व्यवस्था के साथ – ये अध्यापकों का काम हो गया। बच्चों का काम केवल क्रेय है।

जिज्ञासा : प्रचलित में परिवार की परिभाषा है दादा/दादी, चाचा/चाची, ताऊजी–माताजी की तरफ के नानाजी, मौसाजी रहते हैं; ये भी तो परिवार ही है।

बाबाजी : तीनों पीढ़ी रहते हैं। परिवार में ही गण्य है। आज के इसमें परिवार व्यवस्था कहां है? 3 जड़ व्यवस्था है। पहले से लेकर बचपन से लेकर बुढ्ढे तक उजाड़ते रहो– बनाने की कहां प्रयत्न हुई। सुविधा के लिये जो कुछ भी आजीविका होता है।

जिज्ञासा : तीन पीढ़ी मिलकर समाधान समृद्धि को प्रमाणित करते हैं वही परिवार व्यवस्था।

बाबाजी : वही परिवार व्यवस्था है।

जिज्ञासा : इसमें कोई भी संबंध हो सकते हैं नाना नानी आदि।

बाबाजी : तीन पीढ़ी में तीनों आता है फिर क्या मतलब। तीनों पीढ़ी गिनाते समय स्वयं की पीढ़ी से ही है।

जिज्ञासा : बाबाजी इन्द्रिय का परिभाषा है, इच्छानुसार द्रवित होने वाले अंग की इन्द्रिय संज्ञा है।

बाबाजी : हाँ, जैसे खाना देख के मुँह में पानी आना।

जिज्ञासा : बाकी के जो अंग हैं?

बाबाजी : वह अपने आप में काम करते हैं।

जिज्ञासा : वह इच्छानुसार द्रवित होने वाला नहीं है।

बाबाजी : हृदय में खून का प्रसारण स्वाभाविक होता है, उसमें हमारा इच्छा कुछ नहीं, भोजन पचना इसमें हमारा इच्छा कुछ नहीं, अपने आप से होता है। भोजन का इच्छा होना, ये इच्छा के बिना खाता नहीं है।

जिज्ञासा : **कर्मेनिन्द्रयाँ और ज्ञानेन्द्रियाँ जो इच्छानुसार द्रवित हाने वाले अंग प्रत्यंग हैं**

बाबाजी : विसर्जन होना कर्मेन्द्रियाँ, खाना खाना ज्ञानेन्द्रियाँ।

जिज्ञासा : **ये समझ में नहीं आया बाबाजी।**

बाबाजी : ज्ञान जो है ना हम स्वयं चाहते हैं, चाहना, ज्ञानेन्द्रिय, विसर्जित करना कर्मेन्द्रिय

जिज्ञासा : **कर्मेन्द्रियाँ में जीव्हा, हाथ, पैर, गुदा, लिंग, ऐसा परिभाषा संहिता में है। इसकी इसी भाषा में बात किया जाए या जीव्हा, हाथ, पैर मुत्रेन्द्रियां, किस भाषा में बात की जाए।**

बाबाजी : चक्षु एक क्रिया है, चक्षु एक संवेदना, दोनों अंतर समझ आता है ना ज्ञान और कर्म का।

जिज्ञासा : **कर्मेन्द्रियों में 5 कर्मेन्द्रियाँ जो है, बच्चों को बताना है।**

बाबाजी : जैसा भाषा लिखा है, वैसा बता दो, और कुछ शब्द देना है तो दे दो। इस अर्थ को पूरा करने के लिये दूसरा भाषा होता है तो दे दो।

जिज्ञासा : **बाबाजी परिभाषा संहिता में ज्ञानेन्द्रियाँ की परिभाषा नहीं है। इसको थोड़ा बता दीजिए।**

बाबाजी : ज्ञानेन्द्रिय में "दर्शन" देखना, सुनना, कान एक कर्मेन्द्रिय है, कान एक सुनने के रूप में ज्ञानेन्द्रिय है, चक्षु एक कर्मेन्द्रिय है, चक्षु कर्म करता ही रहता है। पलक झपकता ही रहता है, चक्षु जो है ना रूप को देखने के लिए ज्ञानेन्द्रिय है, देखता नहीं है तो कर्मेन्द्रिय है, सुनना नहीं है तो बहरा है।

जिज्ञासा : **ध्वनि का परिभाषा है "घर्षण से उत्पन्न तरंग जो दूर–दूर गतित होता है।"**

बाबाजी : ध्वनि एक भाषा है। भाषा में अर्थ रहता है, ध्वनि में क्या अर्थ होता है? (नहीं होता है।)

जिज्ञासा : **भाषा यानी शब्द में अर्थ होता है।**

बाबाजी : शब्द के द्वारा अर्थ होता है। शब्द का आकार मानव ही देता है। बाकी सब ध्वनि है।

जिज्ञासा : **पशुओं में भी कोई शब्द नहीं है, सिर्फ ध्वनि है।**

बाबाजी रूप के बारे में....

बाबाजी : रूप चारों अवस्था में है।

जिज्ञासा : **बाबाजी रस मतलब रासायनिक द्रव का तरल स्वरूप।**

बाबाजी : जैसे रासायनिक प्रक्रिया दुध होता है, दुध एक रासायनिक प्रक्रिया है। जल एक रासायनिक प्रक्रिया है। फलों का रस एक प्रकार के रासायनिक प्रक्रिया है। "गंध" फूलों का गंध है।

जिज्ञासा : **इसमें रस के बारे में लिखा है, प्राणकोषाओं का विपुल होने के लिए आवश्यक वस्तु। एक दूसरी परिभाषा है, दया, कृपा, करूणा की अविभाज्य अभिव्यक्ति।**

बाबाजी : भाषा का अर्थ को भी रस ही मानते हैं, मान्यता क आधार पर।

जिज्ञासा : **गंध हो गया, "निसृतः विरल पदार्थ", ये जो पांचों है, ये आपने एक बार बताया था की सारी संवेदनाएं समझने के लिए वेदना है।**

बाबाजी : सच्चाई को समझने के लिए वेदना है, संवेदना।

जिज्ञासा : **रूप में आकार, आयतन, धन हमको दिखता है, रस, स्पर्श और गंध ये गुण है क्या?**

बाबाजी : गुणों का पता चलता है।

जिज्ञासा : **शब्द से?**

बाबाजी : अर्थ में जाते हैं, अर्थ से शब्द समझ में आता है, इसमें स्वभाव समझ में आता है।

जिज्ञासा : **कर्मेन्द्रियाँ और ज्ञानेन्द्रियाँ इस तरह से जुड़ता है।**

बाबाजी : इसको बच्चों को प्री–प्रायमरी में समझाते हो तो अच्छी बात है।

जिज्ञासा : **संवेदनशीलता, ज्ञानेन्द्रियों का कार्य व्यवहार में प्रयोग। मतलब हम इनको समझाने के लिए लगा रहे हैं तब ये प्रयोग हो गया। संज्ञानशीलता का मतलब समझदारी, ईमानदारी, ज्ञान, विज्ञान, विवेक सम्पन्नता का प्रभाव।**

बाबाजी : समझदारी के आधार पर प्रयोजन के अर्थ में ईमानदारी। प्रयोजन क्या है? व्यवस्था, अखण्डता, सार्वभौमता, समाधान, समृद्धि के अर्थ में क्रियान्वयन करना। समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी तीनों जीवन का ही भाग है। भागीदार शरीर के साथ।

जिज्ञासा : **संबोधन, उपकार, कर्तव्य और दायित्व। बाबाजी शरीर का अंग–प्रत्यंग आपस में जुड़े हुए हैं तो ज्ञानेन्द्रिय का प्रभाव कर्मेन्द्रियों पर, कर्मेन्द्रियों का प्रभाव ज्ञानेन्द्रियों पर रहता ही है।**

बाबाजी : अकेले में कोई चीज नहीं है, सब का प्रभाव दूसरे से जुड़ा हुआ है।

जिज्ञासा : **बाबाजी 5 वायु के बारे में आपने जो बताया था, मानव व्यवहार दर्शन में....।**

बाबाजी : जो विशेषण है, उसको यथावत् पढ़ाया जाए।

जिज्ञासा : **पानी के बारे में बात हुई थी। पानी सभी का प्यास को बुझाता है।**

बाबाजी : इसी को अच्छी तरह से समझाना है। इसीलिए पानी का संरक्षण होना आवश्यक है।

जिज्ञासा : **वर्षा से जो हम को जल मिलता है, ये चक्र (आवर्तनशीलता) उनको बताना है क्या?**

बाबाजी : पवित्र जल बनने के लिए वाष्प होता है, पानी बरसता है, प्रकृति कैसा फिल्टर करता है उसके बारे में बताना। मनुष्य कैसे गंदा करता है ये बताना। मनुष्य के लिए जिम्मेदारी है की नहों पूछना।

जिज्ञासा : **आपने बोला था हवा, मिट्टी, पानी, जंगल, जानवर और मानव, जंगल और जानवर को थोड़ा स्पष्ट कर दीजिए।**

बाबाजी : जंगल और धरती के योगफल में जंगल, धरती ही जंगल को तैयार करता है या कोई मानव करता है।

जिज्ञासा : **मानव के लिये किस तरह से उपयोगी है।**

बाबाजी : धरती सारे गड़बड़ी को पचाता है। झाड़ के पत्ते को पचाता है। झाड़ को पचाता है, उसके बाद जीवों का मलमूत्र को पचाता है, मनुष्य के मलमूत्र को पचाता है। पचाकर उर्वरक बनाता है। जंगल की उपयोगिता मानव अनेक प्रकार से किया है। धरती का अलंकार के लिये किया है, झोपड़ी से लेकर महल बनाने के लिये उपयोग किया है, जंगल ने धरती को उर्वरक बनाया, मानव ने अनेक प्रकार से सुविधा के लिये उपयोग किया, कुर्सी बनाया, टेबल बनाया।

जिज्ञासा : **क्या ये सब ठीक है।**

बाबाजी : बनाया है इतना कहना, ठीक है, नहीं ठीक है खुद बच्चा को बोलने दो, सदुपयोग करना ठीक, ये लिखा है।

जिज्ञासा : औषधी भी जंगल से ही मिला। बाबाजी प्राण वायु, "प्राण कोषाओं के लिये प्रेरणा पूर्वक बल पोषक"

बाबाजी : प्राणकोषा सांस लेते हैं, सांस छोड़ते हैं। सांस लेने, सांस छोड़ने के लिये प्रेरक है प्राण वायु।

जिज्ञासा : अपान वायु, अनावश्यक वायु।

बाबाजी : इसीलिए उसको बाहर कर देते हैं। व्यान वायु शरीर के लिए उपयोगी, बल के लिये। शरीर में बल होता है की नहीं, हाथ पैर हिलाते हैं की नहीं।

जिज्ञासा : उपान वायु।

बाबाजी : आवश्यकतानुसार उपयोग, संचालन, जैसे हाथ अलग से संचालित होता है, पैर अलग से, नाक अलग से, कान अलग से. उसके लिए उपयोगी। समान वायु विकास के लिये, ग्रोथ (growth) के लिए। शरीर बढ़ना, घटना दोनों के लिए। किसी आयु तक बढ़ता है उसके बाद घटता है। जब कभी भी बताना, 5 इकट्ठा बताना, टुकड़े में नहीं होता है।

जिज्ञासा : आपने बताया था एलोवेरा और भृंगराज के बारे में बच्चों को पहले बताना है, क्या बताएं?

बाबाजी : जो उपयोग करते हो, जो तुमने उपयोग किया है, उतना जो ये उपयोग किये हैं ये बताएंगे। जो तुम उपयोग किये हो तुम, जो वह उपयोग किये हैं वह बतायेंगे। ऐसा 10 व्यक्ति बतायेंगे, अपना किया हुआ को बताना। बताने से बच्चों के लिये पूरा धन हो गया ना। उसको प्रयोग करने के लिये बच्चा तैयार हो गया।

जिज्ञासा : भृंगराज को अभी हमने उपयोग नहीं किया है।

बाबाजी : करके देखना, हाथ में रगड़ने से हाथ काला होता है की नहीं करके देखना।

जिज्ञासा : हाथ काला करने से बाल भी काला करेगा।

बाबाजी : अपना मृत्यु वहीं है, कल्पना में जा कर के। किया हुआ के साथ जीते हैं, कल्पना में रहते हैं, कहीं कुछ बताने योग्य नहीं रहते हैं, अपने आप में निरर्थक साबित हो जाएगा। उस जगह में जाना है की सार्थकता को समझना है।

तुम इतना ही बताना की हाथ काला करना है, उसके बाद किसी ने सीर में लगा के उपयोग किया है, वह बताएगा, किसी ने कुछ और किया है तो बताएगा। चोट लगने से भृंगराज लगाने से जल्दी ठीक हो जाता है। उसको हमने किया है। गाय स्थन में घाव होने से उसको लगाने से दूसरे दिन तक ठीक हो जाता है।

जिज्ञासा : बाबाजी जानवर के बारे में।

बाबाजी : जानवर मल मूत्र से जंगल को समृद्ध बनाते हैं, जंगल के चारा खाते हैं।

जिज्ञासा : जंगल को समृद्ध करने के लिए है, वह जानवर और जो कुछ जानवरों को हम पालते हैं।

बाबाजी : अपन उनके जितने उपयोगी हैं उतना ही उनको उपयोगी बनाने के लिये काम करते हैं। जिसको भी उपयोगी माना है, उसको पालते हैं। जंगल वाले जिसको उपयोगी मानते हैं, उस तरीके से पालते हैं, घर में जिसको उपयागी माना है, उस ढंग से पालते हैं।

जिज्ञासा : जैसे कुत्ता है, उसको कुछ लोग पालते हैं, उपयोग के लिये कुछ लोगों को अच्छा नहीं लगता है।

बाबाजी : जिसके पास निश्चय नहीं जीने का, उनको ज्यादा भय होता है। भय होता है तो कुत्ते को पालते है। जीने में निश्चय जिनके पास है, कुत्ते नहीं पालते हैं। भयभीत आदमी कुत्ता पालते हैं की कोई लुट नहीं, सेंध ना लगाए।

जिज्ञासा : कई लोग शौक से भी पालते हैं।

बाबाजी : वह भी ठीक है।

जिज्ञासा : बच्चे जब कुत्ते के बच्चे से खेलते हैं तो?

बाबाजी : बच्चों को कहीं रोकना नहीं, मार्गदर्शन देना। सही के लिये सकारात्मक बात के लिये। भयभीत होना है, नहीं होना है पूछो।

जिज्ञासा : बाबाजी बच्चा जैसे पुस्तक बैग में रख दिया, खाना खा के थाली रख दिया। ये आज्ञा पालन हुआ, और बच्चा जैसे हमारे साथ रोटी बनाता है तो?

बाबाजी : रोटी अकेले बनाता है तो आज्ञापालन हुआ, नहीं तो सहयोग हुआ।

जिज्ञासा : इसमें श्रम तो नहीं है ना बाबाजी।

बाबाजी : होता ही है, श्रम जितना कराना है, उसको पहचानना है। अर्हता के अनुसार आज्ञा पालन।

जिज्ञासा : भारतीय भाषा में संबोधन के लिये, बहुत अच्छा शब्द है – जी, मामाजी, चाचाजी। अंग्रेजी में तो ऐसा शब्द नहीं है।

बाबाजी : नहीं है तो छोड़ दो, हिन्दी लगा लो। अभी बच्चों तक काम करना है की संसार तक काम करना है। अभी ये बताना की हिन्दी में इसको ऐसे कहते हैं, अंग्रेजी में इसका कोई शब्द नहीं है, यही बताओ।

जिज्ञासा : जहाँ ये भाषा नहीं है, क्या वहां सम्बोधन ठीक से नहीं हो पा रहे है।

बाबाजी : संबोधन ठीक होता तो आदमी न बन जाता। संबोधन ठीक रहेगा, संबोधन के अनुसार जीते हैं तो आदमी बनेगा।

जिज्ञासा : जोड़ के जगह आपने एक शब्द दिया था।

बाबाजी : एक के एक मिलन, एक के साथ एक बिखरा, वह घटा, घटने को ऋण कहते हैं। जोड़ने को धन कहते हैं। ऋण और धन को समझना है। ऋण का मतलब ये है, धन का मतलब ये है।

जिज्ञासा : अभी संबंध की गिनती, उसके बाद उंगलियों से, शरीर के अंग अवयवों की गिनती, पेड़–पौधों की गिनती, ये तो कक्षा के अंदर बैठने वाला काम नहीं है, ये तो बाहर जो चीज दिख रहा है उनके साथ करना पड़ेगा।

बाबाजी : कक्षा के अंदर समझायेंगे, कक्षा के बाहर प्रमाणित करायेंगे।

जिज्ञासा : कक्षा के अंदर समझाते समय पत्तियां तो नहीं है, तो क्या हम उनको चित्र बनाकर कक्षा में करा सकते हैं।

बाबाजी : चित्र बच्चों से बनवाओ। आप बनाने से कुछ नहीं होता। कक्षा के अंदर बताना होता है। कक्षा के अंदर प्रमाणित करना होता है।

जिज्ञासा : तो बच्चों को चित्र दिखाकर बताने की जरूरत नहीं है।

बाबाजी : जरूरत होगा तो करना। चित्र दिखाने से कौन मना करता है। समझाना कक्षा में, प्रमाणित करना मैदान में, ये कहा। इतना ही ना करना है, समझना, जीना, उसके लिए चित्र दिखाओ, साधना कराओ, जो करना है कराओ।

जिज्ञासा : साधना का मतलब।

बाबाजी : अभ्यास कराओ।

जिज्ञासा : क्या गुणा के चिन्ह को दिखा सकते हैं।

बाबाजी : दिखा सकते हैं। चिन्ह लगा सकते हैं। चिन्ह लगाने में कोई तकलीफ नहीं। जितने भी संस्था है चिन्ह तो है। चिन्ह सब दिखा सकते हैं +, – सब। कम्प्यूटर में लिखा है, सब चिन्ह है।

जिज्ञासा : बाबाजी पहले आपने मना किया था, शुरूआत में।

बाबाजी : शुरूआत में कैसे शुरू करोगे इसको। कुछ समझने के बाद चिन्ह होगा, की समझने के पहले चिन्ह होगा। झाड़ को समझने के बाद झाड़ का चिन्ह होगा की उसके पहले होगा। झाड़ को समझने के बाद झाड़ का चिन्ह होगा, झाड़ का चिन्ह के बाद झाड़ होगा। मनुष्य का चित्र भी एक चिन्ह है। संदर्भ को छोड़कर के बात करोगे तो कुछ नहीं हाथ लगेगा। मानव को समझने के बाद मानव का चिन्ह बनेगा या मानव का चिन्ह बनने के बाद मानव बनेगा। वह पहले तय करो, ये अपने हाथ की बात है।

जिज्ञासा : समझाने के बाद, जब समझने आता है, जब भी जरूरत लगेगी तब चिन्ह का प्रयोग किया जा सकता है।

बाबाजी : समझने के पहले चिन्ह का क्या प्रयोजन?

अभी सब उलटा चल रहे हैं, उनको सीधा करना। वस्तु समझ में आने के बाद वस्तु की जगह में चिन्ह दिया जा सकता है। अच्छी तरह से समझो। हमारा कारण से मत मानो। आपका अपना स्वत्व बनाओ।

जिज्ञासा : बस भाषा और उसका अर्थ बच्चों के पास पहुँच जाए।

बाबाजी : पहले वस्तु, उसके बाद भाषा, उसके बाद चिन्ह। ये वस्तु है, इसका ये नाम है।

जिज्ञासा : इसमें ऐसा कुछ नहीं है को 2 साल या 5 साल चिन्ह नहीं देना है। जब भी वह समझ लेगा तब चिन्ह देना है।

बाबाजी : ठीक है। परंपरा का चिन्ह भी दे सकते हैं, अपन स्वयं भी कोइ चिन्ह दे सकते हैं।

जिज्ञासा : परंपरागत तरीके से स्कूल में परीक्षा होता है, रिपोर्ट कार्ड दिया जाता है।

बाबाजी : परंपरा के तरीके से भी दे सकते हो। स्वयं भी दे सकते हो। स्वयं करना होगा तो दूसरों को समझाने के योग्य हो।

जिज्ञासा : बाबा जैसे कक्षा–2 में कोई बच्चा पढ़ा, कक्षा–3 में अलग स्कूल गया, वहां सर्टिफिकेट मागेंगे तो वहां दिखाने के लिये क्या होना चाहिए? रिपोट कार्ड रहेगा या जो design आप दिये हैं।

बाबाजी : अपना तो रहेगा, पहले अपन प्रमाणित होंगे, प्रमाणित होने के बाद उसका विरोध नहीं होता है, यहा तक हम आ गये हैं विरोध नहीं होता है तो सभी जगह में होता है कि टेस्ट करना है, आगे होगा वह।

जिज्ञासा : बाबाजी बाते हम हिन्दी में पढ़ा रहे हैं ना, सब चेप्टर अंग्रेजी में भी दे रहे हैं, बच्चों को।

बाबाजी : हर भाषा में वस्तु एक होना। अंग्रेजी में हम मास्टर नहीं हूँ। सभी भाषा में प्रमाणित हूं, ऐसा नहीं है। हम हिन्दी में प्रमाणित हूं, सोच लो, भाषा बदला तो भाव बदला, भाव बदला तो दिमाग बदला, दिमाग बदला तो सब गुड़गोबर हो गया।

जिज्ञासा : हिन्दी के अलावा दूसरे भाषा का अभ्यास कराएं ना कराएं।

बाबाजी : एक ही वस्तु सभी भाषा में जाएगा। भाषा की समानता को बनाना नहीं होता है। एक वस्तु जाने से एक ज्ञान होगा की नहीं। सभी भाषा में वस्तु जा सकता है। भाषा की समानता नहीं होगी, वस्तु की समानता होगी।

जिज्ञासा : छोटे बच्चों को कितना लिखाना है।

बाबाजी : सम्बोधन लिखाना, भाषा सिखाना, गणित सिखाना।

जिज्ञासा : गणित में कितना?

बाबाजी : 5 तक बढ़ाना घटाना, 10 तक, 20 तक। जितना कर सकता है। प्रयोग करके देखा। इसके बीच मुखस्थ करने के लिए कुछ गीत।

जिज्ञासा : क्या गीतों को लिखने के नियम होते हैं।

बाबाजी : नियम यानी जागृति। आपका वस्तु बता पाये, इतना देखना है। प्रयोजन आना चाहिए। तरीका हो, बेतरीका हो, छन्द समान हो, ना हो, हम सच्चाई को बताएंगे।

साल भर में क्या सीखा, उसका आंकलन होना चाहिए। अभिभावकों से उसको टेस्ट करवाना है। अभी तो अभिभावकों को बच्चों से सुनने का अभ्यास नहीं है।

जिज्ञासा : बाबाजी जैसे एक इच्छा है, समझने के लिये, प्रमाणित करने के लिए और शरीर को स्वस्थ बनाकर रखने के लिए।

बाबाजी : कर्मेन्द्रियाँ स्वस्थ बनाकर रखने के लिये, समझने के लिये संवेदनशीलता, संवेदनशीता के साथ हम समझते है।। संवेदनशीलता के साथ 5 ज्ञानेन्द्रिय आता है।

जिज्ञासा : जैसे खाना खाने की इच्छा हुई। खाना पचा ये कर्मेन्द्रिय, किस वस्तु को खाना है ये सूचना के आधार पर पहचानता हूं ये ज्ञानेन्द्रिय हो गया।

बाबाजी : समझने के लिये ज्ञानेन्द्रिय, कार्य करने के लिये कर्मेन्द्रिय। अभी ज्ञानेन्द्रिय का काम शुरू कहां हुआ है, कर्मेन्द्रियों को ही ज्ञानेन्द्रिय मानते है।

जिज्ञासा : बाबाजी रूप में आकार, आयतन घन होता है।

बाबाजी : घन को समझते हैं तो रूप को देखा, नहीं तो प्रभावित होना ही रह गया, समझना नहीं रह गया।

जिज्ञासा : इसमें रंग क्यों नहीं आया।

बाबाजी : गुण में रंग समाया है, रूप में गुण समाया है, गुण के बिना रूप होता ही नहीं। रूप का मतलब ही है रूप, गुण, स्वभाव, धर्म का संयुक्त रूप। बच्चा पहले रूप को देखता है, पेड़–पौधे, कुत्ता, शेर, मानव। सबका गुण एक है की अलग–अलग, उसको बताओ। धीरे–धीरे पूरे को समझाओ। आदमी बनाने के लिए पहले आदमी बनना पड़ेगा।

जिज्ञासा : बाबाजी जैसे कर्मेन्द्रियां को ऐसे बताते हैं, पकड़ने उठाने की क्रिया को जिस अंग से करते हैं उसे हाथ कहते हैं। चलने की क्रिया जिस अंग से करते हैं, पैर कहते हैं। बोलने की, खाना खाने की क्रिया जिस अंग से करते हैं उसे मुंह कहते हैं।

बाबाजी : बोलना ज्ञानेन्द्रिया।

जिज्ञासा : इसको हटा देते हैं, सिर्फ खाना......., देखने की क्रिया जिस अंग से होती है उसको आंख कहते हैं।

बाबाजी : देखने की क्रिया को ज्ञानेन्द्रिय इसीलिए कहते हैं। रूप, गुण, स्वभाव, धर्म को पहचानना। इतना ज्ञान बच्चों के लिए पर्याप्त है। इसके लिये लिखा, कपड़ा पहनना, काहे के लिये शीत, बात, उष्ण को शमन करने के लिये और लज्जा को बचाने के लिए।

जिज्ञासा : सुबह बात हुई प्राण वायु प्राण कोषा के लिये। तो बच्चे फिर प्राण कोषा के बारे पूछेंगे।

बाबाजी : रस ही होते हैं। अणु से होता है, यहां से शुरू करना। अणुएं प्राण कोषा के रूप में काम करते हैं। इतना बता देना। पर्याप्त है। उसके बाद कक्षा 1 में परमाणु से अणु बनता है, परमाणु अंशों से परमाणु बनता है। 5 कक्षा तक पढ़ा देना।

अपने का विद्वान मानते हुए बच्चा को कुछ नहीं बता पाते हैं। ऐसा नीरिह स्थिति वेदमूर्ति परिवार में देखा है हमने। वहीं से विरक्ती हुई। वेदमूर्ति के परिवार अपने संतान को समझा नहीं पाए। अभी सब का सब रोटी के लिये

विदेश चले गये। सभी गांव विरान पड़ा है। कोई युवा पीढ़ी नहीं है। अपना अभिभावक होने की पहचान, अपने बच्वें को समझाने की बात, वह कहां है। कौन परिवार में है। इसीलिए अनेक समुदान बन गया। हर समुदाय युद्ध की तैयारी किया, सामरिक तन्त्र को तैयार किया।

जिज्ञासा : **बाबाजी क्या प्राण वायु बाकी वायुओं में बदलता है।**

बाबाजी : वायु को बदलता है शरीर। वायु संसार में सभी जगह में प्राप्त है। प्राण वायु को शरीर लेता है। 5 प्रकार से प्रयोग करता है। प्राण वायु को ही 5 प्रकार से प्रयोग करता है। अपान वायु को छोड़ देता है। नाक से हवा लेते हैं, फेफड़े में परिवर्तन होता है।

जिज्ञासा : **19 तारीख का विद्यालय का कार्यक्रम के लिये मार्गदर्शन चाहिए था। कार्यक्रम यह है कि जो विद्यालय में बच्चों के साथ प्रयोग हुआ, अभिभावकों के साथ और जो शिक्षा को समझना चाहते हैं उनके बीच में रखना चाहते हैं।**

बाबाजी : यह कहना है, बच्चों को सम्बोधन सिखाया है। संबोधन को देखिए आप सहमत होते हैं की नहीं देखिए। सहमत हैं तो परम्परा बनेगी उसके बाद सहयोग सिखया, परस्परता में कैसे सहयोग करना चाहिए, जिससे झगड़ा ना हो, भाषा दुर्भाषा ना हो। ऐसा सिखाए है। सहयोग करना चाहिए की नहीं चाहिए, देखिए। आज्ञा पालन के लिए इनको सिखाया ह। इन 3 बात पर जोर देना। यदि अनुभवी व्यक्ति, प्रमाणित व्यक्ति का आज्ञा पालन करेंगे आपको मदद होगा ये लिखा, सबका आज्ञा पालन करने से कसाई आना आज्ञा पालन कराएगा, झूठखीर अपना आज्ञा पालन कराएगा। समझदार व्यक्ति का आज्ञा पालन करने से मदद होता है।

जितना हम कहते है, उससे कम बनाया जाये, ज्यादा नहीं बनाया जाये। ज्यादा बताने से समस्या, कोई नहीं छोड़ेगा। सबके पास बोलने की ताकत है। माने कद से थोड़ा कम बताएं। हम इतना समझाएं हैं बच्चों को, इसके सहमति के लिए आपको बुलाए हैं। इसको कैसे घर में बना के रखोगे, उसको साचिए।

जिज्ञासा : **रेत क्यों होता है?**

बाबाजी : मिट्टी रेत के रूप में भी होता है, मणी के रूप में भी होता है, धातु के रूप में भी होता है, पत्थर के रूप में भी होता है।

जिज्ञासा : **रेत क्या काम आता है?**

बाबाजी : सीमेंट मिलाकर छपाई करने के लिये, दीवार में छापते हैं।

जिज्ञासा : **पत्थर से पत्थर टकराने से चिंगारी क्यों निकलती है?**

बाबाजी : जब भी ताप पैदा होता है, चिंगारी होता है। पत्थर कड़ा होता है। 2 पत्थर घिसने से चिंगारी निकलता है।

जिज्ञासा : **कण किसे कहते हैं?**

बाबाजी : मिट्टी के रूप में पहले बनता है। मिट्टी के बाद मणी के रूप में बनता है। परमाणु विकसित होकर अणु बनता है। अणुएं अणु रचना बनता है।

जिज्ञासा : **समय किसलिए होता है?**

बाबाजी : तुम्हारा आचरण भी एक समय है। धरती का आचरण भी एक समय है, उसको दिन रात कहते हैं।

जिज्ञासा : **बिजली कैसे बनता है?**

बाबाजी : आकर्षण का विखण्डन होने से बिजली बनता है। चुम्बकीय पत्थर रखने से एक दूसरे से आकर्षित होते हैं। दोनों के बीच में चुम्बकीय धारा को विखण्डन करने से बिजली बनता है।

जिज्ञासा : **कांच कैसे बनता है?**

बाबाजी : रेती से। रेती को शुद्ध करके कांच बना लेते हैं। मिट्टी के भाग को निकाल देते हैं, शुद्ध रेती रह जाता है वह कांच बनता है।

जिज्ञासा : **सूरज इतना गरम क्यों है?**

बाबाजी : अभी विज्ञान जितना प्रयोग करता है, धरती बीमार होगा की नहीं। वैसा ही (धरती) सूरज बीमार हो गया। हम बत्ती जलाते हैं, गरम होता है या नहीं? वैसे ही विकिरण से भी गरमी निकलता है, वह सूरज जैसा होता है।

जिज्ञासा : **चांद और धरती कैसे बनता है?**

बाबाजी : अणुएं और अणु रचना धरती है, वैसे ही चांद भी, वैसे अनेक धरतियां।

जिज्ञासा : **तारा का आकार क्या होता है?**

बाबाजी : धरती जैसे ग्रह गोल को ही तारा कहते हैं। ना समझने से तारा कहते हैं। समझने से धरती कहते हैं। तारा का आकार भी धरती जैसा है, गोल।

जिज्ञासा : **जुगनू क्यों चमकता है?**

बाबाजी : जुगनू मक्खी का आकार का है, उसका पंख खुलने से प्रकाश निकलता है। पंख ढक देने से प्रकाश बंद हो जाता है।

जिज्ञासा : **सांप जहरीला क्यों होता है?**

बाबाजी : जो खाता है, वह जहर को बनाता है। शरीर में जैसा अपने शरीर में खून बनता है, वैसे ही उनका शरीर में जहर बनता है।

जिज्ञासा : जानवर क्यों होते हैं?

बाबाजी : मानव शरीर बनते तक जीवों का शरीर बनता रहता है। मक्खी, भुनगी, मच्छर, कीड़े–मकोड़े से लेकर जीव, जानवर से लेकर मानव तक एक दूसरे जुड़े हुए हैं।

जिज्ञासा : खाद कैसे बनता है?

बाबाजी : हर वस्तु परिणामशील है, जैसे तुम पैदा हुए। धीरे–धीरे तुम्हारा ऊंचाई बढ़ गया, चौड़ाई बढ़ गया। वैसे ही मल–मूत्र परिणीत होकर कर के खाद बनता है। धरती के लिये उपयोगी होता है। उपजाऊ बनने के लिये होते हैं। धान अच्छा पकने के लिए खाद, फल खूब होने के लिए खाद, सब्जी अच्छा होने के लिये खाद, सब जगह में खाद की जरूरत है।

जिज्ञासा : स्पेश को, शून्य को, खाली जगह को किस तरीके से बताया जाये।

बाबाजी : जैसा आप हम बैठे हैं, आप हम निश्चित अच्छी दूरी में है इसीलिए एक दूसरे को पहचानते हैं। निश्चित अच्छी दूरी में, नहीं होगा तो एक दूसरे को पहचान ही नहीं करेगा। वह दूरी स्वयं शून्य है। पारगामी है इसीलिए सब का आर–पार है।

जिज्ञासा : धरती स्पेस (space) **में है, ऐसा बताया है, बच्चों को ये ठीक है की नहीं।**

बाबाजी : शून्य में धरती है, खाली जगह कहते हैं शून्य को। चांद तारे सब शून्य में है।

जिज्ञासा : बाबाजी जैसा सौर मण्डल है क्या इस तरह से और भी मण्डल है?

बाबाजी : बहुत है। सौर मण्डल होगा नहीं तो ग्रह मण्डल होगा ही। जो सूरज नहीं बने हैं उसको ग्रह मण्डल बोलेंगे। सूरज बन गया “सौर मण्डल”

जिज्ञासा : विज्ञानी बोल रहे हैं इस सौर मण्डल में 9 ग्रह के जगह 8 हैं ये क्या बात है?

बाबाजी : ये उन्हीं से पूछना पड़ेगा।

जिज्ञासा : अपना सौर मण्डल में कितना ग्रह है।

बाबाजी : कोई निश्चित नहीं, पहले 7 मानते रहे हैं अभी 8।

जिज्ञासा : क्या इसका कोई क्रम है?

बाबाजी : व्यवस्था क्रम में रहता ही है। पहचानने के बाद आदमी है।

जिज्ञासा : सूरज का प्रकाश क्या सारे धरती पर पहुंचता है?

बाबाजी : जहां तक पहुंचना है वहां तक पहुंचता रहता है। अभी बत्ती जलाएं, जितना दूर पहुंचना है, पहुंचता है।

जिज्ञासा : मिट्टी का प्रयोजन

बाबाजी : उर्वरक, अनतंर और पत्थर के ऊपर बैठे ही हैं। मिट्टी के ऊपर बैठे ही हैं। मणी के ऊपर बैठे ही हैं। धातु के ऊपर बैठे हैं। पत्थर से मुर्ति बनता है। मणी को पहन भी लेते हैं। मूर्ति बनता है। धातु से बहुत सारा काम होता है, छत बनता है, दीवार बनता है, पानी का प्रयोजन प्यास बुझाना। धरती का प्यास बुझाना, जीवों का प्यास बुझाना, झाड़ी का प्यास बुझाना, मनुष्यों का प्यास बुझाना।

जिज्ञासा : जंगल का प्रयोजन बता दीजिए।

बाबाजी : जंगल का प्रयोजन वही खाद, पानी, हवा प्रयोजन स्वयं के लिए बने रहना, आगे अवस्था के लिए, पीछे की अवस्था के लिए अनुकूल, उपयोगी होना, इसको पूरकता नाम दिया।

शनैः–शनैः समझदार के पक्ष में जाना। भाषा से समझदारी, समझदारी में जाना। अभी भाषा है बच्चों के साथ वह समझदारी में जाना, समझदारी ही जीने का आधार है।

पहले भाषा फिर संबंधों को सिखाया जाये। व्यवस्था को सिखाया जाये और उसके बाद व्यवस्था में जीने के लिए स्रोत दिया जाये तत्परता से चलते चलते पूरा होगा।

आप लोगों में देखने को मिलेगा तो अनुकरण करेगा। देखने को नहीं मिलेगा तो अनुकरण नहीं करेगा। अपने को जीना ही पड़ेगा। अपना जीए बिना अपना multiplication कैसे होगा।

जिज्ञासा : आपने एक बार कहा था विद्यालय और चिकित्सालय कभी भी बंद नहीं होना चाहिए। उसका अर्थ हमको समझ में नहीं आया।

बाबाजी : चिकित्सा का ज्ञान मनुष्य में कहां खत्म होगा, शीघ्र करने के विधि कब खत्म होगा।

जिज्ञासा : बाबाजी ज्यादा बरसात में विद्यालय बंद रखना कि खुला रखना।

बाबाजी : खुला रखना, बच्चों के मन के अनुसार।

जिज्ञासा : बारीश में बच्चे भीगे तो नुकसान तो नहीं होगा।

बाबाजी : क्या होता है, बच्चों का कपड़ा रख दो, बरसाती रखो।

जिज्ञासा : बच्चों को zoo में ले के जाना चाहिए या नहीं?

बाबाजी : कभी–कभी। आदमी अपना कला से इन सबको पिंजरा बना रखा है। जबकि झाड़ में बैठा रहता है पक्षी, ये पढाना। पशु–पक्षी जंगल में घूमते हैं कि पिंजरे में रहेंगे। मनुष्य सबको पिंजरे में रखा काहे के लिए रखते हैं। बच्चे आकर के देखें। इतनी ही बात है।

जिज्ञासा : पहले जब बात हुई थी इस विषय पर जैसे नाचने वाले, गाने वाले, उनको नाम भर बता देना।

बाबाजी : पांचवी तक जरूरत पड़ने पर सारभूत रूप में देना।

जिज्ञासा : जरूरत पड़ने पर का मतलब जब बच्चा पूछता है तब बतायें या हम अपनी तरफ से रखें।

बाबाजी : अपनी तरफ से भी रख सकते हैं या बच्चे पूछने पर तो रखना ही है। ठीक है ना।

जिज्ञासा : जरूरत पड़ने पर जैसे हमको लग रहा है कि बच्चे का सही की तरफ ध्यानाकर्ष कराना है, उस समय में हमको समीक्षा की जरूरत पड़ेगी।

बाबाजी : ये जो कक्षायें पार होते हैं उसको सरकारी मिशनरी स्वीकारने के लिए।

जिज्ञासा : अच्छा उसको स्वीकारने के लिये ठीक है।

बाबाजी : तभी आवश्यकता महसूस होगा।

जिज्ञासा : हां तभी आवश्यकता महूसस होगा।

बाबाजी : और आगे, ये जो अभी पढ़ा रहे हैं और जो आगे पढ़ाना है उसको सामंजस्य बैठा रहे हैं। पढ़ाने वाला को पूरा पढ़कर सार रूप में बच्चे को पढ़ायेंगे। उनको नोट लिखायेंगे।

जिज्ञासा : ये जो आपके साथ बैठकर सिलेबस की बात होनी है आगे इसकी तैयारी करने का जो क्रम बनेगा वो कैसे चयनित होगा कि क्या चीज बच्चों को दिया जाये उसको किस तरीके से चयन करेंगे।

बाबाजी : अभी–अभी जो हुआ, बच्चों के साथ, क्या करना पहले सम्बोधन और अनुशासन, संबंधों को पहचानने के लिए नियंत्रण। दो वर्षमें दो बात। खेल सिखायें, डांस सिखायें और भाषा सिखायेंगे।

जिज्ञासा : ये हो गया प्री प्रायमरी के लिये, उसके बाद।

बाबाजी : वो तो पहली कक्षा का किताबें लिखा है उसको पहले हजम करना होगा हर अध्यापिका को। आप हजम न करें और पढ़ा देते हैं ऐसा होने वाला नहीं है। मनमानी इसमें कुछ नहीं है सब सिस्टमेटिकली है, करना हो तो, करना नहीं हो तो सभी मनमानी हो सकता है। पहली कक्षा की किताब को हजम करना होगा। पांचवी तक किताब लिख दिया है। पढ़ाने में आ रहा है, यहां से आज्ञा पालन में ले जाना है। नियंत्रण में ले जायेंगे। सहयोग में ले जायेंगे। काहे के लिये नियंत्रण, व्यवस्था के लिए नियंत्रण। आगे चलकर व्यवस्था में जीने के लिये। पहली कक्षा से ये शुरू किये। ये होना चाहिए। पूछ लो न सबसे।

जिज्ञासा : **होना चाहिए।**

बाबाजी : मनमानी में कोई व्यवस्था नहीं है। अव्यवस्था बढाने से व्यवस्था नहीं बनता है। सिस्टमेटिक विधि से होता है। अभी डांस को यदि सिस्टमेटिकली समझायेंगे तब डांस होगा कि मनमानी करने से डांस होगा, एक छोटी–सी बात। खेल सिस्टमेटिकली होने से समझदारी बढ़ेगी या दुष्टता बढ़ेगी।

जिज्ञासा : **जी**

बाबाजी : क्या बढ़ाना है। डांस से खेल से दुष्टता को बढ़ाना है या सजन्नता को बढ़ाना है तय कर लो। और कुछ।

जिज्ञासा : **तीन बिन्दु पर पहले आपने ध्यानाकर्षण कराया, एक बिन्दु आपने नया दिया है नियंत्रण। इसको सभी लोग समझना चाहते हैं।**

बाबाजी : स्वीकृतियां होने से नियंत्रण। व्यवस्था में जीने से नियंत्रण। निश्चित विधियां नियंत्रण। नहीं तो अनियन्त्रण, क्या होना चाहिए अनियंत्रण या नियंत्रण?

जिज्ञासा : **नियंत्रण।**

बाबाजी : आप हम भी नियंत्रित रहना है, बच्चों को भी नियंत्रित रहना है। सीधी बात इतना ही है। हो गया। इसमें मनमानी कुछ नहीं चलता है।

जिज्ञासा : **व्यवस्था को समझने तक मनमानो चलता है।**

बाबाजी : वो ही तो, व्यवस्था को आप समझोगे कि बच्चे समझेगें?

जिज्ञासा : **पहले हम लोग समझेंगे।**

बाबाजी : व्यवस्था के अर्थ में संबंध का पहचान होता है, पहले का लिखा है। संबंधों का पहचान व्यवस्था के अर्थ में ही होता है दूसरा कोई अर्थ नहीं बनता। कितने भी सिर कूट लें, सिर फोड़ लें। चटनी बनाकर खा लें।

जिज्ञासा : **ये सारे प्वाइंट अभी अध्यापिका और अभिभावकों के लिये है।**

बाबाजी : अध्यापक के लिये पहले उसके बाद विद्यार्थी के लिये, उसके बाद अभिभावक केलिये। अभी की स्थिति। अभिभावक प्रबुद्ध होने केबाद अभिभावक अध्यापक का संयुक्त एकरूपता होना। अभी कहां है? अभिभावक अपना राग अलग बनाते हैं। विद्यार्थी अपना अलग राग बनाते हैं। कुकड़ा मुर्गी पढ़ा करके। क्या पढ़ाना है कुकड़ा, मुर्गी उसके बाद, नहीं तो क्या पढ़ाना है रहस्य। रहस्यमय तुम्हारा ईश्वर। रहस्यमय ईश्वर तुम्हारा कल्याण करेंगे। संसार का तुम भलाई करो ईश्वर तुम्हारा भला करे। साधारण बात। कहते हैं कि नहीं कहते हैं। ये ही न सार है। निचोड़ ये है।

जिज्ञासा : **निचोड़ इतना ही है।**

बाबाजी : रहस्य मुक्त होना पड़ेगा कि नहीं जीने के लिये।

जिज्ञासा : **रहस्य मुक्त होना पड़ेगा।**

बाबाजी : प्रमाण होना चाहिए कि नहीं, तर्क संगत होना चाहिए की नहीं।

जिज्ञासा : **होना तो चाहिए बाबाजी।**

बाबाजी : वो ही अध्ययन का मतलब। तर्क संगत भी हो, प्रमाण भी हो, व्यवस्था भी हो। किसका व्यवस्था, प्रमाण का व्यवस्था। प्रमाण ही व्यवस्था के रूप में प्रमाण हो जाये। जीना ही प्रमाण।

जिज्ञासा : **बाबाजी जैसे एक परिवार से एक से अधिक बच्चे हैं तो उनके लिये अपन फीस का कम ज्यादा काम करेंगे। कैसे करेंगे?**

बाबाजी : फीस को तो उतना ही करना पड़ेगा। यदि स्कूल चाहिये तो उतना ही फीस देना पड़ेगा। नहीं तो कौन करेगा। एक दिन की तो काम नहोंहै। 12 महीने की बात है। 300 दिन की बात है। चार बच्चे हो कि पांच बच्चे हो, ये हमारा काम नहीं है कि तुम एक बच्चे बनाओ। जितने बच्चे बनाओगे उतना पैसा देना होगा। हम पढ़ायेंगे। ठीक है।

जिज्ञासा : **इस विधि से जो अभिभावक तैयार होते हैं उन अभिभावकों को तीन व्यक्ति के साक्षी में एडमिशन लेना है।**

बाबाजी : अभिभावकों के सामने पूरी बात को बारम्बार बतायें। पूरी बात को पुराण पंचाग को बारम्बार बतायें।

जिज्ञासा : **तो ये बताने की जो प्रक्रिया है....**

बाबाजी : वो एक व्यक्ति।

जिज्ञासा : **जी।**

बाबाजी : एक व्यक्ति बतायें चाहें आप बतायें, चाहे आप बतायें।

जिज्ञासा : एक व्यक्ति सभा में बताये कि एक–एक व्यक्ति को बतायें। कैसे?

बाबाजी : एक साथ बता सकते हैं, अकेले में भी बता सकते हैं। दोनों में विषमता नहीं होना। एक रूप तय होना। वही होना।

जिज्ञासा : एक रूप होना।

सभा में बताते समय प्रचलित शिक्षा की समीक्षा करते हुये बताना है कि सीधी–सीधी बात चेतना विकास मूल्य शिक्षा के बारे में बताना है।

बाबाजी : अपनी बात सीधा बताना है उसके बाद उसको समीक्षा, जो सुनना चाहते हैं उसको सुना देना।

जिज्ञासा : ठीक है।

बाबाजी : कुकड़ा, मुर्गी विद्या। श्रम से समृद्धि, समझ से समाधान इसको हम पहली कक्षा से लेकर स्नातक पढ़ायेंगे। इसकी जरूरत है कि नहीं देख लो।

जिज्ञासा : बाबाजी कौन सी उम्र का बच्चा किस कक्षा में रहेगा।

बाबाजी : बता तो दिया 3 से 5 तक प्री–प्रायमरी। 5 से10 तक प्राइमरी।

जिज्ञासा : अगर कोई बच्चा बीच में आता है मान लीजिए वो 9 वर्ष का है और वो पढ़ना चाहता है जो हम उसको कौन सी कक्षा में लें?

बाबाजी : वो तो प्राइमरी में बैठाओ। उसके बाद उसको प्री प्राइमरी का पढ़ाया जाये। प्री–प्राइमरी से लेकर प्राइमरी को पढ़ाया जाये। इसमें किसको क्या तकलीफ।

जिज्ञासा : ठीक लग रहा है।

बाबाजी : अभी बच्चों की भविष्य की सोचने की बात है। अभी तक न अपना भविष्य सोचते रहे। बच्चों को नहीं सोचते रहे। बात इतना ही है ना। आप वो ही कर रहे हो ना नहीं कर रहे हैं, बच्चों का भविष्य सोच रहे हो कि नहीं।

जिज्ञासा : जी बाबा।

विधि पर और कौन सी बात है जिस पर हमारा ध्यान नहीं जा पा रहा है। आप बता दीजिये।

बाबाजी : विधि यही है कि पहले संबोधन उसके साथ जुड़ गया आज्ञापालन सहयोग। ये तीनों जुड़ गये। उसके बाद अनुशासन आ गया उसके बाद स्वानुशासन आ गया। इतना ही तो बात है। पांच वर्ष में यही परिवर्तन होगा। इसी के बीच में

बताना है। कितना बताना है इसको समझना पड़ेगा न। बच्चों को आज्ञापालन समझाना। इसको जो है ना अभिभावकों को समझाना।

जिज्ञासा : **ये कैसे तय हो पायेगा कि एक व्यक्ति आज्ञापालन को, सहयोग को, नियंत्रण को एक बच्चे को समझा सकता है।**

बाबाजी : समझदारी से होता है।

जिज्ञासा : **तो ये तय करने वाला व्यक्ति वह स्वयं होगा।**

बाबाजी : स्वयं होगा, मैं होऊंगा। ऐसे 10 होंगे।

जिज्ञासा : **विद्यालय में एक तो ये हो गया कि हमको बच्चों को क्या देना है, हमको क्या समझना है और एक मुद्दा ये आ रहा है कि अध्यापिकाओं की ड्रेस कैसा होना चाहिए।**

बाबाजी : कपड़ा सामान्य होना, जो हर दिन पहनते है। कोई दिखावा करना नहीं है।

जिज्ञासा : **सामान्य में जीन्स भी आता है।**

बाबाजी : कुछ भी कर लो जिसको सामान्य मानते हो उसको कर लो न तय।

जिज्ञासा : **जीन्स पहनकर आ सकते हैं ।**

बाबाजी : हां क्या तकलीफ। जिसको जो पहनने की इच्छा होती है पहन कर आये।

जिज्ञासा : **बच्चे बोलते हैं हमको भी जीन्स पहननी है।**

बाबाजी : ठीक है पहनाओ।

जिज्ञासा : **बच्चों को जीन्स पहनाने में कोई दिक्कत नहीं है?**

बाबाजी : कोई दिक्कत नहीं है।

जिज्ञासा : **स्वास्थ की दृष्टि से ठीक नहीं है ऐसी आपसे चर्चा हुई है।**

बाबाजी : स्वास्थ के बारे में सोचेंगे तब न।

स्वास्थ को बनाये रखने के लिये कपड़ा पहना जाये। इतना ही है।

जिज्ञासा : **तो बाबाजी एक अध्यापिका ये बतायेगी कि स्वास्थ को बनाये रखने के लिये कैसे कपड़े होते हैं।**

बाबाजी : कैसे कपड़े होते हैं जिसका अपेक्षा करोगे। हमारा कहना पर कुछ नहीं होता है।

जिज्ञासा : **नहीं बताना तो पड़ता है ना बाबाजी कि किस तरीके से कपड़े स्वास्थ के लिये अच्छे होते हैं।**

बाबाजी : स्वास्थ के लिये रूई वाला कपड़ा ज्यादा अच्छा है।

जिज्ञासा : **तो बच्चा बोलेगा कि ये जीन्स तो रूई वाला नहीं है।**

बाबाजी : तो ठीक है ना रूई वाला पहनो।

जिज्ञासा : **तो वो पूछेगा कि अध्यापिका जी लोग ऐसा कपड़ा क्यों पहनती हैं?**

बाबाजी : अध्यापिका लोग स्वयं आचरण में लें आयें जो बच्चे जिसको आचरण में लाना है।

जिज्ञासा : **हम किसी को नहीं बोलेंगे।**

बाबाजी : बोलने की क्या जरूरत है हमको जीना ही है।

जिज्ञासा : **हमको जीना ही है।**

बाबाजी : जीने से करोगे कि नहीं। रूई का कपड़ा आप पहनोंगे, बच्चों को समझ में आता है कि नहीं। बस

जिज्ञासा : **श्रृंगार।**

बाबाजी : श्रृंगार में वही तेल। तेल लगाना, नहीं लगाना। सरसों का तेल, तिल्ली का तेल, नारियल का तेल।

जिज्ञासा : **श्रृंगार से हम दूसरा मतलब लेते हैं आपने दूसरा मतलब निकाल दिया।**

बाबाजी : हमारा व्यवस्था के अर्थ में है। दूसरा जो है ना भोग के अर्थ में। हम भोग के बारे में बात ही नहीं करेंगे। हम श्रृंगार को केवल व्यवस्था के अर्थ में बतायेंगे। क्या होना चाहिये तय करो न।

जिज्ञासा : **सब लोग बोल रहे हैं बहुत सुंदर। सबने स्वीकार कर लिया।**

बाबाजी : सबको consider करना चाहिए। वही व्यवस्था के लिये अनुकूल। सारी बात को अपन सोचकर अन्तिम बात व्यवस्था के अर्थ में ठीक है। व्यवस्था के लिये नियंत्रण। व्यवस्था के लिये समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व पूर्वक जीना। हर अध्यापिका को ऐसे जीना पड़ेगा।

जिज्ञासा : **जीना पड़ेगा।**

बाबाजी : दूसरा चलेगा नहीं, झांखापट्टी चलेगा नहीं। जीना ही पड़ेगा। झांसापट्टी का मतलब इतना ही कहना कुछ करना कुछ और होना और ही कुछ। ठीक है।

क्यों बेटा समझ में आया, अभी तक डांस कराना है। एक कला है। ऐसे जीने के लिये है नहीं। अभी अपन शुरू कर रहे हैं जीने के लिये। जीना स्वीकार होता है कि बताना स्वीकार होता है; देखा जाये। बच्चों को अपना जीना स्वीकार हुआ तो हम झांसापट्टी छोड़ेंगे। खुद जी के प्रमाणित होकर बतायेंगे। सम.,स.,अ.,स., के रूप में जी के बतायेंगे। और दूसरा कुछ होता नहीं। आपके अनुसार दूसरा कुछ होता है।

जिज्ञासा : **व्ही.आई.पी. में आपने कहा था बाबाजी कि एक अध्यापिका अपने समझ से आश्वस्त होगा।**

बाबाजी : समझदारी से आश्वत होगा, समझदारी का क्या मतलब जीना और आगे।

जिज्ञासा : **और एक अभिभावक समझ और साधन से आश्वत होगा।**

बाबाजी : अध्यापिका और अध्यापक यदि आश्वत होते हैं तो अभिभावक आश्वत हो ही जायेंगे। नहीं।

जिज्ञासा : **यहीं पर और समझना है।**

बाबाजी : अरे हम प्रमाणित होयेंगे। आप प्रमाणित होने की इच्छा रखते हैं कि नहीं।

जिज्ञासा : **हां जी।**

बाबाजी : पूछ लो सबसे, अभी जितना है सब से पूछ लो। बूढ़े से। सीधा बात।

बाबाजी : समा.,स.अ., सहपूर्वक जी करके प्रमाणित होकर के बताना है कि नहीं बताना।

जिज्ञासा : **समा.,स.अ.,–पूर्वक जीने में अभी हम प्रमाणित नहीं है और हम बताने जायेंगे तो अभिभावक कैसे आश्वत होंगे?**

बाबाजी : एसा ही बताना, हम अभी प्रमाणित नहीं है हम बताने वाले हैं।

जिज्ञासा : **हां जी।**

बाबाजी : उसको गुमराह करोगे तो चलेगा नहीं। अभी यही है। गुमराह करना। बात करना, प्रमाणों का बाप बनकर बात करना और जीना, कचरापट्टी से जीना। इसके लिये क्या करेंगे। इससे कठोर बात हो नहीं सकती। अपने को खुद सोचना पड़ेगा। यदि आगे की पीढ़ी को स्वच्छ बनाना है स्वच्छ रूप ें अपने को जीना ही पड़ेगा।

जिज्ञासा : **बाबाजी कक्षा 1 से छोटे बच्चों के लिए क्या करना है?**

बाबाजी : 3–4 वर्ष के बच्चों के लिए बताया है – संबोधन, खेल, नृत्य। तीन भाग बताया। नृत्य जो है 5 वर्ष तक चलेगा। उसके बाद खेल पांच वर्ष, उसके बाद पांच वर्ष जीने की कला। ऐसा सेट हुआ है।

जिज्ञासा : **कक्षा–1 से पहले क्या पाठों को उन्हें सुनायें।**

बाबाजी : पढ़ने के लिए अक्षराभ्यास पहले से कराओगे। नर्सरी में अक्षराभ्यास, नर्सरी – 2 वर्ष। बच्चे 3 वर्ष से 2 वर्ष की अवधि इसका नाम है। प्री प्रायमरी ठीक है। दो वर्ष में हम संबोधन सिखायेंगे, नृत्य सिखायेंगे और अक्षराभ्यास सिखायेंगे। इतना होने के बाद कक्षा 1 से पांच वर्ष के बाद हम कक्षा–1 की किताब पढ़ायेंगे। दो वर्ष किताब नहीं। केवल नृत्य, बच्चों के लिए संबोधन।

बच्चों के साथ संबोधन ठीक हो रहा है कि नहीं।

जिज्ञासा : **हो रहा है बाबाजी काफी ठीक हो रहा है।**

बाबाजी : दो वर्ष में ठीक होता है कि नहीं होता है, पूछ रहा हूँ।

जिज्ञासा : **होता है बाबाजी।**

बाबाजी : संबोधन के बाद ही किताब पढ़ायेंगे। संबोधन के पहले किताब नहीं पढ़ायेंगे। किताब पहली कक्षा की है, पहली कक्षा की किताब पांच वर्ष से पढ़ायेंगे। ये नृत्य और संबोधन यथावत रहेगा। पांच वर्ष तक ठीक है।

जिज्ञासा : **बाबाजी, अपन विद्यालय परिसर में देखते हैं तब संबोधन बराबर हो रहा है।**

बाबाजी : ठीक है न उतना ही जरूरत है। अभी विद्यालय परिसर की बात है। अभी संसार की बात बाद में करेंगे। विद्यालय परिसर में वो ठीक रहते हैं कि नहीं। घर में जाकर कुछ भी करें। उतना ही बात करना, विद्यालय परिसर की ही बात करना, अभी अभिभावकों के बारे में बात नहीं कर रहे।

लोगों को इनका संबोधन, इनका नृत्य इनका जितना भी क्रियाकलाप होता है वो ठीक लगता है कि नहीं पूछो।

वो जो अभिभावक कहते हैं ठीक है उनके बच्चों को रखो जो ठीक नहीं कहते हैं उनके बच्चों को उन्हीं के साथ भेज देना। ले जाओ भई तुम अपने बच्चे को। कठोरता को यही रखना। ये तलवार नहीं चलाओगे तो तुम चल नहीं पाओगे। अपने गले काटने वाले बैठे ही हैं सब।

अभिभावक हुये तो सब योग्य है, ऐसा तय नहीं करना। जो समझते हैं उनको समझदार मानना।

जिज्ञासा : बाबाजी आपकी ये बात बहुत ताकत देगी क्योंकि ये निर्णय लेने में थोड़ा कन्फ्यूजन था।

बाबाजी : वो धीरे–धीरे अपने को समझना होगा। समझ करके अपने को बच्चों को संबोधित करना है। बच्चों को संबोधन में अभिभावक संतुष्ट होते हैं कि नहीं देखना। उसके बाद दुनिया संतुष्ट होगी कि नहीं देखेंगे। कब देखेंगे जब स्नातक कक्षा मे ठीक है। अभी शुरूवात कहां से करनी है प्री–प्रायमरी से 17 वर्ष की अवधि अपने पास बच्चे रहेंगे ये मान कर चलना।

अब कोई दो वर्ष, एक वर्ष या उसी वक्त चला जाये अपन को मानना यही है ठीक है। मानवता के साथ दो बात। एक तरफ प्री–प्रायमरी में पहले संबोधन और नृत्य दो बात पुनः।

और प्री–प्रायमरी में यदि संतुष्ट नहीं होते हैं उनको उसी वक्त इस्तीफा। चले जाओ भई। जो संबोधन से तृप्त नहीं होता है चले जाओ। जो संबोधन से तृप्त नहीं होता है वो नैतिक होगा कैसे माना जाये? नैतिकता का आधार सम्बोधन। बच्चों को नैतिकता प्रधान शिक्षा दोगे कि नहीं दोगे। अपने को खिसकना नहीं है। ठीक।

आपके अनुसार संबोधन ठीक है, आपको संतोष होत है सिखाकर के। अभी दो वर्ष पूरा हुआ, प्री–प्रायमरी कक्षा पूरा हुआ। अब अपन कक्षा–1 में चले आये, अपने को ही चलना होगा न।

जिज्ञासा : आपने कहां कक्षा–1 में आने से पहले अक्षराभ्यास। कैसे कराना है?

बाबाजी : पहले अ आ .... ये बताया, पढ़ाया उसे बाद अ से अम्मा बताया। उसके बाद बोलना आ गया, लिखना सिखा दिया। दूसरे वर्ष में लिखना कर दिया। अक्षर का अभ्यास यहीं है। इतना ही है और बोलने में सख्या। संख्या को बुलवा दो, कितनी संख्या बोलते हैं प्री–प्रायमरी में।

जिज्ञासा : बीस तक।

बाबाजी : ठीक है बढ़िया बोलते हैं।

जिज्ञासा : बढ़िया बोलते हैं।

बाबाजी : पहली कक्षा में कहां तक पढ़ाते हैं।

जिज्ञासा : सौ तक।

बाबाजी : ठीक है और उसके बाद ये आना चाहिए। गांव के प्रधान, गांव में प्रधान उपज, गांव में प्रधान कार्यक्रम, गांव में कैसे खेल को देखते हैं, कैसे त्यौहारों को देखते हैं, मनाते हैं उसका इतिहास। इतिहास कहां से शुरू करेंगे। गांव से,

मोहल्ले से। तो क्या करेंगे त्यौहारों को पहले पढ़ायेंगे, दूसरे वर्ष में इसको बतायेंगे।

पहली कक्षा में आये उसके पहले की बात है पहले वर्ष में संबोधन सिखाये, दूसरे वर्ष में अक्षराभ्यास सिखाये, उसके साथ संख्या शास्त्र सिखाये। और मुद्रा, भंगिमा, अंगहार को नृत्य विधि से सिखाये। स्वास्थ के लिए ये पहले वर्ष की बात हुई। दूसरे वर्ष में उसी को निरंतर किया नृत्य को। निरंतर करके उससे अच्छा नृत्य की बात सिखाया और संबोधन यथावत रखा और उसके बाद पढ़ाना सिखाया। गांव का प्रमुख, देश का प्रमुख पढ़ाया। और उसके बाद हम गांव में कैसे त्यौहार बनाते हैं वो बताया। गांव में अड़ोस–पड़ास के घर मे कैसे त्यौहार मनाते हैं, इसको बताया। उसमें कैसे लोग आते हैं वो बताया। उसके बाद कक्षा एक आ जाता है। यहां तक बच्चा प्री–प्रायमरी में निष्णात हो गये। अक्षराभ्यास, संख्या शास्त्र और इतिहास प्री–प्रायमरी में। उसको पुष्ट किया कक्षा 1 में।

प्री–प्रायमरी और प्रायमरी का अंतर समझ में आ गया।

जिज्ञासा : त्यौहारों के बारे में कैसे बताना है और कौन–कौन से त्यौहार?

बाबाजी : वो जो त्यौहार मनाते हैं, आप अपने घर में कुछ बनाते होंगे, आपके बच्चे बतायेंगे। इनके घर में कुछ मनता होगा ये बतायेंगे। मनाना क्या चाहिए एक कक्षा के बाद बतायेंगे। दूसरे कक्षा में शुरू करेंगे।

जिज्ञासा : प्री–प्रायमरी में नृत्य को बिल्कुल जैसे सिखाते हैं वैसे सिखाया जाये।

बाबाजी : पहली से पांचवी तक सिलेबस बनाके रखोगे। पहली कक्षा में इतना सिखायेंगे, दूसरी कक्षा में इतना सिखायेंगे, पांच वर्ष तक सिखा दिया। उसके बाद खेल खिलाया (सिखाया)। स्वास्थ्य के लिए खेल, स्वास्थ्य के लिए नृत्य। दस वर्ष तक ये चलेगा उसके बाद व्यवहार में प्रमाण, कार्य में प्रमाण, जीने में प्रमाण। पांच–पांच वर्ष तक ये कर सकते हैं कि नहीं।

जिज्ञासा : अपने पास बड़ी उम्र के बच्चे हैं।

बाबाजी : बड़ी उम्र के बच्चों को भेज दो न काहे को सिर कूट रहे हो वो सुधरेंगे नहीं। अभी बड़ी उम्र के आ गये। जैसे 8 वर्ष के आ गये ठीक है। 8 वर्ष में कितनी कक्षा में आना चाहिए। तीसरी में आना चाहिए। तीसरी के पहले का कैसे कवर करावोगे। इसीलिए अभी आप लोगों को परिश्रम ज्यादा है, ज्यादा करना पड़ता है। पीछे का सबको अवगत कराओ और उसके बाद उनको रखो। तीसरी कक्षा का पढ़ाओ, तब बनता है।

पीछे का यदि सब कवर करते हैं तब रखो यदि नहीं कवर कर पाये तो नहीं रखो। यदि कवर नहीं करते हैं तो अपना पूरा उसको मेनेज नहीं कर पाते तो रख कर क्या करोगे। उसमें अपना नाम बनता नहीं सार्थकता में से बनता है। आपको हम मजबूर नहीं करते, यही करना है आप अपने ताकत को आजमा लो यदि कर सकते हो तो करो।

बाबाजी : आप सभी का परिश्रम सार्थक है अभी 24 घण्टे परेड हो रही है आपकी सभी। पांच लोग बैठे हैं।

जिज्ञासा : बाबाजी सब लोग जाते हैं। उनमें से कुछ लोग दो दिन जाते हैं।

बाबाजी : ये स्पेशलिस्ट हैं। प्रधान रूप से आप दोनों को ये निश्चय करना है दोनों कि हम मैनेज कर पायेंगे कि नहीं । उसी बच्चों के साथ जूझो। जिन बच्चों के साथ हम मैनेज नहीं कर पायेंगे, उनको रखा ही मत करो। जाओ भई।

जिज्ञासा : कक्षा 1 से 5 तक कराने के लिए सिलेबस बन गया है।

बाबाजी : कक्षा 1, 2, 3... कितना देना है उसको तय कर लो। कितना नृत्य कराना है, कितना भंगिमाएं तैयार करना है, कितना मुद्रा तैयार करना है और उसके लिए साहित्य क्या देना। साहित्य प्रधान, साहित्य को अपने दर्शन के आधार पर करना पड़ेगा। उसका आरंभिक स्वरूप में प्रिंट हुआ है। गीतों का स्वरूप गीतों की किताब है। उसके से कितना देना है वो तय करेंगे। बाकी बचता है साहित्य बनाना। आप सब बनाना नहीं तो मुझे बोलना मैं बना दूंगा।

जिज्ञासा : बाबाजी प्री–प्रायमरी का पूछना था।

बाबाजी : नृत्य को आरंभ करना। उसमें मुद्रा, भंगिमा, अंगाहार को धीरे–धीरे सिखाना। उसके क्या–क्या मुद्रायें प्रधान होते है। उसको बताना। उसमें एक मुद्रा के लिए एक गाने में वंदना गाना। उसको तय करना। उसमें सभी है। वंदना में सभी मुद्रा आता है, अंगाहार आता है। उसके सबको तय करो। तय करके उसको तैयार करा दे प्री–प्रायमरी तक। उसक बाद साहित्य के साथ कराओ। साहित्य के साथ नृत्य करेगे। उसके बाद साहित्य होने के पश्चात् स्वास्थ्य ठीक रहता है कि नहीं उसको देखो। यदि उसमें व्यतिरेक होता है उसको सुधारो। यही सब काम है शोध का। शोध का मतलब यही है। अभी आप लोग शोध विधि से चलेंगे। पांच, छः लोग, दस लोग व्ही.आई.पी. में काम करेंगे। उसमें मास्टर विधि नहीं है, अंतिम बात नहीं है। अंतिम बात को पहले से शुरू करना चाहते हैं वो होगा नहीं। उसका एक दो बार शोध होगा, एक दो बार परिवर्तन होगा।

जिज्ञासा : बच्चों की योग्यता के अनुसार पाठ्यक्रम अलग–अलग बनेगा वो थोड़ा सा कक्षा 1 में match नहीं होता बाबा। (Nursery & Pre-primary का english का)

बाबाजी : प्री–प्रायमरी – प्री–प्रायमरी में केवल संबोधन सहयोग और आज्ञापालन ये तीनों बात प्री–प्रायमरी में आयेगी उसके बाद संबोधन गौण होगा, डांस प्रधान होगा, कक्षा 6 से दसवीं तक और उसके बाद 10वीं से 11वीं से शुरू होकर के और प्रमाण शुरू होगा। ये ठीक है कि नहीं इसके लिये चेतना विकास मूल्य शिक्षा को पूरा करना है। कक्षा 1 से मूल्य शिक्षा चेतना विकास प्री–प्रायमरी में संबोधन, नृत्य ये प्रधान होगा। आज्ञापालन प्रधान होगा, सहयोग प्रधान होगा, ये सब को देखना होगा। चारों बातों को। इसमें सहमत हैं कि नहीं।

वस्तु मूलक गणित। सख्यात्मक गणित को छोड़ दिया अपन पांच कक्षा तक। 6वीं से संख्यात्मक गणित को पढ़ायेंगे 10वीं तक उसके बाद छोड़ देंगे ––,,–– को। वस्तु मूलक गणित को प्रमाणित करने के लिये कहेंगे। संख्यात्मक गणित जो विघटन करने का काम करता है और क्या काम करता है। अपनी धुन मे रहने पर नहीं होगा ये, एक दूसरे को सुनना पड़ेगा। समझ में नहीं आता तो यहां नहीं है – समझने वाली बात है यहां।

अभी बताया वस्तुमूलक गणित को हम पढ़ायेंगे 5वीं कक्षा तक 6वीं कक्षा से वस्तुमूलक–संख्यात्मक दोनों पढ़ायेंगे – 10वीं कक्षा तक, उसके बाद वस्तु मूलक विधि से प्रमाणित करने के लिये कहेंगे। प्रमाण वस्तु मूलक होगा कि संख्या मूलक होगा। वस्तु मूलक अभी भी ऐसे ही हैं ये जो जितना भी बना है विघटन विधि से बना है – छोटा रूप एक का 10 भाग किया, उसका 10 भाग किया..... ऐसा करके तो हुआ है। तीन बार करने में कहां पहुंचते हैं? 1000 में पहुंच जाते हैं।

जिज्ञासा : बाबाजी ये जो आपने बताया वस्तु मूलक गणित 5वीं कक्षा तक उसके लिये हम पूरा ही आपसे समझना चाह रहे हैं कि वो कैसे होगा और आपने एक बार ये भी कहा था कि जो Govt. का सरकार का है उसको भी ध्यान में रखते हुए चलना है। वो भी ना छूट....

बाबाजी : वस्तुमूलक गणित 5वीं कक्षा तक बताया, संख्या मूलक वस्तु मूलक पढ़ायेंगे बताया उसके बाद प्रमाणित करो कहेंगे। इसको तीन–पांच वर्ष तक क्या कहा? 5 वर्ष तक वस्तु मूलक उसके बाद दोनों। मनमानी कुछ नहीं बनता, मनमानी बेवकूफी का रास्ता है। रास्ता है मूल्य शिक्षा चेतना विकास। मूल्य शिक्षा कैसे आता है, वस्तु मूलक विधि से आता है ठीक है ना?

जिज्ञासा : इस चीज को हम लोग सभी समझना चाह रहे हैं कि वस्तु मूलक गणित को कैसे दें?

बाबाजी : वस्तु मूलक का मतलब 10 मनुष्य, 10 दाना, इस विधि से 10 पक्षी, 10 जानवर, 10 दाना, 10 झाड़/वृक्ष ये सब करायेंगे।

जिज्ञासा : और एक जैसी चीजों की पहचान करवाते है।

बाबाजी : एक चीज से दूसरा चीज को भी पहचाना जाता है, एक जैसी चीज को भी पहचाना जाता है, जैसा 1 नाप, 10 नाप, 20 नाप, 100 नाप, 1000 नाप, तौल, नाप–तौल ठीक हो गया।

जिज्ञासा : जैसे एक जैसी चीज को ऐसे पढ़ाते हैं कि 1 सेब और 1 सेब एक जैसी चीज हैं हम इस एक जैसी चीज को कैसे पढ़ाएं।

बाबाजी : नाप–तौल में पढ़ायेंगे। नाप–तौल में एक जैसा वस्तु को पढ़ायेंगे। कपड़ा 1 विलास 10 विलास 100 हाथ 200 हाथ उसी को मीटर में बता दो, क्या तकलीफ?

जिज्ञासा : एक जैसी आकृति की पहचान करवानां

बाबाजी : एक जैसी चीज में आकृति भी आया कि नहीं आया? आकृति हो गया, पंखा हो गया, पर निकाल दिया परमुक्त हो गया। आदमी पर को निकालता ही है व रास्ते में पड़ा रहता है। आदमी ज्यादा करता है सब।

जिज्ञासा : छोटे बड़े की पहचान करवाना।

बाबाजी : नाप तौल में सब आता है यह। नाप तौल के आधार पर छोटा–बड़ा, ज्यादा कम। बढ़िया समझ रहे हो, ऐसा मेरा मान्यता है। समझ रहे हो, मानू की नहीं कि नहीं समझ रहे हो मानू।

जिज्ञासा : गिनती हम 20 तक सिखा दिये। जब 100 तक ही संख्यायें सिखायेंगे तो किन वस्तुओं को 100 गिनवायें।

बाबाजी : 5 वर्ष तक वस्तु मूलक 10 दाना, 10 पक्षी, 10 जानवर, 10 .... तक ...... संख्यामूलक विघटन विधि संख्या मूलक विघटन विधि और वस्तु मूलक संघटन विधि 1 नाप – 10 नाप, 1 नाप में 1 खड़ी, 1 क्विंटल, उसी का विघटन करो, 1 नाप। 20 नाप में 1 घंटी और 1 नाप में 10 वां 20वां एक भाग।

जिज्ञासा : कक्षा 1 में समय को हम कैसे शुरू करें? पहले दिन बताए कि पहले ही बता दें कि धरती घूम रही है। शुरूवात कैसे करें?

बाबाजी : समय का स्वीकार भी वैसे ही है। एक दिन 24 घंटा, 24 घंटे में भाग दिये एक दिन को, 24 घंटा हो गया और 1 घंटा को 60 से भाग दिया मिनिट हो गया । 1 मिनिट को 60 से भाग दिया माइक्रोमिनिट होगा। ऐसा बनता है।

जिज्ञासा : ऐसा कक्षा 1 में बच्चों को बताएं।

बाबाजी : सारा किताब को पहले बता देना।

जिज्ञासा : यही ज्यादा लग रहा है, बच्चों के लिए।

बाबाजी : कक्षा 1 में क्या कहा है? आज्ञा पालन, सहयोग, संबोधन तीनों में पारंगत होना।

जिज्ञासा : गणित को हम लोग नहीं समझ पा रहे हैं कि कैसे दें?

बाबाजी : 5वीं कक्षा तक वस्तुमूलक 10वीं कक्षा तक वस्तु मूलक और संख्या मूलक। 11वीं कक्षा से प्रमाण। संख्या मूलक भी प्रस्तुत करेगा, वस्तु मूलक भी प्रस्तुत करेगा। जो पढ़ायेंगे वही प्रस्तुत करेगा ना। मनमानी करोगे कोई भी जीता हुआ मिलेगा नहीं। मरा हुआ मिलेगा। क्या करना है सोच लो। इसको अच्छी तरह से पहचानों। कोई भी आदमी मनमानी करना तब तो मरा हुआ ही रहेगा। मनमानी करो जहां पहुचना है पहुंचाओ।

सिद्धान्त जो लिखा है वस्तु मूलक और संख्या मूलक। संख्या मूलक को विघटन विधि से बनता है और वस्तु मूलक नाप तौल से बनता है।

वस्तु का मतलब है एक वस्तु, जैसे धान, जैसे सरसों जैसा मूली जैसा गोभी कुछ भी देओ। 1 वस्तु को कितना ना तौल से बताएंगे, कितना है संख्या से बतायेंगे, संख्या से आदमी को बतायेंगे, गाय को बतायेंगे, ठीक है। नाप तौल से चीजों को, आलू को बताएंगे, प्याज को बताएंगे, ठीक है?

जिज्ञासा : बच्चे को बताया 1 माता जी है 1 पिता जी हैं।

बाबाजी : माताजी का नाम बताना 1 माताजी रहेंगे, माताजी जैसे अनेक रहेंगे ये बाद में बताना। माताजी नाम है। अनेक के साथ माताजी लग सकता है, बहनजी अनेक के साथ लग सकता है, 1 बहन जी मनमानी बात है। एक बता करके अनेक बताना होता है। 1 माताजी 2 माताजी 5 माताजी 10 माताजी, 1 पिताजी, 2 पिताजी, 10 पिताजी, 1 भाई, 2 भाई 4 भाई, 1 बहन, 2 बहन 4 बहन होते हैं कि नहीं।

जिज्ञासा : ऐसा 1 लिखना भी बताएं उनको!

बाबाजी : ये क्या चीज है, तुम चिन्ह लगाया, चिन्ह नहीं होता है, आदमी होता है,

जिज्ञासा : तो जब हम वो एक बता रहे हैं तो चिन्ह नहीं देना।

बाबाजी : आदमी का नाम है।

जिज्ञासा : ये ऐसा चिन्ह कब से देना शुरू करें।

बाबाजी : चिन्ह संख्या की विधि से आयेगा। 1 आदमी, 1 गाय, 1 दाना, 1 सरसों, 1 घर, 1 जानवर।

जिज्ञासा : 1–1 वस्तु के साथ चिन्ह को दे सकते हैं ना साथ–साथ।

बाबाजी : चिन्ह तो किसी भी प्रकार से दे सकते हैं। यही देना है ऐसा कुछ थोड़े ही है। कुछ भी संख्या दे सकते हैं, हिन्दी में लिखोगे।

जिज्ञासा : एक बात और कर लेते हैं बाबाजी स्पष्ट।

बाबाजी : संख्या का नाम एक अलग है। संख्या एक अलग चीज है। ये दोनों को समझो, तुमको समझना ह। संख्या का नाम, संख्या अलग है कि नहीं। एक आदमी हो सकता है, एक दाना, एक जानवर, पक्षी, चींटी, हाथी हो सकता है। एक–एक संबोधन, एक संख्या, रूपरेखा बनाना हर भाषा में अलग–अलग होता है। ये कुछ अच्छा सोचकर के बता रही है समझा इसको। अच्छाई का मतलब इतना ही नहो है कि एक जगह बैठे रहें।

सर्वप्रथम परम्परा सच्चाई को बताने में असमर्थ रहा। ठीक है। अब क्या है? विकल्प विधि से सुनना है समझना है। दो ही काम समझा, नहीं समझा। समझा, समझा! समझा नहीं समझा हो सकता है। समझने के बाद ही समझना होता है। सभी अपना–अपना ताल, राग, ढपरा बजाना सभी जानते हैं। कौन नहीं जानता है? वहीं ढपला को छोड़ना पड़ेगा। बताओ अपना–अपना ढपला बजाना है कि एक ही बजाना है मानव जात का। एक ही – पूरक होंगे – समझ के ही होंगे। समझदारी किसके पास है? समझदारी की तैयारी नहीं है किसी के पास। समझदारी का ठेका किसके पास है? मैं समझ गया हूँ इसको कहते हुए, आगे सत्यापित करते हुए, आगे चलने वाले कितने हैं? ये जगह आयेगा कि नहीं? आयेगा तो उसका उत्तर तैयार करो पहले, उत्तर तैयार करके शुरूआत करो।

जिज्ञासा : इसम directions आदि जोड़ दिये हैं।

बाबाजी : हम सहमत हैं, इसको पूरा करे बताना। पहली कक्षा में दिशा, काल, देश दोगे, प्री–प्रायमरी में।

जिज्ञासा : नहीं बाबा, दिशा मतलब पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण बस इतना दिशा बताते हैं।

बाबाजी : मैं पूछा दिशा, काल, देश को प्रायमरी में बताओ, प्री–प्रायमरी में बताओगे, स्नातक में बताओगे, कहां बताओगे?

जिज्ञासा : कक्षा 1 से शुरू करेंगे।

बाबाजी : तुमको समझ में नहीं आया और कक्षा 1 में दिशा, देश, काल को कक्षा 1 में पढ़ाओगे। यही गिरने पड़ने की वजह है – रास्ता है। हम आपको बताया, सर्वो उपाय कि भाई कक्षा 1 का किताब लिख चुके हैं। उसको तय करो। पहले कक्षा 1, कक्षा 2 में क्या पढ़ाना है, जो किताब लिख दिये हैं पर्याप्त है कि नही देख लो।

जिज्ञासा : **उसमें तो गणित नहीं है।**

बाबाजी : गणित नहीं है तो क्या होगा उसमें? गणित उसमें समाया है कि नहीं? 1 बच्चे, 2 बच्चे, 10 बच्चे – नहीं समाये हैं? एक दाना, दो दाना, तीन दाना, नहीं समाया है। बुद्धि की बात करो। एक सूत्र बताया उससे उसको फैलाने से कितना होता है ये देख लो। बकरी नहीं बताया, बकरी को खाने वाला बतायेगा। बकरी का गिनती नहीं करना बनता है? बना है तो फिर काहे के लिये परेशान होते हो?

बच्चा को समझ में आता है, जब एक गाय को गिनाया तो एक चींटी को गिन ही सकते हैं। जब बच्चों को समझ में आया तो आपको क्यों समझ में नहीं आया? बकरी को, भेड़, चींटी, हाथी को नहीं बतायेंगे? इसके लिये एक सूत्र बताया। 1,2,3,4 उस सूत्र में सभी को गिन सकते हैं। पहले इसको बताना, वस्तु मूलक गणित यही है उसके बाद आता है संख्या मूलक गणित। संख्या मूलक गणित में विभाजन, विभाजन होता नहीं है। सिर्फ कहा जाता है काय के लिये? Mechanical operation के लिये mechanical operation क्या है दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन। इसको समझने के लिये संख्यात्मक गणित की आवश्यकता है।

माने एक सूत्र को पढ़ा करके उसको फैला देना है। एक आदमी, एक जानवर, एक वृक्ष, एक पत्थर, एक धातु, 2 धातु, 4 धातु, 10 धातु ऐसा बताना।

जिज्ञासा : **जैसे 1.30 घन्टे का बातचीत और 1.30 घंटे का खेल, ऐसे बनाये है 3 घंटे का। कक्षा 1 के बच्चों के लिए**

बाबाजी : कितना समय देंगे स्कूल में?

जिज्ञासा : **4 घंटा रहेंगे, बाबा। तो यह जो 1.30 घंटा है जैसे, 10 से 10.30, 30 मिनट चर्चा हुआ फिर 30 मिनट खेल या गतिविधि फिर 11.00 से 11. 30 चर्चा। ऐसे करके 1.00 बजे तक। 3 घंटे का स्कूल रहेगा और 1 घंटा जो है, बस्ता लगाना, बॉटल रखना, क्लासरूम सफाई करना, उसके बाद हाथ–पैर धो करके प्रार्थना करके स्कूल। इसमें 40–45 मिनट समय लग जायेगा।**

बाबाजी : बहुत बढ़िया, कोई परिवर्तन करने की जरूरत नहीं। बच्चों को ज्यादा समय स्कूल में रखने की जरूरत है। 4 घंटे की जगह 6 घंटा और ज्यादा खेलने की आवश्यकता। ये तो छोटे बच्चे हैं इसमें लिखना, पढ़ना नहीं है, बच्चे अपने में जो पढ़ते हैं, लिखते हैं, करने दें। उनको मना नहीं करना।

जिज्ञासा : **कितने साल तक बाबाजी।**

बाबाजी : पहली कक्षा तक

जिज्ञासा : **बाबाजी जो लिखायेंगे वह स्लेट पर ठीक रहेगा या कॉपी–पेन्सिल पर।**

बाबाजी : जो उपलब्ध है उस पर लिखा जाये। स्लेट मिलेगा नहीं तो स्लेट पर क्या लिखाओगे। कागज नहीं मिलेगा तो कागज पर क्या लिखाओगे। जो मिलता है उसमें लिखाओ। हम लोग ऊंगली से सीखते थे।

जिज्ञासा : **अभी मिलता है, दोनां।**

बाबाजी : बालू के ऊपर उंगली से लिखकर के अक्षर ज्ञान सीखे। मिलता है तो स्लेट में लिखाओ, नहीं मिलता है तो कागज पर लिखाओ।

जिज्ञासा : **हम लोग भी रेती में लिखा रहे हैं बाबा। बाबाजी कक्षा 1 के लिए कुछ दिन बैठ कर भाषा के लिए, कुछ design बनाया था वह point आपको सुनाते हैं। जैसे जब संबोधन के नाम लिखेंगे, जैसे माँ, अम्मा, भाभी, चाची, मामी, फिर जो संबंध है– माता–पिता, पुत्र–पुत्री, भाई–बहन ये सब।**

बाबाजी : संबोधन किसका कराओगी? संबोधन कराने की बात अलग से क्या बता रहे हो ये अपना करतूत। संबोधन में जब बात आती है उसको लिखाना। माता–पिता संबोधन में आता है कि नहीं आता।

जिज्ञासा : **बाबाजी वह जो आप 7 संबंध बनाते है ना,**

बाबाजी : वह सात संबंध ही 700 संबंध हो, आप अपनी बुद्धि लगाओ।

जिज्ञासा : **शरीर के अंग अवयव के नाम, और पानी, जल, वर्षा, झरना, नदी, तालाब।**

बाबाजी : पहले धरती, हवा, पानी, जंगल, जानवर, मानव, इतना लिखा है, इतना ही लिखाना।

जिज्ञासा : **हाँ बाबा धरती, हवा .....। ये क्रम ठीक हुआ।**

हमने जो लिखा मानव का आहार से हम चले हैं।

बाबाजी : मानव के साथ आहार की बात, पहले मानव धरती पर, ये पांचों भाग आना चाहिए।

जिज्ञासा : अब मानव आहार, तो दाल, चावल, रोटी, सब्जी, सलाद फिर सब्जी के नाम भिन्डी, लौकी, बैंगन; भाजी के नाम मेथी, पालक, लाल भाजी, खट्टा भाजी, चौलाई भाजी; फिर औषधी हल्दी, लहसुन, तुलसी, काली मिर्च; ये सब शहद, पान पत्ता, अजवाईन, हरसींगार, पत्थर चट्टा, पारीजात, गोलोय, चीड़चीड़ा, मुलेठी।

बाबाजी : इन दवाइयों का पहचान कराना, उसे बाद उपयोगिता बताना।

जिज्ञासा : अब जो उपयोग की वस्तु है वह अलंकार में लिखे हैं, जैसे पंखा, चप्पल, बिस्तर, चारपाई, गद्दा, तकिया, रजाई, कम्बल, चादरें, बर्तन, कपड़े, प्रेस करने वाला आयरन, कुलर, कुर्सी, टेबल, पुस्तकें, पेन, कॉपी, पेन्सिल ये सब उपयोग की चीज। और उसमें जैसे बिना मात्रा वाले शब्द इसमें से छाटेंगे। जो जो आसान होगा लिखना वह वह दे देंगे।

बाबाजी : उसमें कुछ नहीं, जो लिखाओगे वह सब आसान है, जो लिखाओगे नहीं वह सब कठिन है।

जिज्ञासा : इतना शब्दावली अभी तैयार किया है, इसकी हम भाषा कह रहे हैं।

बाबाजी : इतने में वह नहीं आया जो हम बताये थे। वह भी हम देख रहे हैं। हर बात प्रमाणिक हो, समझा हुआ हूँ, जिया हुआ हूँ। जैसा जिया हुआ बात सिखाने में क्या तकलीफ है, ये qualification यहीं से शुरूआत होता है। माता–पिता, अभिभावक कैसा जीते हैं, उसी को सिखाना पहले, बाजार जो सीखा है उसको बाद में पढ़ाना। जीने की विधि को पहले सिखाना, उसके बाद अड़ोस–पड़ोस को सिखाना, उसके बाद बाजार को सिखाना।

जिज्ञासा : बाबा कल गणित वाले मुद्दे में एक बात रह गई, वह जो पहाड़ा।

बाबाजी : पहाड़ा सिखाना, गणित की संख्या सिखाना, कहा है ना, पहाड़ा गणित की संख्या है कि नहीं।

जिज्ञासा : बाबाजी एक मुद्दा है विज्ञान का, इसमें से कुछ .... के आधार पर चल रहे हैं जैसे ठोस, तरल, विरल "पदार्थावस्था", तो ठोस में मिट्टी, तरल में पानी, विरल में हवा। इसका प्रयोजन के बारे में।

बाबाजी : ठीक है ना, उसी प्रकार जंगल का प्रयोजन, जीवों का प्रयोजन, मानव का प्रयोजन, ऐसा लिखाओ, पढ़ाओ।

जिज्ञासा : **हवा के बारे में जब हम सोच रहे थे उसमें कुछ जिज्ञासा आया, हवा के बारे में, जिसको हम oxygen कहते हैं।**

बाबाजी : प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान पांच वायु का नाम दिया है। उन पांच वायु के बारे में अध्ययन कराओ, उसका प्रयोजन लिखा है, हर वायु का, दर्शन में लिख चुके हैं।

जिज्ञासा : **जैसे विकास क्रम को कल आपने समझाया था कि धरती में पानी आया फिर रचना विधि, वह आपने बनाई थी, तो ये जानना था कि धरती बनने से पहले ये गैसीय पिंड में था क्या?**

बाबाजी : विरल था, विरल से फिर ठोस, फिर तरल आता है।

जिज्ञासा : **ये जो वायु मंडल बनता है, ये मनुष्य योग्य होता है जब मानव आता है तो वह जो वायु मण्डल है वह बदलता होगा।**

बाबाजी : बदलता भी है, धरती में झाड़–पौधे भोजन योग्य हवा में तैयार करते हैं, उसके बाद जीव–जन्तु आते है, उसके बाद मानव आता है।

जिज्ञासा : **हवा में कई तरह के गैस होते हैं ना।**

बाबाजी : धरती के साथ जो जुड़ा हुआ है वह मनुष्य योग्य बना हुआ है।

जिज्ञासा : **ये एक है अलग अलग परत।**

बाबाजी : अलग अलग, जिसमें हम सांस ले रहे है। वह मनुष्य के योग्य।

जिज्ञासा : **एक ही तरीके की हवा है या कई तरीके की हवा है।**

बाबाजी : एक ही तरीके की, मनुष्य का पैदा किया हुआ कई तरीके की हो चुका है। उसी का नाम pollution मानव के अलावा कोई अपराधी नहीं है।

जिज्ञासा : **मनुष्य योग्य जो हवा है बाबाजी, इसमें कई तरीके की गैस है या की ही गैस है।**

बाबाजी : प्राकृतिक विधि से एक है, मनुष्यकृत अनेक है।

जिज्ञासा : **तो उस एक का नाम क्या है?**

बाबाजी : प्राण वायु।

जिज्ञासा : **oxygen किसको कहते हैं?**

बाबाजी : उसी को कहा जाय।

जिज्ञासा : भैया जी बोल रहे हैं कि अभी सब मिक्स है तो वह pollution के कारण है।

बाबाजी : मनुष्य के कारण से, मानव के कारण से, pollution के, कहीं से आया नहीं है, मनुष्य ने ही बनाया है, उसको बच्चों को सिखाना, पहले आप सीखो।

जिज्ञासा : जिस तरीके से पानी का एक आवर्तनशीलता है, हवा की भी आवर्तनशीलता है?

बाबाजी : हवा में आवर्तनशीलता के अलावा क्या चीज है? मानव हवा को छोड़ता है, उसको झाड़–पौधे खा लेते है। झाड़–पौधे खाकर के मानव सेवन योग्य हवा को बनाकर के छोड़ते हैं, ये आवर्तनशीलता मानव हवा को छोड़ता भी है, लेता भी है, छोड़ने में अधिकांश भाग, मानव के लिए अनुकूल नहीं है, उसको झाड़–पौधे अनुकूल बनाते हैं, उसी प्रकार जीवों के साथ भी है। विज्ञान ने इस बात को स्पष्ट किया है, मानव जो वायु छोड़ता है उसको झाड़–पौधे खाकर के प्राण वायु में बदल देते है। विज्ञान के प्रति कृतज्ञ होने की बात। विज्ञान में जितना भी कर्म सिखाया उसमें से pollution बढ़ा। आवर्तनशीलता नहीं सिखाया। pollution रोकने के लिए व्यापार किया, वह रूकता नहीं है। ये क्या यंत्रों से रूकेगा।

जिज्ञासा : ये तो आवर्तनशीलता से ही ठीक होगा।

बाबाजी : झाड़–पौधे ही इसको पचाकर रखें हैं और मानव को प्राण वायु देते हैं।

जिज्ञासा : धरती पर हवा का जो बहाव है ये किस नियम से कैसा होता है?

बाबाजी : धरती की गति के आधार पर होता है, उसके बाद जंगल के पत्ते के टकराव से होता है जंगल में जो झाड़–पौधे होते हैं उसके पत्ते हिलते हैं कि नहीं, हिलने के आधार पर टकराहट होता है कि नहीं, उससे भी हवा बढ़ता है।

जिज्ञासा : हवा का आधार वही है, धरती का घूमना।

बाबाजी : वह कभी रूकता नहीं है, जहां कहीं भी ज्यादा जंगल, ज्यादा हवा, कम जंगल, कम हवा।

जिज्ञासा : हवा और बादल की उसको लेके जाना..............।

बाबाजी : ठीक है, हवा के साथ बादल बहता ही है, आसमान की गर्मी धरती की गर्मी के साथ है, धरती की गर्मी यदि बढ़ जाता है, आसमान की गर्मी कम हो जाती है तो पानी बरसता है।

जिज्ञासा : उच्च दाब, निम्न दाब क्या चीज है?

बाबाजी : आग पर बर्तन रखा, पानी डाला उसमें भाप निकलता है की नहीं?

जिज्ञासा : **नहीं दाब।**

बाबाजी : हमारे शरीर के लिए अनुकूल से अधिक ताप होने से दाब.....

जिज्ञासा : **बाबा दाब pressure.**

बाबाजी : हवा के साथ वाष्प का दबाव होगा कि नहीं होगा? दबाव से ही ऊपर जाता है, दबाव से ही नीचे आता है पानी।

जिज्ञासा : ऊपर भाप जाता है, नीचे पानी आता है।

बाबा दर्शन के कुछ मुद्दे तैयार किए हैं कक्षा 1 के लिए

बाबाजी : कक्षा 1 की किताब में जितना है उतना बढ़िया है।

जिज्ञासा : **उसमें जैसे यश को बताना है, निश्चय को बताना है इक्षण है, इच्छा है।**

बाबाजी : देखने की तमीज सभी बच्चों में होता है, उसके आधार पर कहना, यश वही है जो हम सही ढंग से जीते हैं, अध्यापक भी जीता है उस ढंग से या माता–पिता जीते हैं उस ढंग से जीने से, बड़े बुजुर्ग जीते हैं, उस ढंग से जीने से सही है।

जिज्ञासा : **बाबाजी जहां बड़े बुजुर्ग अपन कहे, अभी उस तरह से तो दिखाई नहीं देता, कैसे करेंगे।**

बाबाजी : समझदार बड़े बुजुर्ग, समझा हुआ बड़े बुजुर्ग में हमारा नाम है।

जिज्ञासा : **आपके अलावा और कोई example।**

बाबाजी : Exmaple, आप लोग।

जिज्ञासा : **बाबाजी निश्चय को बता दीजिए।**

बाबाजी : निश्चय तो यही है, जीना निश्चित, धरती निश्चित, हवा निश्चित, पानी निश्चित, जंगल निश्चित, किस आधार पर। कार्य के आधार पर, प्रयोजन के आधार पर, वैसे ही मानव, मानव का कार्य को बोध कराओ, प्रयोजन को बोध कराओ।

जिज्ञासा : **बाबाजी दया।**

बाबाजी : दया वह चीज है, हम जैसे जीते हैं, वैसा अपने संतान को बनाना, हम समझदारी सहित जीते हैं, समझदारी को बच्चों को बोध कराना यही दया है।

जिज्ञासा : **बाबाजी भला।**

बाबाजी : भला मतलब अच्छाई, अच्छा क्या चीज है? मानव चेतना में जीना अच्छा है, बुरा क्या चीज है? जीव चेतना में जीना बुरा है।

जिज्ञासा : **क्षमता।**

बाबाजी : क्षमता समझने को वहन करने की क्षमता, ग्रहण करने की पात्रता, अभिव्यक्त करने की क्रिया, योग्यता। इन दोनों को वहन करने की क्रिया का नाम है क्षमता, बनाये रखने की क्रिया का नाम है क्षमता।

जिज्ञासा : **उत्सव**

बाबाजी : उत्थान के लिए आश्वासन पाना, उत्थान क्या है? आज जितना अच्छा हम समाधान को प्रस्तुत किया कल इससे अच्छा प्रस्तुत करना।

जिज्ञासा : **ये form भी check करवाना है Satyam Abhibhavak Vidyalaya विद्यार्थी की विस्तृत जानकारी, परिवार के सभी सदस्यों के नाम, विद्यार्थी के साथ संबंध, आयु। हमको जानकारी हो इनके परिवार के कितने सदस्य हैं। विद्यार्थी के शरीर के बारे में, उसका वजन, लम्बाई, पहचान चिन्ह कुछ है शरीर पर, ... क्या है? शरीर के जो अंग हैं उसके स्वस्थता की जानकारी।**

बाबाजी : पांचों इन्द्रियों की जानकारी, ठीक से काम कर रहा है या नहीं।

जिज्ञासा : **फिर उसका दिनचर्या कैसे रहती है? सोने और जगने का समय, सुबह का नाश्ता, क्या पसंद करता है? क्या नापसंद करता है? दोपहर का भोजन, खेलकूद में क्या पसंद करता है? क्या नापसंद करता है? और अन्य आदते कुछ हैं जैसे व्यवहार संबंधी आदतें, जिद्दी है, आक्रामक है, सौमय है, गुमसुम है, बातूनी है, हंसमुख है आदि, बड़बोला है। बाबाजी उसका जो expression है माता–पिता के साथ कैसा है? परिवार के अन्य सदस्यों के साथ कैसा है? पारिवारिक समारोह में नये व्यक्ति जब आते हैं तब उसके साथ कैसा व्यवहार है?**

बाबाजी : ये महत्वपूर्ण बात है, बचपन में ठीक करने योग्य है।

जिज्ञासा : **रूचि एवं प्रतिभा जैसे लिखना, बोलना, पढ़ना, खेलना, चित्रकला, गायन, नृत्य अन्य कलात्मक रूचियां क्या–क्या है? अन्य विशेषताएं जैसे झगड़ा होने पर स्वयं को कितने देर में सामान्य कर पाना है। मनपसंद वस्तु मिलने या न मिलने पर व्यवहार कैसे रहता है, सहयोग करने की तत्परता स्वयं का ध्यान रख पाने की क्षमता, अपनी बातों की कितनी**

स्पष्टता के साथ रख पाता है और अतिरिक्त जानकारियां अभिभावक यदि देना चाहते हैं।

बाबाजी : बहुत बढ़िया।

जिज्ञासा : **Admission form है, English में है, date of birth है, class कौन सी? nursery, Kg1, kg2, class 1, photo, name, nick name, nationality, residencial address, पिताजी का नाम educational qualification, occupation क्या है, संस्था का नाम, telephone no., माता के बारे में, उनका education qualification, कुछ काम करने हैं तो**

बाबाजी : माता–पिता के माता–पिता का नाम वह जोड़ दें।

जिज्ञासा : **उनका सिर्फ नाम या उनका detail.**

बाबाजी : केवल नाम भर रहेगा, बनता होगा तो आयु।

जिज्ञासा : **मानव का रहने योग्य स्थान, जंगल, पहाड़, समुंदर, आपने कहा था इसको कौन तय करेगा?**

बाबाजी : रहने वाला तय करेगा।

जिज्ञासा : **किस विधि से।**

बाबाजी : उपयोगिता विधि से, पूरकता विधि से, समझदारी के बाद ये बात होगी कि कहां मानव ज्यादा उपयोगी है, ज्यादा पूरक है।

जिज्ञासा : **धरती पर वह स्थान ऐसे हैं जहां रेत ही रेत है वहां खूब गरमी पड़ती है और बहुत कम वर्षा होती है, इसे रेगिस्थान या मरूस्थल भी कहते हैं। वहां पेड़–पौधे कम होते हैं, पृथ्वी पर कई जगह ऊँचे–ऊँचे पहाड़ हैं, वहां पर कई महीने बर्फ पड़ती है, वहां खूब वर्षा होती ह, खुब पेड़ होते हैं। इसे हम जंगल कहते हैं। आपने बताया था कि धरती को ताप ज्यादा होती है आसपास के ताप से, वहां बारीश होती है तो यहां पर पहाड़ पर ज्यादा वर्षा हो रही है। पहाड़ पर जबकि ठंड होती है तो वहां धरती के तापमान, आसमान के तापमान से ज्यादा कैसे हुआ। मतलब जैसे रेगिस्थान है, उस जगह की धरती का तापमान और उस जगह की आसमान का तापमान में अगर कम ज्यादा है तो वहां बरसेगा और पहाड़ के धरती के तापमान और आसमान का तापमान से ज्यादा है तो वहां बरसेगा।**

बाबाजी : ये ऐसा ही है।

जिज्ञासा : अच्छा अलग अलग।

बाबाजी : बादल रहना जरूरी है ना, या बिना बादल के वर्षा होता है।

जिज्ञासा : माने, एक ही धरती पर अलग अलग तापमान है।

बाबाजी : जैसे आपके हाथ में अलग ताप, पेट में अलग ताप, पैर में अलग ताप।

जिज्ञासा : यहां भी अलग अलग ताप।

बाबाजी : होता है कि नहीं होता है।

जिज्ञासा : बर्फबारी कैसे होती है जो बरफ गिरता है।

बाबाजी : पानी का बुंद से तापमान यदि कम हो गया तो बरफ बन गया। आसमान का ताप कम हो जाए कहीं भी वहां बर्फ गिरता है।

जिज्ञासा : वह बादल है की दूसरी चीज है?

बाबाजी : बादल से पानी, पानी से बर्फ, पानी बर्फ बन जाता है, धरती में आते तक।

जिज्ञासा : आते आते तापमान इतना कम हो जाता है कि बर्फ बन जाता है।

बाबाजी : जब बरस रहा है तब तापमान तो नीचे का ज्यादा है, बाबाजी।

जिज्ञासा : बीच में बरफ बनता है पहले पानी का बूंद टपकता है।

जिज्ञासा : बाबाजी जैसे plastic का उपयोग ठीक नहीं है। बरसात से बचने के लिए हम जो पहनते हैं या जो चीजों में सीलन आता है, उसको बचाने के लिए ढकते हैं, उसकी क्या किया जाए।

बाबाजी : plastic स्वयं में गलत। सीलन से बचाने के लिए घास का चादर बनाते थे। घास को सूखा के चादर बनाते थे। निश्चित प्रकार प्रकार का घास होता है, उसको बुनने का तरीका होता है, जैसा बोरा को बना के ओढ़ते हैं वैसा बनता है। पक जाने से बीछा के सो जाते थे। उसको ज्यादा उपयोगी माना जाए या plastic को।

जिज्ञासा : रसोई घर में अनाज को सुरक्षित करने के लिए।

बाबाजी : नमी होना हमारा बेवकूफी का प्रतीक है, हमसे रख–रखाव बनता नहीं। बेवकूफी ही दरीद्रता है उसको सीखा जाए कि कैसे वस्तु को सम्हाला जाए। शीशे के बर्तन में रखना आवश्यक है। उसमें नीम का पत्ती सुखा हुआ मिलाकर, रखने से कोई कीड़ा नहीं खाता।

जिज्ञासा : नमी भी नहीं आता।

बाबाजी : नमीं का असर नहीं होता है, हवा से जो नमी का असर होता है वह नहीं होता है।

जिज्ञासा : वट वृक्ष का जड़ ऊपर की ओर क्यों निकलता है?

बाबाजी : इसीलिए निकलात है, उसमें खम्बा बनने के लिए उस पेड़ का support बनने के लिए, लम्बे शाखाएं होता है। उसका इसीलिए उसका support के लिए

जिज्ञासा : भाई बहन संबंध और मित्र संबंध एक ही है तो मूल्यों का निर्वाह एक जैसा है।

बाबाजी : मित्र–मित्र और भाई–भाई संबंध दोनों एक जैसा है। बहन–बहन संबंध और मित्र संबंध एक ही है। बहन की सहेली होती है।

जिज्ञासा : तो कहां पर बहन संबोधित किया जाए, कहां पर सहेली संबोधित किया जाए?

बाबाजी : सहेली वह है जो साथ में पढ़ते हैं, समझते हैं, सीखते हैं। बहन वह है जो एक पेट से पैदा होते हैं।

जिज्ञासा : अभी तो हम सभी बच्चों की बहन–बहन, भाई–भाई बुलवा रहे हैं।

बाबाजी : संबोधन यही रहेगा। लड़का मेरा मित्र कहेगा, लड़की मेरी सहेली कहेगी।

जिज्ञासा : पुरस्कार की आवश्यकता और आधार।

बाबाजी : पुरस्कार का आधार यह है जैसा जो सामान्य लोगों से नहीं होता, जैसा परिवार, परिवार में हर व्यक्ति नहीं किया, एक व्यक्ति ने कोई प्रेरणा स्रोत तैयार कर दिया।

जिज्ञासा : विद्यालय में कोई पुरस्कार की व्यवस्था।

बाबाजी : सभी इसी प्रकार है विवेक विधि हो, विज्ञान विधि हो, ज्ञान विधि हो, नया नया शोध को तैयार करने पर पुरस्कार।

जिज्ञासा : बच्चे कैसे नया शोध तैयार करेंगे।

बाबाजी : बच्चे पुरस्कार योग्य बनने तक शिक्षा है।

जिज्ञासा : अभी पुरस्कार की कोई आवश्यकता नहीं है, स्नातक होने तक।

बाबाजी : पुरस्कार स्नातक के बाद ही होगा। शोध के लिए अभी तो शुरूआत है, अभी अध्ययन भी नहीं हुआ। अध्ययन का पूर्वभूमि का शुरूआत है।

जिज्ञासा : **बच्चों में जो खाने की रूचि और अरूचि है तो क्या ये उनके शरीर की आवश्यकता के हिसाब से है, जैसे बच्चा बोलता है ये मुझे नहीं खाना और ये खाना है तो उसके लिए वैसा उपलब्ध कराया जाय।**

बाबाजी : हाँ, यही है व्यवस्था।

जिज्ञासा : **जैसे कोई बच्चे को सबसे अलग भात (चावल) चाहिए वहां जैसे रोटी पराठा बनता है तो उसके लिए भात उपलब्ध कराया जाए।**

बाबाजी : जरूरत होगा तो कराया जायेगा, सब के साथ खाना चाहता है, खाने दो।

जिज्ञासा : **बड़े लोग में कभी–कभी मीठा खाने का, कभी नमक ज्यादा खाने का, खट्टा खाने का .....।**

बाबाजी : ये शरीर की आवश्यकता है।

जिज्ञासा : **इसको रूचिमूलक ना बाला जाए।**

बाबाजी : रूचिमूलक, 4 विषयों के साथ है, आहार, निद्रा, भय, भय मुक्ति के लिए उपाय करना है।

जिज्ञासा : **ये तो आप बोल रहे हैं कि ये शरीर की आवश्यकता है। बच्चों को आहार का चिप्स खाना है तो क्या खाने दें।**

बाबाजी : घर में बनाकर खिलाओ, आप लोग नहीं बनाते हो, बच्चों की आवश्यकता है, उसी को ना खरीद के खिलाते हो।

जिज्ञासा : **रूचि मूलक आस्वादन क्या चीज है?**

बाबाजी : आहार में खाद, खट्टा–मीठा, सोने में हमको अच्छा लगना, नहीं अच्छा लगना।

जिज्ञासा : **ये जो इन्द्रिय में जुड़ा वाला भाग।**

बाबाजी : चमड़े से जुड़ा हुआ, जीभ से जुड़ा हुआ। स्वास्थ्य के लिए अनुकूल होना, मूल्य मूलक है।

जिज्ञासा : **जब स्वास्थ्य का ज्ञान होगा रूचि स्वास्थ्य को ढंग से बनेगा।**

बाबाजी : बच्चों के अनुकूलता के बारे में सोचेंगे, बच्चों की क्या होना चाहिए इसका मूल्यांकन, बच्चों के अनुसार करते हैं रूचिम्लक, बच्चों के लिए क्या होना चाहिए ये मूल्य मूलक हो गया, सब के लिए क्या चाहिए ये लक्ष्य मूलक हो गया।

जिज्ञासा : **मतलब जैसे बच्चे को चावल खाने की इच्छा है ये रूचि मूलक हो गया।**

बाबाजी : रूचि में बच्चों के स्वास्थ्य अनुकूल देते हैं ये मूल्य मूलक हो गया, सबके लिए अनुकूल हो वह लक्ष्य मूलक हो गया, उस हिसाब से पेड़–पौधे लगाने से लेकर समझदारी तक ये सब सार्थक बुद्धि बच्चों में ना सार्थक होगा।

जिज्ञासा : **बच्चों को खेल के साथ क्या व्यायाम को अलग से जरूरत होती है?**

बाबाजी : खेल स्वयम् में व्यायाम है।

जिज्ञासा : **जैसे बड़े लोग, अभी तो श्रम व्यवस्था में नहीं है, यदि श्रम करते हैं, उत्पादन गतिविधि में लगते हैं तब उनकी व्यायाम की जरूरत है? जैसे गाय का दूध दुहना, चारा काटना, इसमें शरीर के सभी अंगों का व्यायाम हो जाता है।**

बाबाजी : श्रम भी व्यायाम ही है, अलग से करने की आवश्यकता होने पर कर लेना।

जिज्ञासा : **जैसे शरीर रोगी हुआ तब आवश्यकता बनेगी।**

बाबाजी : शरीर में रोगी होने वाला बात शुरू होने से पहले व्यायाम करें।

जिज्ञासा : **व्यायाम करें कि श्रम को बढ़ाएं।**

बाबाजी : श्रम करते हुए व्यायाम की जरूरत है कि नहीं, व्यक्ति तय करेगा कि तुम तय करोगी?

जिज्ञासा : **अपने लिए कैसे तय करें?**

बाबाजी : स्वस्थ रहने के लिए तय करें।

जिज्ञासा : **मतलब श्रम करते हुए शरीर अस्वस्थ हो रहा है इसका मतलब हम ठीक से श्रम नहीं कर रहे हैं।**

बाबाजी : ठीक से जी नहीं रहे हो। .... अलग है, रोगी होना अलग है। हर व्यक्ति की आवश्यकता स्वस्थ रहने की। स्वस्थ रहना ही ध्रुवीकरण। सही जीने से स्वस्थ रहना होता है। हर व्यक्ति का अलग अलग आवश्यकता है, आवश्यकता के अनुसार जीना यही समझदारी है। शरीर की आवश्यकता को समझना, जीवन की आवश्यकता को समझना, इतना ही बात बनता है। मान की क्या आवश्यकता है उसको समझना। यही ना अध्ययन का मतलब है। इसको बच्चों को समझाना है। पहले संबोधन में शुरू किया जाए, संबंध का प्रयोजन बताना, प्रयोजन बताने के बाद प्रमाण को बता दिया।

जिज्ञासा : **मूल्यों का निर्वाह हो गया यही प्रमाण है।**

आपने एक बार बोला था कि बच्चों को नाचने वाले, गाने वाले इनका नाम बताइयेगा। इनका नाम क्यों बताना है?

बाबाजी : अभी कुछ नहीं ये कक्षा 1 के बाद।

जिज्ञासा : **ये कैसे बनाना है, अपने आप में बच्चे कुछ जानकारी लिए रहते हैं, उनको ठीक करने के अर्थ में बताना है।**

बाबाजी : देश में कौन गाने वाला, रायपु में कौन गाने वाला, रायपुर प्रान्त में कौन गाने वाला, भारत में कौन गाने वाला ऐसे गाने वाला, नाचने वाला, नेता।

जिज्ञासा : **पहाड़ और जंगल मानव के रहने योग्न स्थान है की समतल जैसे अभी तो पहाड़ों पर है मानव।**

बाबाजी : मानव के रहने योग्य सभी स्थल है, कहां रहना है वह तय करना है। मानव तो हर जगह में रह सकता है, रहा ही, जंगल में भी, पहाड़ में भी, मैदान में भी, हमको कहाँ रहना है वह तय करें। व्यक्ति तय करेगा कहां रहना है।

जिज्ञासा : **आपने जैसा बताया था बाबाजी कि धरती से शुरू करना है तो जैसे हम सबका ध्यान गया कि हम अगले हफ्ते से धरती से संबंधित बात करेंगे। हवा, पानी का हम सब बात कर रहे थे, तो कुछ बिंदु निकले वो और पूछना चाहते हैं।**

बाबाजी : हवा, पानी की जो बात है, वो आप समझने की बात है कि बच्चों को समझाने की!

जिज्ञासा : **हमको समझना, तो अभी तक जितने बिंदु निकले, उसमें धरती से संबंधित एक कविता आई। जो क्लास 1 में है, और कुछ points में है, जैसे आकार, धरती गोल है, धरती अखंड है, धरती पर क्या–क्या पाया जाता है, चारों अवस्थाओं का detail मतलब धरती पर सब साथ–साथ है, धरती एक प्राकृतिक रचना है, natural, पृथ्वी सौर परिवार का सदस्य है, पदार्थ अवस्था किसे कहते हैं? धरती पर समुद्र, पहाड़, नदी–नाले, झरने है, धरती पर कई प्रकार की मिट्टी पाई जाती है–काली मिट्टी, लाल मिट्टी, पीली मिट्टी, सफेद मिट्टी, पत्थर के प्रकार, नदी, तालाब का पानी मीठा होता है, समुद्र का पानी खारा होता है।**

बाबाजी : बढ़िया, बहुत बढ़िया।

जिज्ञासा : **तो इसमें कुछ और जिज्ञासाएं हैं। उनको भी लिखे हैं।**

बाबाजी : समुद्र का पानी कैसे खारा होता है? वो बताना है, वो मुख्य बात है। बूढ़ी माई चक्की पीसती रहती है ऐसा पहले कहते रहे। अभी क्या कहते हैं, हम नहीं जानते।

जिज्ञासा : अभी तो बाबाजी, हम science में भी जीरो हैं और पुराना भी बहुत नहीं पता है। आप ही से सुनना चाहते हैं, सही क्या है?

बाबाजी : धरती पर पानी गिरता है, पानी के साथ क्षार समुद्र में जाता है, धरती से वाष्प होकर बादल बनता है, पुनः धरती पर पानी बरसता है। इस ढंग से क्षार समुद्र में रह जाता है। इस ढंग से क्षार बढ़ता है। ठीक है, ठीक हो गया, पूरा हो गया।

जिज्ञासा : इसी पे हम लोग जो अभी करके आए वो पहले बता देते हैं। तो हम लोग ये सोच रहे थे कि अभी 15 अगस्त आने वाला है। रक्षाबंधन आने वाला है, त्यौहार में क्या करायेंगे? तो हम अपने ढंग से उत्सव कैसे मनायेंगे? तो उनकी तैयारी चल रही थी कि भाई–बहन संबोधन पर अच्छे से चर्चा करेंगे।

बाबाजी : वही मुख्य बाता है, संबोधन से शुरू करना, निर्वाह तक ले जाना। पांचवी कक्षा तक, ठीक है। निर्वाह करने तक ले जाना। ठीक है। मुख्य बात ये, संबोधन और निर्वाह। भाई के साथ कैसा निर्वाह करेंगे, बहन के साथ कैसा निर्वाह करेंगे, पढ़ाने वाले के साथ, गुरुजनों के साथ कैसा निर्वाह करेंगे? यही न तीन रिश्ता वहां प्रधान है, तीनों बातों में अच्छी तरह बोध होना चाहिए। इसी का उत्सव। और काय के लिये उत्सव। ठीक है।

जिज्ञासा : 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस है, परंपरागत ढंग से इसको बताना नहीं है तो हम इसे कैसे मनायेंगे?

बाबाजी : अपने ढंग से मनाना। अपना ढंग से वो ही, प्रार्थना से शुरू करना। और उसको जो, अभिनय की थी, क्या नाम, पूनम अध्यापिका, जी बाबा, पूनम को लगाना।

जिज्ञासा : बाबा, वही लगाकर आ गए। वही तैयारी चल रही है।

बाबाजी : वंदना गीत को नाचने को सिखाना। वही उसको बताया। वो कहते हैं कि हम पूरा समझने के बाद सिखावें। ऐसा वो कहती है।

जिज्ञासा : हम बोलते हैं साथ–साथ कर लो।

बाबाजी : जितना समझते हैं, उस बात को पहले सिखाओ। उसके बाद बाकी सिखाओ।

जिज्ञासा : **हां, मन बन गया उनका। तो बाबा, उस दिन वो नृत्य की तैयारी करेंगी।**

बाबाजी : उनका उपयोग भरकम करो। भरकम, बहुत ज्यादा। अभी यही आयु है। इसी आयु में पूनम का काम है।

जिज्ञासा : **अभी जरूरत है बाबाजी।**

बाबाजी : वे सब अभिनय काम के लिये, पहले स्वास्थ्य ठीक होने के लिये, समझ ठीक होने के लिए। दोनों के लिये। अभिनय स्वास्थ्य के लिये। साहित्य जो है, समझ ठीक होने के लिये। ठीक है।

जिज्ञासा : **तो हम लोग ऐ सारी सोचें है बाबाजी की ये कविता, धरती की कविता बच्चे गायेंगे, हम भी गाएंगे और वो गाने पे नृत्य करेंगे।**

बाबाजी : वही बनता है, अभिनय करेंगे बच्चे। ठीक है। यही कराया जाय। यही अपना उत्सव का मतलब है।

जिज्ञासा : **और सबको बुलायेंगे अच्छे से।**

बाबाजी : बढ़िया, बढ़िया। बहुत बढ़िया है न। ऐसा तो ठीक है न।

जिज्ञासा : **यही बात करके आए।**

बाबाजी : इसमें कोई तकलीफ हो तो बतानाा।

जिज्ञासा : **नहीं बाबा, सब मिलकर ही तय करके आये।**

बाबाजी : बुद्धि लगाने के लिये बैठी है, ये बैठी है, ये बैठी है। सब तो बुद्धि लगाने के लिये बैठे हैं। ठीक है न। बुद्धि लगाओ सीताराम।

जिज्ञासा : **अनुभव के प्रकाश में होगा।**

बाबाजी : बहुत बढ़िया। हो गया है ये।

जिज्ञासा : **अब जो जिज्ञासाएं आयी, उनको रखूं। जैसे पत्थर के प्रकार आपने बताएं कि कठोर, अकठोर, तो दो ही भाग है बस।**

बाबाजी : दो ही भाग है, प्रयोजन के रूप में। देखने के रूप में अनेक है। अभी जैसे पत्थर दिखा, इसका रूप, रंग अलग है। अमरकंटक में जो पत्थर मिलता है, वो रूप रंग अलग है और हिंगना में जो अभी पत्थर आया है, उसका रूप–रंग अलग है। ऐसा। पत्थरों में कम से कम पचासों प्रकार के रूप, रंग वाले हैं।

जिज्ञासा : **कठोर, अकठोर में, जैसे मार्बल को सॉफ्ट स्टोन बोलते है, तो और वो building material में use हो रहा है, कठोर और अकठोर को और समझना चाह रहे हैं।**

बाबाजी : कठोर वो ही, भार को वहन करना। भार को वहन नहीं कर पाना अकठोर। मृदुके बारे में मैं लिखा है, मृदु तो रूई को कहा है।

जिज्ञासा : **कठोर, अकठोर में इस थोड़े से जो ग्रेनाईट, मार्बल है, स्टोन्स बताएँ तो कौन सा कठोर की category में, कौन सा अकठोर की category में, बच्चों को जा बताना है, तो अभी के जो पत्थर हैं, ग्रेनाइट हैं, मार्बल हैं, इस तरह के पत्थरों को कठोर, अकठोर से बताएं कि नाम से।**

बाबाजी : नाम से बताएं। सफेद पत्थर, काला पत्थर, भूरा पत्थर। ये तीन तो बता ही सकते हैं।

जिज्ञासा : **कठोर, अकठोर अभी नहीं?**

बाबाजी : अभी नहीं। पाँचवी कक्षा में कठोर–अकठोर।

जिज्ञासा : **तो अभी केवल वो उसका colour पहचाने और नाम। सफेद वाला पत्थर मार्बल है, काला वाला पत्थर ग्रेनाइट।**

बाबाजी : क्योंकि उसमें दबाव का ज्ञान होना पड़ता है। उनके बिना कठोर का ज्ञान ही नहीं होता। दबाव का ज्ञान होने के लिये पांचवी कक्षा ठीक है। और आगे.....

जिज्ञासा : **और वो ही प्रश्न है, धरती पर हम है तो गिरते क्यों नहीं हैं? तो आपने एक बार बताया था कि जैसे गेंद पर एक चींटी है वो घूमती है तो गिरती नहीं है। पकड़ी हुई है ताकत से।**

बाबाजी : ठीक है न। धरती पर अपन पकड़े हैं।

जिज्ञासा : **तो इसको थोड़ा सा और बता दीजिये।**

बाबाजी : उसको लिखा है। भौतिक–रासायनिक क्रियाएं जितने भी है, उसमें ये जो बना रहता है। उस आधार पर धरती से चिपके रहते हैं। ऊर्जा संपन्नतावश चुंबकीयता है। चुंबकीय बल के आधार पर धरती के साथ चिपके रहते हैं। चींटी के बराबर हो जाते हैं जबकि चींटी से बहुत बड़ा दिखते हैं ऐसा।

जिज्ञासा : **आपने बताया, चैतन्य परमाणु में भी चुंबकीय बल बना रहता है उसे फलस्वरूप वो कैसा काम करता है?**

बाबाजी : वही, बता तो दिया। शरीर के साथ चिपकता है। शरीर जो है धरती के साथ चिपकता है। ये तो बहुत आसान गेम है।

जिज्ञासा : **धरती बिल्कुल गोल है बाबाजी, ऐसा बनाना ठीक है।**

बाबाजी : गोल नहीं है। गोल नहीं होता है, थोड़ा सा oval होता है।

जिज्ञासा : **तो हम बच्चों को गोल बताएं कि oval?**

बाबाजी : गोल ज्यादा, लंबाई कम। ऐसा बताना। धरती एक तरफ गोल, एक तरफ थोड़ा सा लंबा। वो किस आधार पर होता है, घूमने के आधार पर। घूमने के आधार पर गोल ही होता है। ...., एक तरफ गोल, एक तरफ लंबा।

जिज्ञासा : **तो बाबाजी ये जो बाजार में धरती के ग्लोब दिखाते हैं.....**

बाबाजी : वो पर्याप्त नहीं है। ग्लोब जो दिखाते हैं, इस आकार में दिखता है। किन्तु रहता कैसा है? एक तरफ गोल, एक तरफ लंबा। यही ध्रुव प्रदेश है, थोड़े से उभरे रहते हैं।

जिज्ञासा : **अंडाकार? (चित्र पर चर्चा)**

ऐसे घूमता नहीं है, ऐसे घूमता है???

अभी अपने वैदिक विचार के अनुसार धरती चपटा है। वैदिक विचार के अुनसार धरती चटाई। ऐसा वो सोचें। जबकि ऐसा नहीं है। गणितज्ञों ने उसको रोका, ऐसा दिखाएं। ये भी दोनों बात हुआ।

ये pole है, equator है। (चित्र पर चर्चा)

भाई जी बोल रहे हैं, science में एकदम opposite पढ़ा है। बिल्कुल उल्टा पढ़ा रहे हैं।

बाबाजी : नहीं पढ़ाया जा रहा है, नहीं। विज्ञान में ठीक पढ़ाया जा रहा है।

जिज्ञासा : **ये जो ध्रुव है, चपटे हैं geoides बोलते है। उसको, equator में bludge है, ऊपर से चपटी है, ऐसा पढ़ाया जा रहा है। आप बता रहे हैं, poles को चपटा बताया गया है।**

बाबाजी : चपटा नहीं, विज्ञान में ऐसा नहीं बता रहे हैं। विज्ञान में गोल ही बताते हैं। वो जो कहते हैं, उसको वैसा ही बताया जाय। विज्ञान ने धरती के बारे में ठीक समझा। आकार के बारे में, बनावट के बारे में नहीं। आकार के बारे में ठीक समझा।

जिज्ञासा : **तो वो ग्लोब नहीं दिखाएं बच्चों को?**

बाबाजी : ग्लोब दिखाया जाय। वो ऐसा नहीं रहता है धरती, थोड़ा सा लंबा रहता है ये बताया जाय।

जिज्ञासा : **चित्र बनाकर बताया जाय, साथ में ग्लोब दिखाया जाय।**

और इसी बात से जुड़ी हुई बात है कि पृथ्वी इसका नाम कैसे हुआ?

बाबाजी : पृथ्वी, तो पृथ्वी को अचल माना, वैदिक विचार के अनुसार। अचल–चलने वाला नहीं, जबकि धरती चलता ही रहता है। बात ये है कि गणितज्ञ आकार के उसको तय किये। है ना। तो पृथ्वी को अचल माना – सर्वप्रथम। उसको जो है न चारों तरफ सात पकड़े रहते हैं और बीच में एक शेषनाग रहता है ऐसा सब कहते हैं, तो शुरूवात वहां से है। ऐसी कोई बात नहीं है, उसको कोई पकड़ा नहीं है, कुछ नहीं है, शून्याकर्षण में घूमता रहता है। सभी पृथ्वी।

जिज्ञासा : **इसको पृथ्वी नाम क्यों दिये?**

बाबाजी : वही अचल होने के आधार पर।

जिज्ञासा : **तो पृथ्वी नाम न बोलें? धरती ही बोलें? तो चेतना विकास मूल्य शिक्षा पुस्तक में पृथ्वी का नाम आया है। पृथ्वी और सौर परिवार का सदस्य है, ऐसा लिखा है। तो पृथ्वी बोले कि नहीं?**

बाबाजी : ठीक है बोलें, कोई आपत्ति नहीं। कोई तकलीफ नहीं। पृथ्वी भी बोल सकते हैं, धरती भी बोल सकते हैं।

जिज्ञासा : **ये गोल है, उसे बदलकर क्या लिख सकते हैं जैसे oval, English शब्द है तो हिन्दी में उसे क्या बोलेंगे?**

बाबाजी : वर्तुलकार बोलेंगे।

जिज्ञासा : **वर्तुलकार है ये धरती। shape बताएंगे तो समझेंगे। बाबाजी water melon (तरबूज) भी वैसा ही दिखता है न?**

बाबाजी : तरबूज भी अंडाकार होता है, बस–बस। अंडाकार। सर्वाधिक फल जो है न ऐसे ही होते हैं, थोड़ा सा लंबाई लेकर गोल होते हैं। आम का फल, संतरा, पपीता, नीम का फल, नारियल वैसा ही है।

जिज्ञासा : **इसके पीछे क्या है, सभी फल इसी shape में है।**

बाबाजी : सब जो है न, धरती के प्रतीक रूप में बनते हैं। मानव शरीर भी लंबाई को लेकर ऐसा ही है। चींटी भी वैसी, हाथी भी वैसा ही। क्या करोगे? क्या किया जाय?

जिज्ञासा : **कितनी अच्छी–अच्छी बाते निकली हैं। धरती के बारे में अभी इतना ही पूछना था। वायु के बारे में पूछना था।**

बाबाजी : वही, वायु के बारे में, पांच वायु के रूप में पहचाना जाता है।

जिज्ञासा : **जो हम ले रहे हैं तो प्राण वायु कहलाती है, और जो पौधे से ले रहे हैं, वो कौन सी वायु कहलाती है?**

बाबाजी : अपान वायु। सारे पौधे जो हैं अपान वायु ग्रहण करते हैं, प्राण वायु को छोड़ देते हैं। प्राण वायु बनाकर छोड़ते हैं।

जिज्ञासा : **मतलब वातावरण में प्राण वायु ही है, अपान वायु बन रही है किसी प्रक्रिया, आवर्तनशीलता से। तो पेड़–पौधे जिस हवा को लेते हैं उसे अपान वायु बोलते हैं। मानव जिस हवा को लेता है, उसे प्राण वायु नाम और इनकी आवर्तनशीलता है।**

बाबाजी : मानव प्राण वायु लेता है, प्राण वायु को पचाता है और अपान वायु को वापस कर देता है।

जिज्ञासा : **जिसे विज्ञान में oxygen बोल रहे हैं, क्या ये वहीं चीज है?**

बाबाजी : हां, प्राण वायु। अंतर कुछ नहीं।

जिज्ञासा : **पर रात में। रात में ये जो पेड़–पौधे o_2 को छोड़ने लगते हैं, ये क्यों छोड़ने लगते हैं?**

बाबाजी : स्वाभाविक सी बात है। सांस लेना–सांस छोड़ना। प्राण कोषा से ही प्राणावस्था की रचना है।

जिज्ञासा : **बाबाजी रात में ये उल्टा हो जाता है न पेड़ों के साथ।**

बाबाजी : समझते नहीं है। प्राणकोषा के लिये अपन भी सांस लेते हैं। प्राण कोषा के लिये प्राण वायु

जिज्ञासा : **रात में पलट क्यों जाता है।**

बाबाजी : रात में ही गैस छोड़ते हैं ज्यादा। ज्यादा दिन में हवा को, उजाला पचाने वाले बात रहता है। रात में उजाला पचाने वाले बाते नहीं रहता है। इसलिए ज्यादा छोड़ पाते हैं। सभी समय में छोड़ते हैं किंतु रात में ज्यादा छोड़ते हैं। रात में उजाले को पचाने वाला काम कम हो जाता है। इसलिये उसको छोड़ता हुआ दिखता है। पेड़–पौधे ही प्राण वायु को निर्माण करते हैं, मानव कितना पेड़–पौधों के प्रति जागृत है, आप ही सोच ले। बचपन से आपको ये पढ़ाना है।

जिज्ञासा : एक थोड़ा confusion हो गया है, एक तो ये प्रचलित विज्ञान में जो बताते हैं, पौधा दिन में O_2 छोड़ता है, रात में CO_2 छोड़ता है।

बाबाजी : सतत् ऑक्सीजन को बनाकर छोड़ते हैं। अपान वायु को पचाते हैं दिन और रात में भी। रात्रि को ज्यादा प्राणवायु छोड़ते हैं क्योंकि रात्रि उजाल पचाने वालला काम कम होता है।

जिज्ञासा : तो इसका मतलब ये हुआ बाबाजी कि रात में हम पेड़ के नीचे सो सकते हैं?

बाबाजी : हां सोते ही हैं। सोकर के ही अपन इधर में आए हैं।

जिज्ञासा : अभी डरा दिये हैं कि पेड़ के नीचे नहीं सोना रात में।

बाबाजी : आज भी अधिक लोग पेड़ के नीचे सोते हैं। ये ज्यादा बुद्धिमानों का काम है।

जिज्ञासा : बाबा, पीपल, रात को सबसे ज्यादा CO_2 छोड़ता है ऐसा वैज्ञानिकों का कहना है, किताबों में लिखा है।

बाबाजी : तो वैसा नहीं है। हरदम जो है, CO_2 पचाता है, O_2 को छोड़ता है। दिन में थोड़ा सा कम, रात्रि ज्यादा। उसका आधार इतना ही है। रात्रि में प्रकाश को पचाने का काम नहीं रहता है। उतने भाग में ज्यादा छोड़ता है।

जिज्ञासा : ये कई तरह के प्रयोग किये हैं, इसमें पीपल के पेड़ को सबसे घातक माना गया है, बाबा। नीम के पड़ को सबसे उत्तम माना गया रात में सोने के लिये।

बाबाजी : ठीक है भाई, जिसको ज्यादा काटना है, उसको घातक बताते रहो। झाड़ को जिसको निर्मल करना है, उसको घातक बता दो। बच्चों को जितना बुद्धि भरा करना है, उसी को करने की जगह मास्टर लोग है। बच्चों को अपराधी बनाने का काम मास्टर लोग किये कि दूसरा कोई किया। इसको अपन किये थे वहां रायपुर में, महिलाओं के बीच में। आप थे कि नहीं, अनिता के घर में। सुविधाओं को नियंत्रित करने की बात। हम पूछे थे नारियों से बीस लोग थे। सभी नारियां पैसे के घमंड से परिपूर्ण। ऐसे लोगों से पूछा। ऐसे ही न थे? अधिकांश ऐसे ही।

जिज्ञासा : जी बाबा। अभी जैसे बताते हैं इस वायुमंडल में नाइट्रोजन सबसे अधिक है, तो वो मानव का किया हुआ है कि....

बाबाजी : मानव जो है न अपराध करता है, किसके साथ? वनस्पतियों के साथ। इसके बदले में ऑक्सीजन कम होता है। नाइट्रोजन बढ़ जाता है।

जिज्ञासा : ऐसे बताते हैं कि हवा में नाइट्रोजन 79 प्रतिशत होता है। उल्टा ही पढ़ रहे हैं।

बाबाजी : वो सब हो गया न भाई। वो सब अपना ही है। अपने को जितना अपराध करना है, उसे सही मानते हैं तभी न सभी पवृत्त हुए। इतना देर काम के लिए? सभी लोग क्यों प्रवृत्त हुए क्योंकि विज्ञानी लोग ये माना है कि इस अपराध को करना ही है।

अभी क्या कर रहे हैं, मनुष्य का अध्ययन हो ही नहीं सकता।

जिज्ञासा : अगर मानव अपराध नहीं करेगा तो वायुमंडल में सिर्फ O_2 होगा?

बाबाजी : मनुष्य का अध्ययन नहीं तो पत्थर का अध्ययन करके जिओगे?

जिज्ञासा : विज्ञानी तो बोल रहे हैं कि नाइट्रोजन नहीं होता तो सब जगह आग लग जाती।

बाबाजी : अभी समझदारी बढ़ी है। कई बच्चे अपराध मुक्त तरीके से जीना चाहते हैं।

जिज्ञासा : बाबा अगर पृथ्वी के सारे मानव निरपराध हो जाए और सब देव चेतना में जीने लगे तो क्या हवा के अंदर सिर्फ ऑक्सीजन रहेगा?

बाबाजी : वो तो प्रयोग करके देखने की बात है भाई। यदि मानव भ्रममुक्त होता है, धरती अपने में कितना सुधार करता है देखा जा सकता है ऐसा लिखा है। और क्या लिखना है? इससे ज्यादा क्या लिखा जाए। धरती को सुधारने का माद्दा मानव के पास नहीं है। बिगाड़ने का है। वो कैसा। जैसा कुम्हार घड़ा बनाता है, फोड़ने के लिए एक मिनट, बनाने के लिए। बना हुआ को बिगाड़ने के लिए हजारों वर्ष लगाए हैं। बिगाड़ने का काम है। कबसे धरती पर जंगल को काटा है, उसका कोई हिसाब है।

जिज्ञासा : मानव के आने से पहले केवल oxygen था?

बाबाजी : था कि नहीं ऐसा नहीं कह सकते?

जिज्ञासा : मानव के आने के बाद ही nitrogen introduce हुआ ऐसा है क्या?

जंगल काटे उससे CO_2 बढ़ने का समझ में आता है, nitrogen कैसे बढ़ा? ये रासायनिक प्रक्रिया कैसे हुई ये समझने की चीज है। बाबा, मानव ने अपराध किया, जंगल काटा, उससे nitrogen की मात्रा कैसे बढ़ गई? CO_2 बढ़ना चाहिए।

बाबाजी : CO_2 भी बढ़ा है, nitrogen भी बढ़ा है।

जिज्ञासा : nitrogen कहां से आया?

बाबाजी : एक जलने वाला, एक जलाने वाला दोनों मिलकर के पानी

जिज्ञासा : **नहीं लेकिन nitrogen पानी थोड़ा ही बनाता है बाबा?**

बाबाजी : nitrogen पानी में होता है कि नहीं?

जिज्ञासा : **नहीं होता बाबा। H और ऑक्सीजन होता है।**

हवा के अंदर 70 प्रतिशत नाइट्रोजन बताया गया है।

बाबाजी : हां ठीक है। nitrogen बना रहता है, वही हाइड्रोजन बनता है।

जिज्ञासा : **nitrogen ही hydrogen बनता है?**

बाबाजी : कैसा बनता है? वो जो ओजोन था न, ओजोन की सहायता से बनता है। ओजोन को बरबाद कर दिये।

जिज्ञासा : **मतलब ओजोन की सहायता से nitrogen, hydrogen में** convert **होता है।**

बाबाजी : Convert होकर वो oxygen में convert होता है। hydrogen फिर O_2 बनता है। दोनों मिलकर पानी बनता है। मानी बनने के बाद फिर प्राण वायु तैयार होता है। oxygen कैसा? पेड़–पौधों से। पेड़–पौधे oxygen को अलग करके देते हैं। पेड़–पौधे पानो को लेते हैं कि नहीं? O_2 को अलग करके देते हैं। ऐसा जुगाड़ है। साथ में मानव और जीव जितने भी अपान वायु छोड़ते हैं वो सबको खाकर हजम करते हैं। सारे पेड़–पौधों का एक ही काम है। धुन लगा है। ज्यादा से ज्यादा पीपल के झाड़ में ऑक्सीजन बनता है। उसी का नाश करने के लिये पढ़ाते हैं। पीपल के नीचे तो आधा से अधिक लोग जिये हैं। वट, पीपल के झाड़ के नीचे ज्यादा से ज्यादा लोग जिये हैं।

जिज्ञासा : **पीपल का वृक्ष कितने distance में लगना चाहिए। root बहुत लंबी जाती है।**

बाबाजी : ठीक है न, रहने से क्या तकलीफ जाती है? रोड में जैसा लगाए है, बकरी वाले सबको मालमाल कर दिये। रस्ते में कहां है पीपल का झाड़? ये विज्ञान है। नाश करो, शेखी जमाओ। एक पैसे का काम न किया हो, शेखी जमाओ। यही है विज्ञान।

जिज्ञासा : **तो 15 अगस्त को हम लोग पीपल के झाड़ लगायेंगे बाबाजी।**

बाबाजी : ठोक है न। एक, दो झाड़ लगाओ। गेट के बाहर दोनों तरफ लगाया, उसको protection कर दिया। बकरी न खाए। रोड के किनारे।

जिज्ञासा : **कितने सालों से सुना है? पीपल का झाड़ काटो, वास्तुशास्त्र बताता है, यह अशुभ होता है। वास्तुदोष होता है।**

बाबाजी : उनका एक ही काम है। सब पागलपन की पराकाष्ठा में आदमी जात है। घर के पास लगाने से दीवाल के अंदर जड़ घुसता है। उसके लिए दूर लगाओ। रोड के किनारे लगाकर सुरक्षित कर दिया। जाली आता है उसको लगा ले। सब जगह में लगाने योग्य है। ये सब शुरू करने से सबको अनुकरण योग्य हो जाता है। पहले पैसा देकर रोड किनारे झाड़ लगाते रहे। अब को छोड़ दिया। अब रोड के किनारे स्वाभाविक उगने वाले झाड़ लगाते हैं। ये बड़े पत्तेवाले वृक्ष ऑक्सीजन को बहुत ज्यादा बनाते हैं, बड़े पत्ते वाले।

जिज्ञासा : **इसीलिए पहाड़ों में बड़े पत्ते वाले वृक्ष होते हैं। बड़े पत्ते वाले बारीश को ज्यादा खींचते हैं, ऐसा science बताता है। ये जो बड़े पत्तेवाले पेड़ों की जगह में ज्यादा बारीश होती है।**

बाबाजी : बारीश स्वाभाविक होती है। पत्ते रहते हैं तो हवा से हिलते हैं। हवा का दबाव एक तरफ बढ़ता है। एक तरफ हवा ग्रहण करने की capacity बढ़ता है। जितना ज्यादा लेते हैं, उतना ज्यादा पचाते हैं। जितना हवा में impurities है उसको पचाते हैं।

जिज्ञासा : **तो बारीश वहाँ ज्यादा क्यों होती है?**

बाबाजी : हवा ज्यादा होती है इसलिये बारीश ज्यादा होती है। हवा के आधार पर तो बादल चलता है।

जिज्ञासा : **पर बरसता कैसे है?**

बाबाजी : जहाँ ज्यादा इकट्ठा होता है, वहाँ बरसता है।

जिज्ञासा : **हवा से घनीभूत होता होगा?**

बाबाजी : हाँ, घनीभूत होता है, फलस्वरूप ज्यादा बरसता है।

जिज्ञासा : **Geography भी फेल हो गयी।**

बाबाजी : यही बच्चों को बताना। पढ़ाने की विधि यही है। यहाँ तक ठीक हुआ।

जिज्ञासा : **वायु से जुड़ी हुई बात है, परत जो है, किस आधार पर बनती है?**

बाबाजी : वाष्प ऊपर जाता है। वो भारी होकर थोड़ा सा नीचे आता है। जमकर भारी होता है। भारी होकर के थोड़ा–थोड़ा नीचे आता है। नीचे आकर बरस लेता है, क्या तकलीफ ह? किसी एक stage में धरती और बादल निश्चित दूरी में वर्षा होती है।

जिज्ञासा : जैसे ये प्राणवायु की परत है, फिर कौन सी परत है?

बाबाजी : उसी के ऊपर दूसरी परत। भारी और हल्के के हिसाब से ये परतें बनी। भारी वाला नीचे, हल्के वाले ऊपर।

जिज्ञासा : सारा प्राण वायु ही है?

मानव के रहने योग्य स्थान में प्राणवायु अच्छी है। नीचे कम, ऊपर भी कम।

बाबाजी : नीचे गड्ढे में गिरने से भी नहीं होगा। ऊपर उड़ने से भी नहीं होगा। ऊपर नाक में पहनकर जाते हैं।

जिज्ञासा : Space में जाने की कोई जरूरत नहीं है।

बाबाजी : जरूरत कहाँ बनता है, यदि बुद्धि ठीक हो ता। जाके क्या करेंगे? सिवाय कुकर्मों के अलावा, क्या करेंगे? आप बताओ क्या सत्कर्म करेंगे बताओ। क्या किया अभी तक? पचास हो गये। जितने भी कुकर्म करना है, आकाश में करते हैं। इसको क्या किया जाए? इस प्रकार का उन्माद चढ़ा है, आदमी को अभी aeroplance में शादी करेंगे, खड़े होकर नहीं। पढ़े हो न।

जिज्ञासा : आजकल plane में रामायण की कथा भी करने लगे।

बाबाजी : राम भी कल्याण प्राप्त कर लें।

जिज्ञासा : इसका मतलब ये हुआ, इस धरती से दूसरी धरती पर हमें जीने की कोई आवश्यकता नही है। हम इसी धरती पर ठीक से रह लें।

बाबाजी : पहले यहाँ ठीक से रहना सीखें। फिर दूसरी धरती पर जाकर वहां के लोगों को ठीक कर लें। शरीर यही रहता है। इसको 11–12वीं में पढ़ायेंगे। कोई जल्दी थोड़ी ही है।

जिज्ञासा : जिस तरीके से आप चल रहे हैं उसमें तो शिक्षा बहुत जल्दी खत्म होगी।

बाबाजी : खत्म होने के लिये तो कर ही रहे हैं। 15 वर्ष की जगह में 10 वर्ष में खत्म हो जायेगी। समझदारी 10 वर्ष से ज्यादा जरूरत नहीं।

जिज्ञासा : पाँचवीं तक सारा सूचना चल जाता है, फिर जीने वाला भाग धीरे–धीरे बढ़ने लगता है।

बाबाजी : छठवीं कक्षा से ही बढ़ता है, वैसा ही है। अभी ..... करेंगे, ... करके तैयार करेंगे। जितना जल्दी आदमी उपयोगी होगा, उतना उपकार।

जिज्ञासा : बाबा विद्‌यालय खुलने से ज्यादा अध्ययन हो रहा है। बच्चों के नाम से विद्‌यालय खुल रहे हैं। पढ़ाई तो हमारी हो रही है। ये सब तो हमको ही मालूम नहीं था।

बाबाजी : आपने कहा, चेतना विकास मूल्य शिक्षा की पढ़ाई। पहले कक्षा की किताब के ऊपर लिखा है। अब तो जरूरत आ गयी। मुख्य बात यही। इसमें यही कल्याण की बात है। अपने को समझने की जरूरत पड़ी। नहीं तो अपन उपेक्षा कर रखे थे। बाबाजी अपने–अपने पागल थे। अपना काम अपन करें। वहाँ से कहाँ पहुँचे, हमारी जरूरत।

जिज्ञासा : पहुँचे, पहुँचे।

हमने बहुत देरी लगा दी न, बाबाजी।

बाबाजी : कोई आपत्ति नहीं, बढ़िया काम किए। तुम्हारा (आप लोगों का) होमवर्क ठीक है।

जिज्ञासा : जैसे ये घर्षण से बिजली बनता है, तो वो जब धरती पर गिरता है, वो क्यों गिरता है और कैसे?

बाबाजी : अभी आकर्षण सबमें है, बता तो दिया भाई। पानी में भी वही आकर्षण है, मनुष्य में भी वही आकर्षण है। इसलिए धरती के साथ चिपका रहता है। उसी आधार पर गिरता है।

जिज्ञासा : तो कुछ जगह विशेष में गिरता है कि कहीं भी गिरता है?

बाबाजी : कहीं भी गिर सकता है।

जिज्ञासा : उसके लिए सावधानी क्या हो सकती है?

बाबाजी : सावधानी यही कि घर के ऊपर एक लोहे का टुकड़ा लगा दिये, उसको ले जाकर धती में गाड़ दिये। earthing। अमरकंटक में अपने घर के साथ भो लगा है।

जिज्ञासा : पेड़ के नीचे उस समय खड़ा होना है?

बाबाजी : कहीं भी गिर सकता है बिजली। सब हो गया न, गाय चराते रहें, बिजली गिरा। रास्ता चलते रहे बिजली गिरा, झाड़ के नीचे खड़े रहे बिजली गिरा, झोपड़ी के अंदर रहे, बिजली गिरा।

जिज्ञासा : ये बाबाजी अभी कुछ ज्यादा होने लगा है?

बाबाजी : ऐसा कुछ नहीं

जिज्ञासा : बाबाजी कल चिन्ह के बारे में बात हुई थी?

बाबाजी : चिन्ह कुछ भी लगा लो, लगाकर के आगे शब्द क्या दिया ये मुख्य बात है। बराबर कुछ होना नहीं। इसीलिए संयुक्त बताया। साथ साथ बता सकते हैं। संयुक्त रूप से दोनो है। जैसे 10 आदमी बैठे है, एक आदमी चल दिया वहां से, आदमी चला गया नहीं, आदमी रहता है, उस स्थान से नहीं। ये भाव आना चाहिए था वस्तु गायब हो गया ऐसा होता है... ये जो +, – में वही होता है। गायब होने वाला, जोड़ने वाला, एक से एक घटा दिया माने गायब हो गया बराबर भी (=) एक चिन्ह है इसी को वहां साथ–साथ

जिज्ञासा : ये बाबा भाग (÷) भगाकर

बाबाजी : कोई एक राशि है जैसे धान है, उसको तराजू में तौल दिए तो 1, 2, 3, 4 तौल आता है। नाप होना है उसमें से 10 तौल दिया। 10 तौल में से 1 तौल निकाल दिया, कितना बचा? 9 तौल साथ में रहा 1 तौल का स्थानांतरण हुआ।

जिज्ञासा : जैसा है वैसा ही बोला जाए।

बाबाजी : वेसे ही .... है। भाषा और शब्द, भाषा सटीक, सटीक अर्थ, हम संयुक्त रूप में कहा, एक साथ कहा। एक दूसरे के साथ मिलकर राशि, ऐसा कहा है। ये भाषा है, य कर्नाटक में अलग है, तेलगु में बोलना अलग है, संस्कृत में बोलना अलग है।

जिज्ञासा : बाबाजी ये चिन्ह (><) अधिक और कम को बताने के लिए जैसे ये ज्यादा है, ये कम है तो इसको ऐसे चिन्ह में बताते हैं।

बाबाजी : चिन्ह से नहीं होता, संख्या से होता है, संख्या का मतलब क्या है? ख्यात करना ही संख्या है। पूर्णता को ख्यात करना ही संख्या है। जैसा मानव जीवन है ना जीवन के रूप में गठनपूर्ण है। पूर्णता के अर्थ में "संख्या"। जितने भी जीवन है संख्या, उसके बाद क्रियापूर्णता, क्रियापूर्णता का मतलब है मानव जो करना चाहिए वह सब को कर लिया, उसो का नाम है क्रिया पूर्णता, वही चीज आचरण पूर्णता, आचरण जितना करना था, सब कर लिया। आचरण में क्या चीज है, उपकार करना, सब करने के बाद उपकार करना ही करते है, उपकार करना बन गया तो पूर्ण हो गया। क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता के अर्थ

में संख्या आप कर लिया ता आप एक संख्या में आ गये, हम कर लिया तो 2 संख्या में आ गये और कोई किया तो 3 में, 4 में। उसके पहले संख्या कहाँ "कल्पना"। कल्पना से तो अभी विनाश की ओर चले गये। सुविधा संग्रह हमारा कल्पना है। सुविधा–संग्रह पूरा होता नहीं। उसको परंपरा बना के रखे ह। सुविधा–संग्रह का तृप्ति बिन्दु मिलता नहीं। सब के सब लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद को वैध मान लिये, शोषण को वैध माना, व्यापार को वैध माना, व्यापार में शोषण ...... व्यापार को वैध माना है कि नहीं, सभी संविधान माना है की नहीं। इसीलिए पूणता का अर्थ आचरण पूर्णता के अर्थ में है। पूर्णता के अर्थ में संख्या पूर्ण संख्या "1" एक एक के साथ घटना बढ़ना है। उस स्थान में एक वस्तु नहीं है। वस्तु कहीं नहीं है, ऐसा नहीं है। वस्तु पूरा वैसा ही है। जैसा एक झाड़ में 10 पक्षी बैठे हैं। एक उड़ के चला गया तो कितना बचा – 9, उतना नहीं रह गया। उसका अस्तित्व को ही नकार दिया। वस्तु नहीं है वैसा नहीं है, अभी वह भाव आता नहीं है।

जिज्ञासा : **बाबा जितनी भी कारीगरी है जैसे ये (mobile) वस्तु बनाना है ये वस्तु बनाने के लिए raw material (कच्चा माल) कहां काम करेगा, उसमें गणित लगेगा तो....**

बाबाजी : दूसरा कक्षा आयेगा बताओ। इसमें जो लगेगा बुद्धि उसके अलावा क्या इसमें लगाओगे। उसका संख्या होता है, नाम होता है, एक transistor नाम है, एक आम का पेड़ नाम है। एक लगाया कीए दो लगाया की, 4/5 लगाया लगाने दो।

जिज्ञासा : **पर उसका design बनाते समय तो कुछ गणित लगाते हैं।**

बाबाजी : क्या गणित लगता है, गणित से कहां बनता है वह, amplifire में क्या गणित। amplifire बनता है, यह पता है, क्रिया है की गणित है।

जिज्ञासा : **क्रिया है।**

बाबाजी : गणित माने ...., मरा हुआ चीज। कागज शल्य चिकित्सा, मरा हुआ चीज ह गणित। जीने की वस्तु हम मानव। जीने के लिए जो वस्तु है वह मानव गिनताहै 1, 2, 3, जीने के लिए जो लगता नहीं है। उसमें हमकैसा मानेंगे। जैसा गाड़ी चलाना, गियर में कितना दाब आता है वह संख्या गियर संख्या नहीं है, गियर काम के अर्थ में, इसी को कहते है। व्यवहारिक गणित।

जिज्ञासा : **बाबा अपन इसको भाषाकरण क्या दें? अभी जैसे गणित का नाम रट गया है।**

बाबाजी : बता तो दिया, संयुक्त रूप से साथ साथ 2 शब्द दिया। अकेले जो काम करना है उसको अकेले कहा जाए साथ में काम करते हैं साथ में कहा जाए। बहुत सारे मिलकर करते हैं संयुक्त कहा जाए। परंपरा इसके विपरीत है।

जिज्ञासा : बाबा गुणा–भाग।

बाबाजी : जोड़–घटाने में ही गुणा–भाग है।

जिज्ञासा : कुछ आकार का परिचय देते हैं बाबा जैसे त्रिकोण, चौकोण, गोल, आयतन .....।

बाबाजी : ठीक है, नाम है, कोण को पहचानने की बात इसमें...

जिज्ञासा : 90^0, 60^0, 30^0, 45^0

बाबाजी : सब बात आता है।

जिज्ञासा : इसको कैसे समझाएं।

बाबाजी : आकार की जैसा नाम है, वैसा ही समझाया जाए। नाम से गणित नहीं है। 3 कोण बनाते हैं उसमें गणित है, 4 कोण बनाते हैं उसमें गणित है। अंशों का संख्या बताने में क्या तकलीफ, ये जो चित्र है, इसमें 90 अंश साथ में है, साथ में है की 90 अंश अलग से है, किसके साथ, वस्तु के साथ। ये जो आकार है, आकार का नाम होता है, नाम से बताइये।

जिज्ञासा : ये जो 90 है, 45 है ये तो मानवकृत है।

बाबाजी : मानवकृत आकार है, प्रकृति में कुछ आकार रहता है, उसके आधार पर मानव ने बहुत सारा आकार बना डाला है जैसा पत्थरों को देखने से बहुत आकार के मिलते हैं। प्राकृतिक रूप से टूटा हुआ मिलते हैं, प्राकृतिक रूप में जुड़ा हुआ मिलता है।

जिज्ञासा : बाबा ये जो शून्य बताते हैं

बाबाजी : शून्य क्या चीज है?

शून्य जिसमें सभी पदार्थ समाया है, उसका नाम है। व्यापक वस्तु में सभी पदार्थ समाया है, व्यापक वस्तु का दूसरा नाम है, शून्य। शून्य में सभी वस्तु समाये है। शून्य से कोई वस्तु तैयार नहीं होता। शून्य में जड़, चैतन्य वस्तु समाहित है। ऐसा पढ़ाना पड़ेगा। सत्ता की व्यापक वस्तु को यदि शून्य कहते हैं, व्यापक में ही सभी वस्तु समाहित है। उसमें से यदि एक वस्तु को बाहर निकालने को कहते हैं तो नहीं होगा। शून्य में घिरा है। अभी क्या किया? शून्य में ही घटाना शुरू किया। एक एक वस्तु निकाल के खाली करने के लिए

सोचा उसका नाम है "ऋण अनंत" और दूसरे जगह में भरना चाहा वह "धन अनंत"। संख्या जो है, केवल इतना ही है। अनंत इसलिए कहते हैं। गिनती नहीं होता इसीलिए अनंत। भरने का काम भी नहीं होता खाली करने का काम भी नहीं होता है। शून्य में सभी वस्तु समाई है। शून्य से खाली करने में, भरने में दोनों में असफल है मानव जाति। क्या नाम दिया ऋण अनंत, धन अनंत।

जिज्ञासा : बाबाजी जैसे कल बात हुई थी एक के आगे (0) लगा दिया तो 10 हो गया। दो शून्य लगा दिया तो 100 हो गया, तो उस शून्य की बात है, उसको कैसे समझेंगे।

बाबाजी : 1, 2, 3, ... 9 तक संख्या लिख करके एक शून्य लगा देते हैं। 1 के साथ की ये 9 उसके अन्दर समा गया। किसमें? शून्य में। ऐसे ही 100 में, 100 चीज समा गया, 1000 में 1000 चीज समा गया। लाख में लाख चीज समा गया।

जिज्ञासा : इकाई, दहाई, सैकड़ा इसको कैसे समझेंगे?

बाबाजी : दस (10) को हम दहाई कहते हैं, सौ को सैकड़ा कहते हैं, ऐसे दस को हम ... . कहते हैं। ऐसा दस को सौ हजार मानते हैं। नापने तौलने के अर्थ में।

जिज्ञासा : बाबा घड़ी बताते हैं, बच्चों को, समय

बाबाजी : समय विखण्डन विधि है। सुर्योदय से सुर्य उदय तक एक दिन, एक दिन को 24 भाग में किया, घड़ी बता दिया। एक घड़ी को 60 भाग किया, 60 मिनट कहा, उसको 60 में भागा 60 सेकण्ड कहा।

जिज्ञासा : विखण्डन विधि को ऐसे ही रखना है क्या?

बाबाजी : भाग विधि से, भाग का भाग, भाग क्या है? एक चक्का है उसको 60 भाग बना दिया, 24 भाग बना दिया।

जिज्ञासा : इस विधि में काल निरंतर है, ये तो नहीं आएगा समझ में।

बाबाजी : काल निरंतर है कि नहीं है, क्रिया की अवधि बराबर काल क्या क्रिया? सूर्य उदय से सूर्य उदय तक अवधि, इस अवधि को हम एक दिन कहते हैं ये निरंतर है, एक से एक जुड़ा ही है। इस ढंग से काल निरंतर हो गया। 1980 में सभी विश्वविद्यालय में एक सेमीनार हुआ, काल क्या है? एक व्यक्ति कहा, एक दिन में 24 घंटा, ऐसा शुरू किया। बाकी कहाँ जाता है? ऐसा झूठ को पढ़ाते हैं। एक घंटा को मिनट में बांट दिया, 60 मिनट, उसको सेकण्ड में बांट दिया उसके बाद उसको mecro और micro में बांट दिया और संख्या लगाया, उसको 60 भाग करे, micro second हो गया, उसको भाग किया तो super micro second हो गया। ऐसा करते गये, नाम देने गये समय का वर्तमान कहां है? काल का पता नहीं है विज्ञानियों को, उस समय

आदर्शवादियों ने कहा दृष्टा कौन? उनको दृष्टा मिला नहीं। 1990 के शुरूआत में इन दोनों को मैं किया, वर्तमान निरंतर है, कैसे निरंतर है? क्रिया की अवधि बराबर काल, सूर्य उदय से सूर्य उदय तक एक दिन। उसको काल नाम दिया। कैसे भी उपयोग करो क्रिया की निरंतरता ही काल की निरंतरता है।

जिज्ञासा : **हफ्ता, महीना**

बाबाजी : ये सब इसी विधि से, ये सुविधा के लिए बनाया गया है।

जिज्ञासा : **मुद्रा से परिचय कराना है क्या?**

बाबाजी : कागज का मुद्रा बता के माचीस भी उसके साथ में बता देंगे। जलाकर देखो क्या निकलता है। बच्चों से पूछो, वस्तु से पेट भरता है की कागज से।

जिज्ञासा : **जैसे अभी प्रचलन में यही मुद्रा है।**

बाबाजी : अपराध में भागीदारी के लिए सभी कर रहे हो। अभी अक्षराभ्यास से लेकर डॉक्र तक अपराध के लिए सारा कर्म कर रहे हैं। अपराध में जो मास्टर है उसी को डॉक्टर कहा जा रहा है। अभी बच्चों को जीने की विधि से शुरूआत करो। पैसा से किसी का पेट भरता है किससे भरता है वस्तु से। वस्तु कैसा पैदा होता है श्रम से, श्रम से वस्तु पैदा। अभी पैसे के अलावा और कुछ आता ही नहीं।

जिज्ञासा : **बच्चों में श्रम अभ्यास के लिए कक्ष की सफाई, जूते–चप्पल जगह पर उतारना, कुर्सी को जमाना, ये सब करवाया जाए क्या?**

बाबाजी : प्री–प्रायमरी में कुछ नहीं कराया जाये। उनके हाथ पैर में ताकत आने के बाद कराया जाये। प्री–प्रायमरी में अच्छा करने का भाषा बनाया जाये, मन बनाया जाये, पहले भाषा सिखाया जाये, सेवा करना, कार्य करना, उत्पादन करना। पहले भाषा उसके बाद मानसिकता को तैयार करना, उसके बाद धीरे–धीरे काम कराना। ये ठीक रहेगा की बच्चों को ये कहना कि बर्तन धो, कुदाली, कोडो, झाड़ू लगाओ। ऐसा कराओगे तो कोई बच्चे तुम्हारे पास नहीं आयेंगे।

जिज्ञासा : **कक्षा एक के बच्चे ने पौधे लगाये थे बाबाजी। अभी तीन कक्षा चल रहा है, एक चल रहा है नर्सरी 4 बच्चे, साढ़े चार वर्ष के तीन बच्चे, 6/7 साल के 4 बच्चे तो ऐसे बच्चे के साथ 2–2 अध्यापिका जी रहती है। उन 7 वर्ष और 6 वर्ष के बच्चों के हिसाब से पूछ रहे थे बाबाजी, बच्चों को मिट्टी में बीज खुश हो कर लगाये।**

बाबाजी : उतना ठीक है।

जिज्ञासा : बड़े बच्चों के लिए जब भाषा बतायेंगे कुछ भाग श्रम का शुरू करवाना है की नहीं करवाना है।

बाबाजी : साफ–सफाई कराना हो सकता है, कक्षा का करें, प्रांगण का करें, खाना बनाने वाला जगह का करें एक–एक दिन एक–एक काम कराओ।

जिज्ञासा : विद्यालय में समयानुसार पहुंचने के लिए एक समय सारिणी बनाया है उसमें कुछ नाराजगी हो जाती है कि चल दिए, तो क्या समय को पक्का किया जाये।

बाबाजी : प्री–प्रायमरी वालों के लिए समय का restrication ज्यादा है। कक्षा एक के लिए कम है, कक्षा 2 में बिल्कुल नहीं। कक्षा 3 में कुछ भी नहीं। क्रम से जैसा कक्षा आगे बढ़ता है वैसा समय के पाबंद बनाओ।

जिज्ञासा : ऐसा भी सोचे हैं कि कि कक्षा में एक कक्षा चलती है, अधिकतम 20 मिनट सोचे हैं, कक्षा 1 के लिए 20 मिनट।

बाबाजी : ठीक है, 30 मिनट कर दो, उसके बाद दुगना से अधिक समय खेल के लिए दो। एक घंटा पढ़ाओ, एक घंटा खेल खिलायें और खेल में बहुत सारा चीज सिखायें। भाषा की, विज्ञान की, बहुत सारा चीज।

जिज्ञासा : इसके लिए विद्यालय का समय को बढ़ाना पड़ेगा।

बाबाजी : अपने में व्यवस्थित हुए बिना बच्चों को क्या दोगे। अभी 3 घंटा देने हो तो 4 घंटे में बदलो। 4 घंटे को 6 घंटे में बदलो, 6 घंटे को 8 घंटे में बदलो उसके बाद रूकने की बात। रूकने के बाद खलने की बात, खेलने के बाद पढ़ने की बात, सीखने की बात, स्मरण रखने की बात।

जिज्ञासा : बच्चों को भ्रमण का भी सोचें हैं जैसे अभी बरसात हो रहा है तालाब, नदी दिखाने क लिए भ्रमण का सोचा है।

बाबाजी : ठीक है, छुट्टी के दिन भ्रमण कराओ।

जिज्ञासा : ये विहार में हो जायेगा। बाबा स्कूल का सामान प्लास्टिक का आ रहे हैं।

बाबाजी : उसको खत्म करते जाओ, धीरे–धीरे। बच्चों को ज्ञान कराओ, प्लास्टिक को जहां रखोगे वहां दूब भी नहों उगेगा। कहीं भी प्लास्टिक दिख जाये उसको निकाल कर के यहां रखना। एक निश्चित जगह बनाना। पास में गड्ढा खोदकर के उसको डाला जाए।

जिज्ञासा : बाबाजी जैसे बच्चों के साथ चेतना विकास मूल्य शिक्षा के बारे में बात करेंगे। गणित एक भाग हो गया, विज्ञान एक भाग हो गया अभी बस नाम दिया है।

बाबाजी : ठीक है ना, नाम के साथ, कार्य बनाओ, प्रयोजन बनाओ, प्रयोजन बोध होने के बाद काम करेगा। प्रयोजन बोध नहीं होगा, कोई काम नहीं करेगा।

जिज्ञासा : जो ज्यादा समय बच्चों के साथ बातचीत में लगाया जाये।

बाबाजी : बातचीत में लगाया जाये, स्मरण में रखने के लिए फीड किया जाये।

जिज्ञासा : स्मरण में रखने वाली वस्तु जैसे?

बाबाजी : संबोधन, संबोधन के साथ कार्य, कार्य के साथ क्या करेंगे, वस्तु के साथ क्या करेंगे उसका बोध कराओ। एक ही अर्थ के लिए बहुत सारा काम हो सकता है जैसे उत्पादन, उत्पादन कितना तरीका काम होता है, अनगिनत काम होता है, सफाई के लिए कई काम होता है, कपड़े से साफ करना, लकड़ी के टुकड़े से साफ करना, झाडू से साफ करना, पानी में साफ करना, हाथ से साफ करना सभी बनता है।

जिज्ञासा : आपने अभी यह बताया की एक कक्षा में 3 अध्यापिका .... कुछ नया हो जाता है। तो एक कक्षा में एक अध्यापिका जाये कि बदल–बदल कर जाये।

बाबाजी : हर अध्यापिका अपने ढंग से बना कर लाए, सबकी विशेषताएं बढ़ती जाती है, सब मिलकर के बच्चों के लिए बहुत सारा सामग्री हो जाता है।

जिज्ञासा : ऐसे ही सोचा था, बच्चां को छोटा–छोट चीज, आहार भी सिखाया जाये, सिलाई भी सिखाया जाये।

बाबाजी : खेल में भी experts बनाया जाये। पहले खिलाना उसके बाद बनाना। ऐसा experts हम बनाने की छठी कक्ष से सीखा, खिलाने का काम चौथी, पांचवी कक्षा में हो सकता है।

जिज्ञासा : कल आपने बताया था कि chemical की combination में रंग है तो पत्थर में भी रंग होता है, तो पत्थर में chemical होता है।

बाबाजी : होगा, क्या नहीं होगा पत्थर में। chemical के पत्थर होता है यौगिक क्रिया से पानी शुरू होता है किस विधि से, यौगिक विधि से। पानी शुरू होने के मूल में क्या चाहिए? एक जलने वाला, एक जलाने वाला का संयोग। दोनों मिलकर के प्यास बुझाने वाले हो गये। यदि ऐसा होता है, ऐसे होने के लिए radiation है। वह भी मदद करता है गुरुत्वाकर्षण ये भी काम करता है। परमाणु में

मध्यान्श का भाग होता है, आश्रोतांश का भाग नहीं होता है। आधा अंश में भार रहता है आधा भार मुक्त रहता है जितना orbit में अंश होते है उतना ही अंश बीच में, कभी कभी ज्यादा हो जाता है radiation atom में ज्यादा होता है, बीच में ये भार का आधार है।

कहां रूकेगा पानी, धरती में रूकने पर धरती में पत्थर होता है। पानी से पहले से रहा है। धरती में एक तत्व होता है अम्ल एवं क्षार होता है। ये दोनों तत्व को पानी लेता है, उसका योग में प्राण सूत्र बनता है। एक का नाम है पुष्टि तत्व, एक का नाम है रचना तत्व। ये दोनों से प्राणसूत्र स्थित होता है ये सब स्वयंस्फूर्त है। इसमें मनुष्य का कुछ भी हाथ नहीं है। जो प्राण सूत्र तैयार होता है वह सांस लेता है। रासायनिक जल में ओतप्रोत ही करके। सांस लेने के साथ उसका रचना विधि उसमें आता है। उस रचना विधि के आधार पर रचना होता है। एक रचना पूरा होने से वह रचना विधि में .... होता है, आवर्तनशील होता है। उसमें प्रसन्नता के साथ–साथ नया रचना की रचना विधि होता है। वह नया रचना करता है। उसी प्राणकोशाओं से जीव शरीर का रचना होता है। जीव शरीर का रचना में स्वदेज से अण्डज बनता है। अण्डज संसार से पिण्डज संसार। विकास क्रम यही है पिण्डज संसार के अन्त में मानव तैयार हुआ, मानव तैयार होने के पश्चात् जंगल में रहा, उसके बाद घर बनाना सीख लिया, जंगल काटना शुरू किया। अभी ज्यादा जगह में मैदान है, कम जगह में जंगल है। पहले क्या था? जंगल ही जंगल था। मानव ये सभी वस्तुओं का दुरूपयोग किया, शोषण किया, उसके बाद विज्ञान आ गया, विज्ञान आ कर के इसका गति बढ़ा दिया।

जिज्ञासा : **तो बाबाजी पहला रसायन जल हुआ, जल से पहले धरती है, पत्थर भी है तो रसायन बनने से पहले पत्थर में रसायन कहां से आ गया।**

बाबाजी : पत्थर बनने में जो तत्व होता है, उसका नाम रसायन।

जिज्ञासा : **वह पानी बनने से पहले आ गया।**

बाबाजी : पहले से रहता ही है, लोहा पहले से था ही, धातु पहले से था ही।

जिज्ञासा : **आप कहे पहला रसायन जल है।**

बाबाजी : पहला रासायनिक वस्तु है भौतिक वस्तु जो रसायन नहीं है जैसे लोहा तांबा ऐसा वस्तु है।

जिज्ञासा : **ये रसायन कहां से आ गया?**

बाबाजी : पदार्थ में ही रसायन द्रव्य, भौतिक द्रव्य दोनों होते हैं। धीरे–धीरे बच्चों को ये बोध कराओ, पांचवीं कक्षा तक बोध करा देना है।

वायुमंडल – प्राण वायु

बाबाजी : वातावरण में जो रहता है, उसके अनुकूल है ये, मानव जो प्राण वायु को त्यागता है उसको वनस्पतियां पचाती है, जैसा लकड़ी जलाते हैं, लकड़ी के धुआं को वातावरण पचा लेता है।

जिज्ञासा : कार्बन डाइऑक्साईड निकलता है और उसको वनस्पतियाँ पचा लेते हैं।

बाबाजी : धरती से जो खनिज कोयला को निकाला उससे निकला हुआ वायु जो पच नहीं पाता वही pollution है।

जिज्ञासा : बाबा जैसे धरती में कोयला निकाला उसको जलाया mono oxide निकला, mono oxide जो है पचता नहीं है, उसको pollution कहा, लेकिन अभी का जो pollution है वह carbon dioxide की अधिक मात्रा है।

बाबाजी : जंगल काट दिया इसीलिए अधिक मात्रा होता ही है। कार्बन डाइऑक्साइड को पचाने वाला वस्तु (वनस्पति) नहीं है। मोनोऑक्साइड को डाईऑक्साइड में बदलने के लिए ऑक्सीजन चाहिए। अपन ऑक्सीजन का मात्रा बना के रखे नहीं, नाश करना सीखे। फलदार झाड़ कार्बन डाईऑक्साइड को ज्यादा से ज्यादा पचाते हैं ऐसे झाड़ को पहचाना जाये।

जिज्ञासा : क्या अधिकांश फलदार वृक्ष ऐसे ही हैं।

बाबाजी : आम का पेड़, आम की पत्ती डाईऑक्साइड को पचाता है, फल भी होता है।

जिज्ञासा : बाबा पांच फल देव वृक्ष के रूप में माने गये है। आम, आंवला, पीपल, नीम, वट। पंचवट जिनको कहा, क्या इनको इसी आधार पर मानते हैं।

बाबाजी : अभी परीक्षण करके देखा जा सकता है कि प्राण वायु को बचाना है कि नहीं, उससे जो ऑक्सीजन निकलता है उससे

जिज्ञासा : ये मात्रात्मक आंकलन कैसे होगा?

बाबाजी : प्रयोग अत्याधुनिक विधि से ही होगा, परीक्षण करने में क्या तकलीफ है। ये जो अपन सोचते हैं, आधुनिक विज्ञान की सोचा ही नहीं जाए वह भी गलत। आधुनिक विज्ञान में विश्लेषण विधि ठीक है। चिकित्सा विधि ठीक नहीं, कर्तव्य बुद्धि, दायित्व विधि ठीक नहीं।

जिज्ञासा : **जैसे आपने पांच वायु का नाम लिया, पांच वायु में से प्राण वायु को ऑक्सीजन के रूप में पहचाना। क्या बाकी वायु को भी आधुनिक नामकरण के रूप में पहचान सकते हैं।**

बाबाजी : वह क्या नाम देते हैं, हम नहीं जानते, प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान ऐसा नाम दिया।

जिज्ञासा : **जो गैस pass करते हैं वह SO_2 है।**

बाबाजी : प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान ऐसा करके पांच वायु का नाम दिया। उसका उपयोग बता दिया, कैसा उपयोग होता है मानव शरीर में। हमारा शरीर में कैसा उपयोग होता है, उसका परीक्षण किया, उसी आधार पर बता दिया।

जिज्ञासा : **बाबा ये आने शरीर में पांचों वायु का दृष्टा हो पाना.....**

बाबाजी : दृष्टा पद अनुभव के बाद का चीज

जिज्ञासा : **बाबा प्राण वायु ऑक्सीजन हुआ ये सही है, गलत है।**

बाबाजी : ये ठीक है।

जिज्ञासा : **और अपान वायु**

बाबाजी : जो शरीर के लिए अनुपयोगी है, शरीर के लिए हानिकारक है।

जिज्ञासा : **जो सांस छोड़ते हैं, गैस pass करते हैं, वह सब कार्बन डाइऑक्साइड है।**

बाबाजी : वह सब अपान वायु है।

जिज्ञासा : **गैस pass तो SO_2 है। इसका मतलब ऐसा वर्गीकरण नहीं कर सकते।**

विज्ञान में गैस का नाम अलग अलग बताते है। आप अपान वायु एक बोल रहे हो, इसको विज्ञाान में SO_2, CO_2ऐसा ऐसा नाम दिया।

बाबाजी : ठीक है 2000 वायु का नाम दिया, उसको अभ्यास कराओ धीरे–धीरे। पहले प्राण वायु के बारे में कराओ। उसके बाद अपान वायु के बारे में, उसके बाद बाकी तीनों वायु के बारे में मनुष्य शरीर में प्रक्रिया होता है, उसके बाद बाकी संसार की बात कराओ। प्रदूषण कहां से आया वह भी बताओ।

जिज्ञासा : **बाबा आपने कल की चर्चा में एक तो ये चर्चा किया, अगर हम ठीक सुने हैं, गलत सुने हैं तो आप ठीक कर देना की पौधे कार्बन डाइऑक्साइड लेते हैं, दिन हो चाहे रात हो पर वह हमेशा प्राण वायु ही छोड़त हैं, दिन हो चाहे रात हो।**

बाबाजी : ठीक है सभी पौधे धूप से लेकर वट वृक्ष तक यही काम होता है।

जिज्ञासा : **जैस भीलवा जो है मोनो ऑक्साइड छोड़ता है।**

बाबाजी : भीलवा कार्बन मोनोऑक्साइड खाता है और डाइऑक्साइड छोड़ता है।

जिज्ञासा : **तो केवल एक आध पौधा ऐसा है जो भिन्न है।**

बाबाजी : डाईऑक्साइड मानव शरीर के अनुकूल नहीं है, खुजली होती है प्रतिकूलता को दिखाता है।

जिज्ञासा : **बाबा विज्ञान में जो अभी तक हम पढ़ रहे थे, पढ़ा रहे थे कि सभी पौधे दिन के समय में ऑक्सीजन छोड़ते हैं कार्बन डाइऑक्साइड लेते हैं, रात के समय में ऑक्सीजन लेते हैं कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं।**

बाबाजी : आपका पढ़ाने से परिणाम हुआ उससे पता लगता है हम गलती कर गए, सही करने के पक्ष में इतना बताया।

जिज्ञासा : **बाब इस बात को कैसे पहचान पाते हैं।**

बाबाजी : मानव का अनुकूल, प्रतिकूल समाधान समस्या, न्याय, अन्याय, सत्य, असत्य, नियम, नियंत्रण, संतुलन इन आधारों पर हम पहचान सकते हैं।

जिज्ञासा : **बाबा विज्ञान ये कहता है 78 प्रतिशत नाइट्रोजन है ये कौन सा वायु है। वायु मंडल में 78 प्रतिशत नाइट्रोजन है, 21 प्रतिशत ऑक्सीजन है बाकी 1 प्रतिशत में बची हुई सारी गैस हैं, तो ज्यादा बड़ा भाग जो है नाइट्रोजन का है, आप कहते हैं कि प्राण वायु है।**

बाबाजी : यौगिक विधि से ये वायु का निर्माण हुआ, जलने वाला, जलाने वाला से पानी बनता है। पानी बनने के बाद जो प्राण वाायु अलग होता है, उसको अपन उपयोग करते हैं। पानी के बाद जो छनकर के प्राण वायु मिलता है उसको हम लेते हैं। हर पौधे को पानी चाहिए। पौधा ही ऑक्सीजन को अलग करता है। उसकी को हम सेवन करते हैं। जीवित रहते हैं। सुखी होने के लिए अध्ययन करते है। और समाधान पाते है। समाधान पा करके समाधान को प्रमाणित करते है। समाधान रासायनिक, भौतिक वस्तु नहीं है। समाधान ज्ञान है। ज्ञान जो है, सत्ता में भीगता हुआ रहने का फलन है। सत्ता रासायनिक भौतिक वस्तु नहीं है। सत्ता में रासायनिक भौतिक वस्तु क्रियाशील है। जीवन चेतना विधि से जीता है। मानव चेतना विधि से जीता है। चेतना रासायनिक भौतिक वस्तु नहीं है। भीगे रहने से ये फल मिला। ये है अनुसंधान का मूल चीज। मानव ज्ञानावस्था की इकाई है। इस बात की पुष्टि में इतना किया। समाधान वस्तु रूप में है। सुख समझदारी रासायनिक भौतिक वस्तु नहीं है।

जिज्ञासा : **तो इसमें आप की सहमति है कि वायुमण्डल में जैसा कहा जा रहा है जो भी विश्लेषण है वह ठीक है।**

बाबाजी : उसमें अपन की कोई बात कहने की जरूरत नहीं है। ऑक्सीजन की कमी है वह कमी होने का कारण जंगल को साफ कर देना, ऑक्सीजन बनाने वाले मशीन को अपन बरबाद कर दिया। ऑक्सीजन पूरी धरती के लिए पूरा पड़ जाए, उतना होने के लिए प्रयास करना जरूरी है।

जिज्ञासा : **पेड़ के नीचे रात को आदमी सो गया इससे आप ये निष्कर्ष कहते हैं कि वह प्राण वायु रात में देता है ऐसा ही हम पहचानते हैं की कोई सी विधि है।**

बाबाजी : हम इतना निष्कर्ष करते हैं कि झाड़ क नीचे आदमी अभी तक सोया, रात को भी दिन को भी। 95 वर्ष के हम हो गये झाड़ के नीचे।

जिज्ञासा : **बाबा इसको पहचानने का ये आपका व्यवहार विधि है कोई और विधि तो नहीं है दृष्टा विधि से कुछ और देखते हों।**

बाबाजी : वही दृष्टा विधि, व्यवहार विधि से हम देख पाते हैं किस बात की नाइट्रोजन कहते हैं, जिस प्राण वायु को हम कह रहे हैं उसको हम अच्छी तरह से जानते हैं।

जिज्ञासा : **नाइट्रोजन को जिस ढंग से जाना जाता है बाबा....।**

बाबाजी : हम जिस ढंग से जाना उसको बताया। व्यवहारिक है, व्यवहार सुलभ है उसको बताओ। व्यवहारिक नहीं है, व्यवहार सुलभ नहीं है, उसको मत बताओ।

जिज्ञासा : **आपके तरफ से ये आ गया की प्राण वायु है, वायुमण्डल में कोई और भी गैस है इस बारे में आप कुछ नहीं कह रहे हैं। अपान वायु के साथ जो कार्बन है वह क्या है?**

बाबाजी : शरीर रचना में जो वस्तु है वही रहेगा। मूलतः शरीर रचना में प्राण सूत्र। प्राण सूत्र के मूल में पुष्टि तत्व, रचना तत्व। पुष्टि तत्व, रचना सूत्र के संयोग से प्राण सूत्र बनते हैं। उसके विपरीत जो वस्तु है वह शरीर रचना में है ही नहीं।

जिज्ञासा : **पुष्टि तत्व ये क्या चीज है?**

बाबाजी : पुष्टि तत्व का मतलब है ताकत के रूप में प्रदर्शित होता है। रचना तत्व आकार, प्रकार है ये दोनों एक होने से चलता फिरता, सांस लेता हुआ दिखता है। दोनों अलग हो जाने से मरा हुआ कहते हैं।

जिज्ञासा : **इसका मतलब जिस समय प्राण सूत्र बने, उस समय सिर्फ ऑक्सीजन ही होगा।**

बाबाजी : ऑक्सीजन रहा होगा तभी बना होगा, अभी कम हो गया।

जिज्ञासा : सिर्फ ऑक्सीजन रहा या उसमें भी कुछ और गैस रही।

बाबाजी : रहा हो नहीं रहा हो, ऑक्सीजन का काम बताया।

जिज्ञासा : हम ये कह रहे थे कि क्या ऑक्सीजन को ही प्राण वायु कहते हैं।

बाबाजी : क्या पता ये शोध की बात है।

जिज्ञासा : विज्ञान जिसकी पहचान रहा है वह सबको अलग–अलग नाम दिया और बाबा ने सबको एक नाम दिया प्राण वायु।

बाबाजी : प्राण वायु में बहुत सारा चीज है ऐसा आप कहा। पाँच प्रकार से काम करने वाला है प्राण वायु, प्राण वायु अपान में परावर्तित होता है, शरीर में।

जिज्ञासा : प्राण वायु लिया, दूसरा वायु बाहर निकाला, एक वायु गैस से निकला, शरीर में ही एक वायु और रहता है, बल देने के लिए।

बाबाजी : component के साथ क्या काम किया। प्राण सूत्र के साथ क्या काम किया वह सब अलग अलग है। जैसे लीवर, मेधस, कान, जीभ इनके साथ बल के रूप में काम किया।

जिज्ञासा : पूरा धरती का जो वायु मण्डल है, उसमें जो वायु है, परतों में है, हल्की और भारी के हिसाब से, लेयर के हिसाब से।

बाबाजी : धरती और वायुमण्डल में परत होता है सबसे पास में प्राण वायु होता है, उसके बाद में अपान वायु। जो हम सेवन करके जीवित नहीं रह सकते वही है, ऐसा बताया, ऊपर जाते हुए घट जाता है, ज्यादा है इसका गवाही है आदमी जीता है, जीव संसार जीता है इसको प्राण वायु नाम दिया जाए कि नहीं, दिया जाए।

जिज्ञासा : अपान वायु का क्या प्रयोजन है?

बाबाजी : झाड़–पौधे का खाना और प्राण वायु तैयार करना।

जिज्ञासा : जो ऊपर लेयर में अपान वायु है, उनका भी यही काम है की इस वाले वायुमण्डल को बनाए रखना।

बाबाजी : प्राण वायु बनने के लिए सारी परत है। अभी ओजोन क्षीण हो गया बताते हैं, वह प्राण वायु कम होने के आधार पर है। प्राण वायु के रूप में परावर्तित होने वाला वस्तु कम होता गया, तो ओजोन भी कम होता गया, काहे के लिए गलत किया, सुविधा संग्रह के लिए किया, सुविधा संग्रह संवेदनाओं को राजी करने

के लिए किया इसीलिए न्यायालय में न्याय नहीं है। इसीलिए हम न्याय के लिए सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में न्याय को पहचाना, संबंध का मूल्यांकन होना न्याय है, उभयतृप्ति होना न्याय है।

जिज्ञासा : **बाबाजी सबसे ऊपर के परत में है, वह बदलता है, प्राण वायु में। ऐसा आपने कहा, ऊपर का परत भी घटता जायेगा।**

बाबाजी : घटता जायेगा तो हानि है। एक तो सूर्य का ताप पचाने वाला गुण का अभाव। जितने भी प्रकार के वायुमण्डल है उसको बनाए रखने के लिए धरती में activity है। धरती का activity सब layer बना है। ऊपर की परत बनना धरती के activity से। आदमी यदि अपराध परंपरा बन्द करता है, अपराध परंपरा बन्द करके न्याय परंपरा जो पाता है, मानव पद में जी पाता है। अभी एक अबोध बच्चा साढ़े चार वर्ष का, 150 आदमियों के बीच में पूछा तुम न्याय चाहते हो कि अन्याय चाहते हो, वह कहता है न्याय चाहता है, जब कि न्याय को नहीं जानता।

जिज्ञासा : **जैसे कि पेड़–पौधा अपान वायु को प्राण वायु में बदलता है, अपान वायु कैसे बना रहता है।**

बाबाजी : धरती का activity से, धरती का कार्यक्रम से बनता है। धरती का कार्य है, निरंतर क्रियाशील रहना, ये चारों अवस्था के साथ जितने लेयर है, वह सभी उसी से तैयार होता है।

जिज्ञासा : **धरती का activity की व्याख्या कीजिए।**

बाबाजी : धरती का activity वही सत्ता में भीगे रहना।

जिज्ञासा : **बाबा जैसे अपान वायु को पेड़–पौधा पचाता है और पचा के प्राण वायु बनाता है ऐसे ही बाबा धरती में ये ऊपर का लेयर कैसे बनता है।**

बाबाजी : धरती की गतिशीलता मूल कार्यक्रम है। धरती में सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप में वही पदार्थ, स्थूल से स्थूल रूप में वही पदार्थ पाया जाता है। स्थूल से स्थूल ठोस, उससे कम तरल, उससे कम विरल, विरल वस्तु का ये बात है, धरती में 2000 फुट के नीचे भी हम विरल गैस को पैदा करे वह अपने सजातीय के साथ ही अस्तित्व को प्रमाणित करता है। उसी को अनेक प्रजाति में गणना करते हैं, उसी को लेयर के रूप में भी गणना किया।

जिज्ञासा : **बाबाजी पाणिनी ने काम किया और आपने जो भाषा में काम किया दोनों में क्या अन्तर है।**

बाबाजी : पाणिनी ने धातु के ऊपरप शब्दों को लिखा है जैसा धर्म एक शब्द है, धर्म को धृ धातु पर लिखा। धृ की धारणा कहा।

जिज्ञासा : धातु क्या चीज है?

बाबाजी : वह व्याख्या नहीं है, हमने होने के आधार पर शब्दों को ग्रहण किया। ध्वनि के आधार पर शब्दों को पकड़ा, आवश्यकता के आधार पर शब्दों को लिखा।

जिज्ञासा : ध्वनि के आधार पर कैसे बाबा?

बाबाजी : प्रयोजन के आधार पर, परिभाषा के आधार पर हम विकास को, विकासक्रम को, जागृति को, जागृति क्रम को समझा सकते हैं। परिभाषा के मूल में 5 ही सूत्र है। सह अस्तित्व में विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति इतना ही है। इसी के संदर्भ में पूरा परिभाषा। सह अस्तित्व समझ में आए बिना आदमी सटीक जायेगा नहीं। उसके पहले जीव चेतना में ही जायेगा।

प्राण वायु अनेक प्रकार से उपयोग होता है, अपान वायु अनेक प्रकार से उपयोग होता है इसीलिए chemistry का परिभाषा दिया mistry of chemicals known as chemistry.

मानव, जीव, वनस्पति सब के सब जो विसर्जन करते हैं उसमें नीचे के लेयर, ऊपर के लियेर हर जगह में पहुंच जाता है।

जिज्ञासा : ऊपर का लेयर नीचे कैसे आता है?

बाबाजी : आवर्तनशील है ये carbon monooxide को dioxide में बदलने के लिए oxygen चाहिए। वह मिलता नहीं इसमें क्या हुआ, सूर्य की रोशनी पचने में कमी हो गई, उसके आधार पर बहुत सारा रोग तैयार हुआ।

जिज्ञासा : बाबा जैसे ओजोन सबसे बड़ा problem ओजोन की लेयर है।

बाबाजी : 32 प्रतिशत ऊंचाई में केवल ओजोन है, अभी 3–4 प्रतिशत में आ गया। ओजोन में जो सूर्य गरती पचता रहा वह कम हो गया, धरती का ताप बढ़ गया, इस ढंग से धरती तापग्रस्त हो गया।

जिज्ञासा : बाबाजी हमने हवा के आवर्तनशीलता के बारे में बात की, पानी के आवर्तनशीलता के बारे में बात को अब थोड़ा मिट्टी के आवर्तनशीलता के बारे में सबझना चाह रहे थे।

बाबाजी : मिट्टी अनेक प्रकार के होते हैं, वह भी परमाणु के योग संयोग से होते हैं। उर्वरक, अनुर्वरक भेद है। उर्वरक के बारे में लिखा है, बीज उगना, पेड़ बनना, झाड़ से पत्ते गिरना, पत्ते गिरकर के खाद होना, धरती उर्वरक होना। उर्वरक

होने से जो फसल बोता है, फसल मिलता है। फसल को नहीं काटो तभी भी धरती पर खाद ही होता है।

जिज्ञासा : **मिट्टी से पत्थर और पत्थर से मिट्टी ऐसा बनता है क्या?**

बाबाजी : मिट्टी पत्थर से मणि धातु लिखा है, मणि धातु से मिट्टी, ये आवर्तनशील है। करोड़ों वर्ष में मणि धातु मिट्टी हो जाता है सबसे धीरे होने वाला वही है।

जिज्ञासा : **Gold "सोना" कैसे बनता है?**

बाबाजी : परमाणु अंशों की संख्या भेद से। किसी संख्या में गोल्ड, किसी संख्या में लोहा। अभी सभी मिट्टी को ऊसर में बदलने का काम कर रहे हो।

जिज्ञासा : **धरती पर जितने भी क्षार बनता था, वनस्पतियों से, वह क्षार सब पानो में घुलकर के समंदर में पहुंच गया। समुद्र का क्षार को लाकर खाद बनाकर के रेती, ये सब क्षार है। जितने भी खाद है मूल में क्षार है।**

बाबाजी : नमक डालने से यूरिया से ज्यादा अच्छा काम करता है। नारियल का झाड़ में चूना और नमक डालते हैं। कटहल में फल नहीं होने से एक कीला गाड़ते हैं उससे फल होना शुरू होता है।

जिज्ञासा : **वास्तविकता और तात्विकता।**

बाबाजी : वास्तविकता क्या है? प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था।

तात्विकता बिना वास्तविकता है नहीं। तात्विकता मूल में पदार्थावस्था ही है। पदार्थ ही आगे की अवस्था में प्रकटन है। जीवावस्था, प्राणावस्था और गठनपूर्ण परमाणु के रूप में प्रगट है।

जिज्ञासा : **जीवन परमाणु वास्तविकता है की तात्विकता।**

बाबाजी : तात्विक, वास्तविक दोनों है। मूल रूप में। पदार्थावस्था तात्विक, बाद में तीनों अवस्था वास्तविकता है।

बाबाजी : हाँ, मूल रूप में , गठनपूर्ण होने से वह स्वचालित हो गया। गठनशील में पहले से ही आधा भाग न्यूट्रॉल रहता है। शून्याकर्षण में रहता है। जितना आश्रितांश रहता है उतना ही बीच में रहता है। किसी किसी में ज्यादा भी होते हैं। वह बीच वाला में भारत रहता है उसी में अणुबंधन है। गठनपूर्ण परमाणु में बीच में एक अंश होता है। अनुभव एक क्रिया है, बुद्धि में 2 क्रिया है, उसके बाद 8, 18, 32 क्रिया है। प्रत्यावर्तन में 61 और परावर्तन में 61 ये आधार बना मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान का।

सत्यता सह अस्तित्व में वास्तविकता है। रूप, गुण, स्वभाव, धर्म, पदार्थ में भी रूप, गुण, स्वभाव, धर्म रहता है। रूप, गुण, स्वभाव पदार्थावस्था में रहते हैं तभी तो 3 अवस्थाएं बनते हैं परमाणुविक स्थिति में तात्विकता पदार्थावस्था में।

जिज्ञासा : तो फिर यथार्थता

बाबाजी : तात्विकता, वास्तविकता मिलने से यथार्थता सत्यता सह अस्तित्व, सह अस्तित्व को परम सत्य नाम दिया।

जिज्ञासा : आप से पहले बात हुई थी, जीवन का संरक्षण पोषण और शरीर का संरक्षण पोषण, जीवन का पोषण, संरक्षण अलग अलग कैसे है। ये समझ में नहीं आया।

बाबाजी : जीवन का पोषण ज्ञान, ज्ञान के आधार पर शरीर को संरक्षण करता है नहीं तो नाश करता है। समझदारी के आधार पर पोषण, नासमझी के आधार पर विनाश।

जिज्ञासा : आपने कहा कि बच्चों को पात्रता, रूचि और प्रतिभा के आधार पर समझाना है।

बाबाजी : वह जो प्रश्न करते हैं, उनको समझाकर के समझदारी से जोड़ना। वही प्रतिभा। ये पात्रता हुई, रूचि के आधार पर योग्यता हुई। जैसा प्रतिभा होता है, वैसा योग्यता। रूचि वही, सच्चाई में, रूचि है कि झुठाई में, यथार्थ में रूचि है कि अयथार्थ में। समझदारी के आधार पर ही क्षमता, योग्यता, पात्रता तैयार होता है। समझदारी ही तो सकारात्मक पक्ष के लिए काम करेगा। सकारात्मक पक्ष से सौम्य दिखता है।

नृत्य

जिज्ञासा : कक्षा 1 से 5 तक पूरा syllabus बनाने बोले थे इस बारे में बात करना है।

बाबाजी : वो तो 10 कक्षा तक बनाना है।

जिज्ञासा : कक्षा 5 तक बोले थे बाबा, नृत्य।

बाबाजी : प्रधान रूप में 5 कक्षा तक। पहले भाषा को तय करो तथा भाषा प्रस्तुत करना है। भाषा के बाद भाव, भाव का मतलब है मूल्य, किस मूल्य पर बात भंगिमा, इन दोनों के साथ जो मुख मुद्रा बनता है उसकी भंगिमा को प्रतिपादित करता है। भंगिमा का मतलब है तदाकार हो गया। वो कितने लोगों में होगा? ऐसा बात करेंगे तो ऐसे हो जायेंगे। नहीं तो भाषा तक रहो। ठीक है? इसको पांच

कक्षा तक फैलाओ। पांच कक्षा तक सभी मुद्रा सभी भंगिमा आ जाय। ठीक है ना?

मुद्रा में प्रधान जो है ध्यान मुद्रा, विचार, समझदारी, उद्बोधन का मुद्रा। चार मुद्रा प्रधान है। चारों मुद्राओं के साथ अभ्यास कराओ। पहले मुद्रा के लिये, भाव के लिये 2 वर्ष, तीसरा भंगिमा के लिये 2 वर्ष, अंगहार के लिये 2 वर्ष। ऐसा ऐसा लगाओ छवी। ठीक है ना? इसमें किसको क्या कष्ट है? इस कक्षा में इतना भंगिमा, इतना अंगहार सिखायेंगे, मुद्राएं सिखायेंगे ये सब तय करो, ये आपका काम है लम्बा चौड़ा।

जिज्ञासा : बाबाजी ध्यान मुद्रा का थोड़ा विस्तार करें।

बाबाजी : ध्यान मुद्रा में आखें को, उन्वनी मुद्रा नाम की एक चीज, उन्यनी मुद्रा दोनों आखों के मिलन बिन्दु को एक जगह बनाए रखता है। वो मिलन बिन्दु बनता है तब उन्वनी मुद्रा। वहीं ध्यान मुद्रा।

जिज्ञासा : बाबाजी ये सब तो मुझे आपसे समझना पड़ेगा।

बाबाजी : समझना तो है ही अभी एक दूसरे के साथ पूरक होने का मतलब ही इतना है। ठीक है? ध्यान मुद्रा की बात है। उन्मनी (मणी) मुद्रा से होता है ये। उन्मणी मुद्रा से ध्यान मुद्रा होता है, ध्यान मुद्रा से लोगों को स्वीकार होता है।

जिज्ञासा : फिर आगे विचार मुद्रा।

बाबाजी : सबको ऐसे ही समझना होता है, पहले 1 मुद्रा को करो। 10–10 मुद्रा को बताने से होता नहीं। 1–1 मुद्रा को तय किया जाय। ध्यान का मतलब है चित्त वृत्ति निरोधाम, योगस्य चित्त वृत्ति। योग का मतलब है दो वस्तु का मिलना। हमारा आंखों, आंखों में दूसरा कोई वस्तु आने से ध्यान हुआ। केवल आंख रहने से कुछ नहीं होता, आंखों में वस्तु आने से समझ में आया इसी सूत्र में चारों मुद्रा होगा। प्रदर्शन के लिये आता है विचार मुद्रा ध्यान मुद्रा से आता है। सत्य को समझने क लिये, सत्य को समझाने के लिये विचार मुद्रा आता है, इन दोनों को करना पड़ेगा। नहीं करेंगे?

जिज्ञासा : अभी तो प्री–प्रायमरी में माता पिताजी के साथ कैसे प्रस्तुत होऐ वो तैयार किया है। ध्यान मुद्रा को कैसे....

बाबाजी : वो सब आपको आयेगा, पांचवी कक्षा में कराने के लिये आयेगा वहीं से ही 10 वर्ष तक नृत्य कराये, उसके बाद खेल खिलायें 5 वर्ष नृत्य के साथ नृत्य भी करायें। खेल भी करायें। फिर 5 वर्ष प्रमाणित किया, प्रमाणित करने के बाद सत्यापित किया हम समझा हूं। खेल का कोई गुरू मंत्रा समझा हूं, पढ़ने का गुरू मंत्र समझा हूं। सारी बात समझा, उसको प्रमाणित करके रखूंगा यही सत्यापन है।

1 से 10 तक उंगली के अनुसार मुद्राओं से जो गिनती होती है वो किये हैं वो ठीक है, वो कहीं से भी लगाओ, झांझर लगाने से होता है तो झांझर लगाओ, अंगुली से होता है अंगुली से करो, भाषा से होता है तो भाषा से करो। जो करना है करो ये आपकी सुगमता से ऊपर। ठीक है। और आगे....

जिज्ञासा : **इसको करती हूं फिर आती हूं आपके पास।**

बाबाजी : ठीक है बाद में।

जिज्ञासा : **बाबाजी नृत्य करने की कोई निश्चित उम्र है? और नृत्य खत्म करने की कोई निश्चित उम्र है क्या?**

बाबाजी : नृत्य को स्वास्थ्य ठीक रहे, ऐसा नृत्य कराओ। वो तो सब दिन कराना है। जो स्वयं स्फूर्त विधि से वो नृत्य करके अपने स्वास्थ्य को बनाए रखने तक सिखाना। कोई दो वर्ष में सीखेंगे, कोई दस वर्ष में सीखेंगे। क्या तकलीफ, कभी न कभी तो सीखके करेंगे, इस विश्वास को रख कर के चलो, मतलब नृत्य सीखने का उद्देश्य ठीक रहना है। पैसा पैदा करना है इस आधार पर शुरू करोगे तो होगा नहीं। स्वास्थ्य को ठीक रखना। स्वस्थ शरीर बनाए राने के लिए नृत्य एक व्यायाम है। यहां से शुरू करना। नृत्य एक कला है यहां स शुरू नहीं करना। एक व्यायाम है। ठीक है। कितना सार्थक है ये आप ही सोच लो। नृत्य को स्वास्थ्य के अर्थ में सिखाना ठीक है। पैसे के अर्थ में सिखाना ठीक है। शादी के अर्थ में सिखाना ठीक है। क्या ठीक है स्वयं विवेचना कर सकते हो। ठीक है। अभी दक्षिण में जितने भो करते हैं, वो सब शादी के अर्थ में नृत्य करते हैं। स्लिम रहना है। इसीलिए नृत्य सिखाते हैं। उसके बाद शादी के बाद पसर जाते हैं। हम ऐसा देख के आए हैं।

जिज्ञासा : **बाबाजी एक श्लोक आपसे पूछन था वो है कि नहीं है?**

बाबाजी : आङ्गिकं भुवनं यस्य वाचिकं सर्वाङ्गमयम्,
आहार्यं चन्द्र तारादि त्वम् नमः सात्विकम् शिवम्।

जिज्ञासा : **बाबाजी भूमि या धरती को लेके कोई श्लोक चाहिए था।**

बाबाजी : भूमि, धरती को स्वस्थ रखन है करके यही है। मनुष्य जो है ना धरती पर रहे। मनुष्य समझदार हो सकता है। समझदार हो करके जी सकता है। जी करके प्रमाणित कर सकता है। इतना ही कहना। और इसके अलावा कुछ भी कहने जाओगे वो फंसोगे। ठीक है। क्या कहना हर व्यक्ति समझदार हो सकता है। समझदार होने के लिए पाठ पढ़ते हैं और काहे के लिए करते हैं। स्वस्थ होने के लिए व्यायाम करते हैं। व्यायाम करने के क्रम में, नृत्य एक आग है। योग एक भाग है। है ना! बहुत शक्ति प्रयोग करने वाले व्यायाम दूसरे हैं। दण्ड

बैठक ये सब व्यायाम है। हम आपको स्वस्थ रहना है, कोई न कोई व्यायाम को अपनाना है। इसमें पूरा हो गया। ऐसा बात बनता है। और आगे बतलाओ।

जिज्ञासा : बाबाजी भूमि के लिए आपने जो श्लोक लिखा है, उसको आगे करा सकते हैं।

बाबाजी : वो तो पढ़ ही सकते हैं। भूमि स्वर्ग हो, मनुष्य देवता हो, धर्म सफल हो। ये तो आ ही रहा है। मानव धर्म सुखी होने के लिए है। ये सब बताओ इतने के लिए काम करना। इसी को नित्य मंगल कहा। नित्य शुभ कहा। ठीक हो गया। इतना ही तो बात है।

जिज्ञासा : बाबाजी ये जो विधिवत नृत्य है, भारतनाट्यम....

बाबाजी : ये तो बता दिया भई। चारों आयाम पूरा होना है। मतलब इसमें संबोधन पूरा होना है, संबोधन होगा कि नहीं होगा। संबोधन पूरा होना है। प्रयोजन पूरा होना है। ठीक है, संबोधन सही होना है। आज्ञापालन सही होना है। ये तीन बात को पुष्टि देने वाला कुछ भी पढ़ाओ न भई, क्या तकलीफ है। पांच वर्ष तक/पांच वर्ष तक आज्ञापालन लिखा है। पांचवी कक्षा तक। जहां से शुरू किए हैं वहां से सात वर्ष तक। ठीक है। तीन वर्ष से सात वर्ष तक। और आगे।

चित्र के बारे में :–

पहले आपने मां, पिता, भाई–बहन, बड़े–बूढ़े, का चित्र बनाओ। उसके बाद घर का बनाओ, उसके बाद गांव का बनाओ। उसके बाद देश का बनाओ।

जिज्ञासा : बाबा मैंने जो अभी नृत्य का शुरू किया है – उसमें शिरो भेद, दृष्टि भेद, ग्रीवा भेद ये सब बताया है। हस्त मुद्रा को बताया है।

बाबाजी : ठीक है ना, तुम्हारा हमारा दृष्टि क्या होना चाहिए? हमारा मुद्रा क्या होना चाहिए? इन तीनों को मिलाकर के संबोधन की विधि को बताओ। ठीक है ना। संबोधन के लिए तीनों चाहिए ना। हमारी क्या दष्टि है? लक्ष्य के रूप में होता है। यही न होता है।

जिज्ञासा : बाबाजी अभी जो नौ रस परंपरा में है। उसको मैं नौ मूल्यों के हिसाब से देने को सोच रही थी।

बाबाजी : एडजस्ट करना। उसको संबोधित करना। नौ मूल्य के रूप में, ठीक है ना। भक्ति को अपन नौ मूल्यों के रूप प्रदर्शित करें। हर एक, मूल्य को कैसा व्यक्त करेंगे। ये मुख्य बात है। उसको करो। उसको आप कर सकते हो। हमारा ऐसा, आप इसको कर सकते हैं।

जिज्ञासा : **अभी बच्चों को बताना शुरू किया है। मन लगाकर सीखते हैं।**

बाबाजी : बच्चों को समझ में आएगा तो सबको समझ में आएगा, तो बाकी सब समझ में आएगा। ठीक है ना।

जिज्ञासा : **आप आज्ञा दीजिए, आगे के लिए निर्देश दीजिए।**

बाबाजी : निर्देश यही है। नौ मूल्यों को हम कैसे अभिव्यक्त करते हैं। उसको प्रेक्टिस कराना। ठीक है। उसके बाद व्यवस्था को कैसा प्रेक्टिस कारते है। ठीक है ना। उसके बाद व्यवहार को कैसा व्यक्त करते हैं, उसको बताओ। उसके बाद विचार को कैसे व्यक्त करते हैं उसको बता दो।

विचार में नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य प्रमाणित होना। सत्य में समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाणित होना। न्याय में स्वधन, स्वनारी, स्वपुरूष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार प्रमाणित होना। इसको कब कराओगे। जब युवावस्था आता है। ठीक है ना। पहले क्या कराएंगे, सर्वप्रथम विचार के पास ले जाएंगे। उसके बाद अनुभव के पास ले जाएंगे। उसके बाद व्यवहार के पास ले जाएंगे।

जिज्ञासा : **बाबाजी एक बार फिर से, पहले विचार क पास....।**

बाबाजी : विचार करते हो आप भी, हम भी। बच्चों को ये सिखाना ही है। सभी विचार करते हैं कि नहीं। ऐसा शुरू करो। ठीक।

जिज्ञासा : **तो इसको कक्षा के अनुसार डिजाइन करूं कि बच्चों कि योग्यता के अनुसार।**

बाबाजी : बच्चों की योग्यता, शिक्षक–एक कक्षा। पहले इन दोनों को मैच कराओ। किस कक्षा में कितना हम सिखाएंगे। इस वर्ष में कितना सिखाएंगे। ठीक हो जाता है। ठीक आगे।

जिज्ञासा : **बाबाजी भरतनाट्यम में जैसा हम लोग सीखे हैं। तो हम लोग पहले स्टेप सीखे हैं। पैर चलाना, हाथ चलाना।**

बाबाजी : ठीक है ना। वो अलग–अलग पहले बताओ, फिर एक साथ वो अभिनय कराना। नृत्य का मतलब होना ''समाधान के अर्थ में विनय। क्रियेटिविटी जरूरी है। ये बताइए बच्चों को।

प्रमाण तो युवावस्था में प्रस्तुत करेंगे। उसके पहले प्रेरणा। ठीक है। बहुत बढ़िया। नृत्य का प्रयोजन है स्वास्थ्य को बनाए रखना।

जिज्ञासा : **प्री–प्राइमरी में क्या कराया जाए?**

बाबाजी : पिताजी, माताजी के साथ अंगहार, भाव, भाषा, मुद्रा कैसी होनी चाहिए, इसको बताओ।

जिज्ञासा : कक्षा 1 से 5 तक पूरा सिलेबस बनाने वाले थे। इस बारे में बात करना है।

बाबाजी : वो तो दस कक्षा तक बनाना है।

जिज्ञासा : कक्षा पांच तक बोले थे बाबाजी नृत्य।

बाबाजी : प्रधान रूप में पांच कक्षा तक। पहले भाषा को तय करो, क्या भाषा देनी है। भाषा के बाद भाव, भाव का मतलब है मूल्य, किस मूल्य पर बात करेंगे। भंगिमा इन दोनों के साथ जो मुख मुद्रा बनता है, उसको भंगिमा नाम है। मुद्रा अंगहार; मुद्रा के साथ अंगहार होता है। अंगहार भंगिमा को प्रतिपादित करना है। भंगिमा का मतलब है तदाकार हो गया। वो कितने लोगों में होगा? ऐसा बात करेंगे तो ऐसे ही जाएंगे। नहीं तो भाषा तक रहो। ठीक है। इसको पांच कक्षा तक फैलाओ। पांच कक्षा तक सभी मुद्रा, सभ भंगिमा आ जाए। ठीक है ना! मुद्रा में प्रधान जो है – ध्यान मुद्रा, विचार मुद्रा, समझदारी मुद्रा, उद्बोधन मुद्रा। चार मुद्रा प्रधान है। चारों मुद्राओं के साथ अभ्यास कराओ।

पहले मुद्रा के लिए, भाव के लिए – 2 वर्ष। तीसरे भंगिमा के लिए 2 वर्ष। अंगहार के लिए 2 वर्ष। ऐसे–ऐसे लगाओ। 6वीं तक हो जाएगा।

प्री प्रायमरी से प्रायमरी तक हो गया। ठीक है ना। इसमें किसको क्या कष्ट है? इस कक्षा में इतना भंगिमा, इतना अंगहार सिखाएंगे। मुद्राएं सिखाएंगे, ये सब तय करो। ये आपका काम है लंबा चौड़ा।

जिज्ञासा : बाबाजी ध्यान मुद्रा को थोड़ा विस्तार करें।

बाबाजी : ध्यान मुद्रा में आंखों को उन्वनी मुद्रा नाम की एक चीज, उन्वनी मुद्रा, दोनों आंखों के मिलन बिन्दु को एक जगह बनाए रखना है। वो मिलन बिन्दु बनता है तब उन्वनी मुद्रा। वही ध्यान मुद्रा।

जिज्ञासा : ये सब तो मझे आपसे समझना पड़ेगा।

बाबाजी : समझना तो है ही। अभी एक दूसरे के साथ पूरक होने का मतलब ही इतना है। ठीक है। ध्यान मुद्रा की बात है। उन्मनी मुद्रा से होता है ये। उन्वनी मुद्रा से ध्यान मुद्रा होता है। ध्यान मुद्रा से लोगों को स्वीकार होता है।

जिज्ञासा : फिर आगे विचार मुद्रा?

बाबाजी : सबको ऐसे ही समझना होता है। पहले एक मुद्रा को करो। दस–दस मुद्रा को बताने से होता नहीं। एक–एक मुद्रा को तय किया जाए। ध्यान का मतलब है

चित्त वृत्ति निरोधम् योगस्त चित्त वृत्ति। योग का मतलब है वस्तु आने से समझ में आया। इसी सूत्र में चारों मुद्रा होगा।

प्रदर्शन के लिए आता है विचार मुद्रा, ध्यान मुद्रा आता है सत्य को समझने के लिए, सत्य को समझाने के लिए विचार मुद्रा आता है। इन दोनों को करना पड़ेगा। नहीं करेंगे।

जिज्ञासा : अभी जो प्री–प्रायमरी में माताजी पिताजी के साथ कैसे प्रस्तुत होएं वो तैयार किया है। ध्यान मुद्रा को कैसे....?

बाबाजी : वो सब आपको आएगा, पांचवी कक्षा में कराने के लिए आएगा। वहीं से 10 वर्ष तक नृत्य कराएं, उसके बाद खेल खिलाएं – पांच वर्ष, नृत्य के साथ। नृत्य भी कराएं, खेल भी कराएं। फिर पांच वर्ष प्रमाणित किया। प्रमाणित करने के बाद सत्यापित किया। हम समझा हूँ, खेल का कोई गुरुमंत्र समझा हूँ, पढ़ने का गुरुमंत्र समझा हूँ। सारी बात समझा, उसको प्रमाणित करके रखूंगा। यही सत्यापन है।

जिज्ञासा : बाबाजी जो पिछले बार बात हुई थी आपसे उसमें जो आपने बोला था कि संबोधन को कैसे बताना है, कि हमारी दृष्टि क्या होनी चाहिए, हमारा भाव क्या होना चाहिए और हमारी मुद्रा क्या होना चाहिये। इन तीनों को मिलाकर संबोधन की बात बताओ।

बाबाजी : संबोधन की बात, ये बात इतने में कितना खुल गया आपके लिये, बताने के लिये। यदि एक बहन का संबोधन करना है उसके लिये तकनीकी ब्यूटी लगाओ।

जिज्ञासा : ये बढ़िया हो गया बाबाजी।

बाबाजी : भाई का संबोधन करना है तकनीकी ब्यूटी लगाओ। मुद्रा, भंगिमा अंगहार सब उसमें कैसा तैरता है उसको प्रस्तुत कराओ। ये बिल्कुल क्रांतिकारी बात। इसी के साथ प्रस्तुति मां के प्रति, पिता के प्रति लगाई जाये।

जिज्ञासा : जी बाबा जी, बाबा मैंने इसी आधार पर भूमि स्वर्गताम यातु वाली जो श्लोक है।

बाबाजी : उसको पहले सिखाया जाये।

जिज्ञासा : हां उसको मैंने आपके जैसे भूमि एक शब्द है उसको परिभाषा संहिता में अर्थ देखते हुए उसको नृत्य में किया है उसको मैं आपको दिखाती हूँ एक बार।

बाबाजी : वो ही तो उसको दिखाना ही चाहिए। बच्चों में वो गुण चाहिए।

जिज्ञासा : **जी बाबा। ये पूरा श्लोक मैं आपको करके दिखा रही हूँ।**

बाबाजी : ठीक है शुभं अस्तु। इससे अच्छा क्या होगा।

जिज्ञासा : **भूमि का पहले कर रही हूं, भूमि जिसमें चार अवस्थायें पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था और साथ में ठोस, तरल, विरल एक साथ हो, पिण्ड रूप में वो है भूमि।**

बाबाजी : बहुत बढ़िया । कितना बढ़िया।

इसको क्या कहोगे बताओ, किसी को कुछ कहा जाये इसको कोइ सिखाया है स्वयं स्फूर्त है।

जिज्ञासा : **आगे बाबा स्वर्गताम।**

बाबाजी : मनुष्योयातु देवताम।

जिज्ञासा : **स्वर्गताम को बता रही हूँ बाबा।**

बाबाजी : मनुष्य जो है न मनुष्य इसमें पांच कोटि के मानव को बताया इसमें से तीन मानव कोटि उपकार किये। दो मानव कोटि का मनुष्य जो है ना करना पड़ेगा। ये बताये। ये विनय में आना चाहिये। बच्चों के विनय में आ जाये, क्या कहना। में घुल जाये।

जिज्ञासा : **बहुत सुंदर, स्वर्गताम बाबा।**

बाबाजी : चारों अवस्था के लोग, व्यवस्था में जीना स्वर्ग होना, भूमि स्वर्ग होने का मतलब उतना ही।

जिज्ञासा : **इसी को बता रही हूँ बाबा, सार्वभौम व्यवस्था की परम्परा बन जाये। हर मानव स्वयं में विश्वास आ जाये ऐसा स्वर्ग हो।**

बाबाजी : जीव चेतना मानव दिव्य चेतना में जिया जाये। बहुत सुंदर। उपकार की बात, ये उपकार की बात है। केवल समय काटने की नहीं। उपकार की बात। और आगे।

जिज्ञासा : **मनुष्यो**

बाबाजी : मनुष्यो यातु देवताम।

जिज्ञासा : **मनुष्य जो दैवीय गुणों से सम्पन्न है स्वभाव से सम्पन्न है। यातु – देवताम तो बाबा ये अपनी यश बल कामना के लिये जन बल और धन बल को अर्पण–समर्पण।**

बाबाजी : बहुत बढ़िया।

जिज्ञासा : धर्मो, धर्म को बाबा शास्त्र से बताया है। जो जीना सिखाया और जो सुख धर्मी है। धर्मो युत सफलताम जो प्रमाणित हो।

बाबाजी : प्रमाणित होने का मतलब है सुखी हो गया। सभी सुखी होना कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित रूप में सुखी होना। नौ प्रकार से action बोलो। कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनमोदित भेद से 9 प्रकार से action। इसमें 10वां प्रकार होता नहीं। इसी में से दो पशु मानव, राक्षस मानव का काम करता है और तीन प्रजाति की आदमी देवता बनता है और दिव्य बनता है। मानव बनता है। बहुत बढ़िया।

जिज्ञासा : इसके आगे बाबा नित्य, नित्य बाबा जो तीनों कालों में एक सा विद्यमान है।

बाबाजी : एक स्वरूप होना, कायिक, वाचिक, मानसिक रूप में एक सा हो जाना। क्या बात, पहले से पहले मंगल कामना में ही इतना रखा है। और आगे।

जिज्ञासा : नित्यं यातु शुभोदयं –आशीर्वाद बाबा।

बाबाजी : निरंतर उदय होते रहेगे। पीढ़ी से पीढ़ी, मनुष्य से मनुष्य।

जिज्ञासा : इसके आगे बाबा नाट्य शास्त्र में जो हम लोगों ने नृत्य की जो परिभाषा पढ़ी है वो बताती हूँ बाबा – ऐसे अभिनय को नृत्य कहते हैं जिसमें रस, भाव, व्यंजना का प्रदर्शन हो। तो रस, भाव, व्यंजना का जो आपने परिभाषित किया है उसके अनुसार तो बाबा इतना सुन्दर सज गया है। रस को आपने बताया है दया, कृपा, करूणा की अभिव्यक्ति और भाव को आपके बताया है मौलिकता, मूल्य और व्यंजना को आपने बताया है, मूल्य एवं क्रिया संकेत ग्रहण वास्तविकताओं का संकेत ग्रहण करने योग्य प्रस्तुति। वो ये नृत्य की परिभाषा एकदम सज गई।

बाबाजी : विगत का सारा बात कटा।

जिज्ञासा : और सही अर्थ में बन गया।

बाबाजी : मुख्य बात तो यही है। ये मानवता में ही कटा है सब। कोई उसको पूजा करके हम क्या पाये? क्या दिये बच्चों को? हर व्यक्ति पूछ ले।

जिज्ञासा : बाबा रहस्य रहा इसलिये कला पक्ष रहा जीने का कोई नही रहा।

बाबाजी : कला जो है ना जीने से बहुत दूर हो गई। वो दूर करती गई। पहले शुरूवात हुआ, रसोमयी ईश्वर। धर्म का पहला सूत्र है – रसोमयी रस के रूप में ईश्वर

को अनुभव करना। ईश्वरीयता को अनुभव करना। यहां से शुरू किया, मंदिर, मस्जिद से शुरू होता है लोकव्यापीकरण। भजन किया तो भक्ति हो गई, ज्ञान से भक्ति में आ गई। भक्ति आ गई तो भक्ति रस को वीर रस के रूप में परिवर्तित किया, शोक रस में परिवर्तित किया। घबराते हैं सब, ऐसा विद्वानों का काम। इसमें बात करने की कोई जरूरत नहीं है।

जिज्ञासा : **बाबा ये नृत्य की परिभाषा और नृत्य का प्रयोजन स्वास्थ के अर्थ में ये बेस एकदम ठीक है।**

बाबाजी : इसका मतलब परम्परा से परम्परा नित्य, पीढ़ी से पीढ़ी नित्य, जीवन नित्य, जीवन के लिए नृत्य आवश्यक। नृत्य में आता है सम्बोधन जीवन व्यवहार में बताता है, जीवन भोगता है मूल्यों को। मुख्य बात तो इतना ही है।

जिज्ञासा : **बाबा एक छोटी से कविता लिखी है उसमें नृत्य भी, अंग संचालन, भाव और मुद्रा। उसको मिलकार एक लिखा है, पढ़ूं इसको। जब–जब मैं खुश होती हूं.....**

बाबाजी : भाषा, भाव, भाषा के साथ भाव जोड़ना होगा।

जिज्ञासा : **ऐसे ही आगे पूरा लिखा है जब–जब मैं आज्ञा पालक करूं.... इसके साथ भारत नाट्यम का स्टेप्स कर लूंगी।**

बाबाजी : ठीक है बढ़िया।

जिज्ञासा : **जब–जब मैं संबोधन ..... भाषा, मुद्रा, भाव हो ऐसा**

बाबाजी : अंगहार हो ऐसा।

जिज्ञासा : **ऐसा ही आगे बाबा – विश्वास करूं तो, प्रणाम करूं तो, और सबको अपना जानू तो....**

बाबाजी : बहुत बढ़िया।

जिज्ञासा : **इसके बाद जैसे शिरो भेद, दृष्टि भेद, ग्रीवा भेद। सिर को इधर–उधर हिलाना स्वास्थ की दृष्टि से। वो जो घुमा रहे हैं उसको प्रयोजन के साथ जोड़कर मैंने लिखा है। जैसे – सामने देखना, पूरा सिर घुमाना.. ...**

बाबाजी : बहुत बढ़िया। ये जो गले की मुद्रा को करेंगे तो गलग्रंथि में कभी भी रोग नहीं होगा। मेरारूक्क में कोई रोग नहीं होगा। कपाल ग्रंथि में कोई रोग नहीं होगा। रोग नहीं होगा। स्वास्थ के लिये व्यायाम और नृत्य सिखा दिया। पहले नृत्य फिर व्यायाम फिर खेल। तीन भाग। व्यायाम में योगआसन कर सकते हैं।

उपयोगी को देखा जाये रोगिता को अनुभव करो, उपयोगिता के आधार पर पूरे संसार को दो और आगे।

जिज्ञासा : **बाबा इसमें सबसे पहले 'समत्र' है जिसमें सामने देखते हैं तो उसके साथ जोड़ा है कि मैं सामने जिनको भी देखता हूँ उनसे स्नेह पूर्वक नमन करता हूं। स्वयं में विश्वास के भाव को प्रकट करने के लिये ये . .... है। और सोकर उठना और सूरज जिस तरफ है उस तरफ से उस दिशा को पहचानना। सामने जो भी है उसे जानने का पयास।**

बाबाजी : बहुत बढ़िया जानना बाला ऐसा ही है। जो देखा है उसमें जो जानकारी होती है उसको तो स्वीकारना होता ही है।

जिज्ञासा : **इसके बाद उध्वाहितम – ऊपर की ओर देखते हैं। इसमें लिखा है श्रद्धा भाव से नीचे बैठकर ध्यानपूर्वक अपने गुरुजन की बात सुनना, छोटा बालक ऊपर मुंह करके अपनी मां को गोद में उठाने के लिये कहता है। ऊंचे वृक्ष को देखना, उसमें फल, फूल, पत्तियों को जानने का प्रयास करना। ऊंचे पर्वतों को देखना, आकाश को देखना, जानना का प्रयास करना कि चन्द्रमा, धरतियों को जानना का प्रयास करना। घर में ऊपर लगे जालों को देखना और सफाई करने के लिये।**

बाबाजी : सामने व्यक्ति को देखना, भविष्य में देवता बनने के लिये प्रेरित करना।

जिज्ञासा : **बढ़िया हो गया।**

बाबाजी : ठीक है पक्का और आगे।

जिज्ञासा : **उसके बाद अधोमुख – नीचे की ओर देखते हैं। अभिभावक जन को प्रणाम करना, कमीज के बटन लगाना, अच्छी बाते लिखना, अच्छी बात को पढ़ना।**

बाबाजी : मुख्य बात यही है। अपने अच्छी बात को पढ़ना। अपने शरीर को स्वच्छ रखना, अपने नाखून को ठीक रखना। सभी बातों को ठीक रखना।

जिज्ञासा : **धरती पर बीज लगाना, राह पर पड़े प्लास्टिक, कचरे पत्थर को इन सब चीजों को साफ करने के लिया।**

बाबाजी : नीचे देखना, औषधियों को, वनस्पतियों को पहचानने के लिये नीचे देखना।

जिज्ञासा : **शरीर की सफाई के लिये नीचे देखना।**

बाबाजी : सफाई को देखने के लिये नीचे देखना।

जिज्ञासा : फिर बाबा आलोकित – पूरा head movement उसमें सभी दिशाओं में दृष्टि में समाने वाले सभी वस्तुओं को जानने समझने के लिए।

बाबाजी : प्रेरणा मिलता है।

जिज्ञासा : उसके बाद जैसे नीचे से घुमा रहा है तो शरीर में छोटे भाई–बहनों के साथ

बाबाजी : शरीर को स्वस्थ रखने के लिये, गले को स्वस्थ रखने के लिये काम होता है और संसार को देखने के लिये होता है। चारों तरफ और कामना होता है शुभ के लिए। कितना व्यवहारिक हो गया। सब व्यवहार से जुड़ गया।

जिज्ञासा : व्यवहारिक हो गया बाबा।

बाबाजी : अभी नृत्य को ही अपनाया किन्तु व्यवहार से जड़ा नहीं। आगे...

जिज्ञासा : आगे घुतम है बाबा दांये से बांये सिर हिलाते हैं। इसमें बांये तक बाबा जहां तक दृष्टि जाती है केवल अपने ही संबंध दिखते हैं। स्वीकृति, अस्वीकृति कहते तक। यही न होता है।

फिर बाबा सिर को ऊपर नीचे करना।

बाबाजी : स्वीकृति का स्वरूप। ठीक।

जिज्ञासा : जी बाबा, इसमें बाबा वर्षा को भूमि पर गिरते देख आते देख उत्सवित होना। विशाल लम्बें पेड़ों को ऊपर से नीचे तक निहारना और उसका मिट्टी के साथ संबंध को जानने के लिये देखना। फिर बाबा ऊपर से नीचे देख रहे है। श्रेष्ठ व्यक्ति जैसे माता, पिता, गुरुजन का आचरण देखना, फिर स्वयं का आचरण देखना। और अनुकरण–अनुसरण के लिये प्रेरित होना। फिर सही सुनना, सही देखना और सही करने के लिये हामी भरना। फिर अपने निकट बुलाने के लिये। फिर किसी का बहुत देर से इन्तजार कर रहे हैं और फिर कोई आता है तो खुशी से निहारते रहते हैं। पूरा ऐसा ही लिखा है – आगे पढ़ूं क्या?

बाबाजी : बहुत बढ़िया। ये तो हो गया।

जिज्ञासा : इसी तरह आगे दृष्टि पर लिखा है।

बाबाजी : और आगे...

जिज्ञासा : बस बाबा कल से दूसरी कक्षा की तैयारी करेंगे। पहले पहली कक्षा का करेंगे। पहली कक्षा में क्या पढ़ाना है किताब तो बन गया उसमें क्या प्रयोजन निकलता है उसको बताना। दूसरी कक्षा का किताब बन गया

है जीने के साथ क्या प्रयोजन निकलता है बता देना। जीने की प्रयोजन क्या? जीना ही प्रयोजन। ऐसा जोड़ करके हमको बताना।

हरिहर